आदम अलैहिस्सलाम

से

मुहम्मद

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

तक

बच्चों और बड़ों को क़ुरआन मजीद से वाक़िफ़ कराने वाला और शौक़ दिलाने के लिए

नादिर किताब

आदम (अ0) से मुहम्मद (स0) तक

मंज़ूर कर्दा

मजलिसे इल्मी जामिआ दीनयात (उर्दू) देवबन्द, बराए इम्तिहान आलिमे दीनयात

मुरत्तिबा

मुहम्मद रफ़ीअ साहिब

इरशाद पब्लिकेशन
419, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली-6
फोन : 23258933

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

क़ुरआन और इसकी तालीमात को आम करने के लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऐसा आसान तरीक़ा जारी फ़रमाया था कि ग़ैर शुऊरी तौर पर बच्चों की इब्तिदाई अख़्लाक़ी दीनी तालीम व तरबीयत बग़ैर कुछ पढ़ाए लिखाए होती चली जाती थी, गोया मां की गोद बच्चा का प्राइमरी इब्तिदाई मदरसा था, सानी तालीम की क़ुदरती दर्सगाह हैं मुसलमानों की मसाजिद थीं, सिर्फ़ आला तालीम के लिए मदरसों की ज़रूरत थी वह भी हर आलिम के मकान पर इसकी जगह होती थी और जब मजमअ़ ज़्यादा हो तो यह काम मस्जिदों में होता था, इस ज़माने में उलूम व फ़नून के फैलाव ने यह सारा निज़ाम दिरहम बरहम करके नई शक्ल व सूरत इख़्तियार कर ली, वह ज़रूरत के मुताबिक़ होना भी चाहिए लेकिन बच्चों का प्राइमरी मदरसा जो मां की गोद था इसमें तो आज भी कुछ ज़्यादा फैलाव नहीं।

दीनी अख़्लाक़ी तालीम व ज़बान बहरहाल होनी चाहिए थी, मगर अफ़सोस कि अब उमूमन मां-बाप ख़ुद ही इन चीज़ों से ग़ाफ़िल व बे-बहरा होते हैं बच्चों को क्या सिखा दें इसलिए जो काम मां की गोद में बग़ैर किसी उस्ताद के हो सकता था वह भी अब स्कूलों मदरसों में कराना ज़रूरी हो गया इसके लिए बच्चों के ज़ेहन के मुताबिक़ बहुत से लोगों ने किताबें लिखीं, हाल में मेरे मरहूम दोस्त मुहम्मद रफ़ीअ़ साहिब ने इस मुक़द्दस के लिए एक किताब "आदम अलैहिस्सलाम से मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तक" के नाम से लिखी जिसमें तमाम अंबिया अलैहिमुस्सलाम के क़िस्से फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पूरी सीरत बच्चों की ज़बान में बड़े सलीक़ा और शगुफ़्ता अंदाज़ में लिख दी है मैंने इस किताब को जाबजा देखा बहुत ही मुफ़ीद पाया। मेरी दुआ है कि अल्लाह तआ़ला इस किताब क. नाफ़ेअ़ व मुफ़ीद और मक़बूद बनाएं और मुसन्निफ़ को अज्रे अज़ीम अ़ता फ़रमाएं।

हज़रत मौला मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ीअ़ रहमतुल्लाह अलैह

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

दीबाचा

क़ुरआन मजीद को समझ कर पढ़ा जाए या बग़ैर समझे एक-एक हर्फ़ पर उसके दस नेकीयां मिलती हैं, लेकिन इसमें कोई शक नहीं कि क़ुरआन पाक के नुज़ूल का मक़सद इसकी तिलावत करना इसको समझना और इस पर अमल करना है, हज़ारों और लाखों बच्चे जन व मर्द क़ुरआन पाक की तालीम हासिल करते हैं, लेकिन इसको समझते कितने हैं? इसका अंदाज़ा आप ख़ुद कर सकते हैं, यह सहीह है कि बग़ैर अरबी की तालीम और दीन का फ़हम हासिल किए क़ुरआन मजीद को सहीह तौर पर नहीं समझा जा सकता लेकिन क्या कोई तरीक़ा ऐसा हो सकता है कि तुलबा को क़ुरआन मजीद का मक़सद कुछ ऐसे आसान तरीक़ों से उनके ज़ेहन नशीन करा दिया जाए कि वह इस मुक़द्दस किताब से जिसको वह रोज़ाना पढ़ रहे हैं बिल्कुल बे-तअल्लुक़ न रहें और इनमें इसको समझने के शुऊर को बेदार कर दिया जाए इस मक़सद को हासिल करने के लिए काफ़ी अर्सा से एक तजवीज़ ज़ेहन में परवरिश पा रही थी वह यह है।

बच्चों को क़िस्से सुनने का शौक़ होता है, क़ुरआन के बुनियादी उसूल नबीयों के आने के मक़ासिद और उनके क़िस्से, हुज़ूर सरदारे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िन्दगी और दीगर ज़रूरी उमूर को आसान ज़बान और क़िस्सों की सूरत में मुरत्तब करके शाया कर दिया जाए।

उस्ताज़ साहिबान रोज़ाना एक उनवान बच्चों के सामने क़िस्से की सूरत में बयान फ़रमा दें और फिर बच्चों से भी क़िस्से की सूरत

में सुनें, अल्लाह की ज़ात से यह उम्मीद है कि मु-तवातिर यह तरीक़ा रखने के बाद यह चीज़ें बच्चों के दिल व दिमाग़ में ज़ेहन नशीन हो जाएगा।

मसलन उस्ताद ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का क़िस्सा बच्चों के सामने बयान किया, फिर जब क़ुरआन मजीद में हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का नाम पढ़ेगा तो उसके सामने वह तमाम क़िस्सा आ जाएगा जो उस्ताद ने बयान किया है।

एक तरफ़ यह जज़बाकार फ़रमा था तो दूसरी तरफ़ अपनी नाअहलीयत और मसरुफ़ियत, आख़िर जज़बा ग़ालिब आया और बावुजूद अपनी नाअहली के मक़ासिद बाला को क़लम के ज़रीए से मुरत्तब करना शुरु कर दिया, एक साल हो गया लेकिन तकमील न कर सका, अपने ख़्यालात और जज़बात का इज़हार करके मौलाना अब्दुल क़य्यूम साहिब नदवी से जुज़वी इमदाद ली। मेरे सामने साबिक़ा के से हालात थे, बदीं वजह क़दम न बढ़ सका, आख़िर इमसाल अल्लाह ने तौफ़ीक़े हज दी, मौक़ा को ग़नीमत समझते हुए अपने साथ यह औराक़ भी लेता आया, मक्का मुअज़्ज़मा में फ़ुरसत न मिल सकी, मदीना तय्यिबा में हुज़ूर सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साय-ए-आतफ़त में अल्हम्दुलिल्लाह इसको कर लिया, इस सिलसिला में हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह0 की किताब नशरुत्तीब फ़ी ज़िकरुन्नबीयुल हबीब से भी मदद ली गई। अब यह ख़ौफ़ दामन गीर था कि अपनी ना-अहली के बावुजूद किताब तो मुकम्मल कर ली, लेकिन अगर इसमें कुछ ग़लतियां रह गईं तो लेने के देने पड़ जाएंगे, अल्लाह तआला ने मदद फ़रमाई, मक्का मुअज़्ज़मा में हज़रत मौलाना ग़ुलाम हबीब साहिब नक़्शबंदी

से मुलाक़ात हो चुकी थी नज़रें उधर गईं और उनसे नज़रे सानी की दरख़्वास्त की जिन्होंने ब-कमाले मेहरबानी मंज़ूर फ़रमाई, इस तरह हुज़ूर सरवरे काइनात के ज़ेरे साया अल्लाह की मदद से यह किताब मुकम्मल हुई, सिर्फ़ हुज़ूर का ही फ़ैज़ और रहमत समझता हूं और इसका सवाब उन्हीं की रूहे पाक को पहुंचाता हूं।

गर क़बूल उफ़तद ज़हे इज़् व शरफ़

मुहम्मद रफ़ीक़

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

क़ुरआन मजीद

बच्चो! अल्हम्दुलिल्लाह कि तुमने क़ुरआन मजीद पढ़ना शुरू किया है, क़ुरआन मजीद क्या है? यह अल्लाह का कलाम है, या यूं समझ लो कि यह अल्लाह की बातें हैं जो उसने अपने प्यारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर हज़रत जिबरील अलैहिस्सलाम के ज़रीए से भेजीं ताकि हम को मालूम हो जाए कि अल्लाह तआला कौन है?

दुनिया में कौन-कौन सी बातें करने की हैं जिनसे अल्लाह तआला ख़ुश होता है और कौन सी बातें छोड़ने की हैं जिनसे अल्लाह तआला नाराज़ होता है मरने के बाद हम को क़ियामत के रोज़ दोबारा ज़िन्दा किया जाएगा ताकि जिसने अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बताए हुए अच्छे काम किए हों उसके बदले उसको जन्नत मिले और वह वहां हमेशा-हमेशा रहे और जो उसका जी चाहे वह उसको मिले, और जिसने ऐसे काम किए जिनको अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने करने से मना किया है उसे उसकी सज़ा दोज़ख़ में भुगतना पड़ेगी, जिसने अल्लाह तआला के साथ शिर्क किया है उसे उसको मुआफ़ नहीं किया जाएगा, इसके एलावा वह अल्लाह तआला रहम करने वाला है जिसको चाहे बख़्श दे।

उम्मतें

दुनिया में जो लोग पहले आए थे उन्होंने अल्लाह तआला का और उसके रसूलों का कहना नहीं माना उनका अंजाम दुनिया में भी

ख़राब हुआ और मरने के बाद भी दोज़ख़ में जाएंगे, और वह लोग जिन्होंने अच्छे काम किए अल्लाह तआला और उसके रसूल का कहना माना वह इस दुनिया में भी कामियाब हुए और मरने के बाद भी उनको जन्नत मिलेगी।

अल्लाह तआला

बच्चो! क़ुरआन मजीद का मक़सद मालूम होने के बाद तुम्हारे दिल में यह ख़्याल आता होगा कि अल्लाह तआला कौन है? बच्चो! सुनो; उसकी ज़ात का समझना तो अक़्ल का काम नहीं है, अल्लाह तआला ने अपने मुतअ़ल्लिक़ क़ुरआन में फ़रमाया है:-

अल्लाह तआला एक है और वही इबादत के क़ाबिल है; उसकी ज़ात में और उसके कामों में कोई शरीक नहीं, न उसकी कोई औलाद है न वह किसी की औलाद है, वह आसमानों और ज़मीनों का नूर है वह हमेशा से है और हमेशा रहेगा, उसको न नींद आती है न ऊंघ, आसमानों और ज़मीनों में जो कुछ है सब उसी ने पैदा किया है बग़ैर उसकी मर्ज़ी के कोई उसके सामने किसी की सिफ़ारिश भी नहीं कर सकता है, जो कुछ होने वाला है और जो कुछ हो चुका है सब उसको मालूम है आसमानों और ज़मीन में कोई चीज़ ऐसी नहीं जो उसके इल्म में न हो, वह इसका इंतिज़ाम करने से थकता नहीं, आसमानों और ज़मीन में जो चीज़ है वह उसकी तारीफ़ और पाकी बयान करती है।

वही पैदा करता है वही मौत देता है, वही मौत के बाद क़ियामत के दिन फिर ज़िन्दा करेगा, अल्लाह सब कुछ कर सकता है, उसकी मर्ज़ी के बग़ैर कोई कुछ नहीं कर सकता, जहां कहीं हम होते हैं वह हमारे साथ होता है वह हमारे दिलों की बात भी जानता

है वही सबको रिज़्क़ देता है जिसको चाहे थोड़ा जिसे चाहे बे-हिसाब।

उसके अख़्तियार में है जिसे चाहे सलतनत दे जिसकी चाहे सलतनत छीन ले, जिसे चाहे इज़्ज़त दे, जिसे चाहे ज़िल्लत, दीन व दुनिया की सब भलाईयां उसी के हाथ में हैं, वही औलाद देता है, जिसे चाहे बेटे दे और जिसे चाहे बेटियां, जिसे चाहे दोनों और जिसे चाहे कुछ न दे।

वह किसी को भलाई देना चाहे तो कोई उसको बदल नहीं सकता और जो तक्लीफ़ का मुस्तहिक़ होता है उसे बदलने वाला भी कोई नहीं।

उसी ने आसमान, सूरज, चांद, तारे, ज़मीन और इनके दरमियान जो कुछ है सबको हमारी ख़िदमत पर लगा दिया है। उसी ने हमारी अच्छी-अच्छी सूरतें बना दीं, उसने हम को इसलिए पैदा किया कि उसकी इबादत और फ़रमांबरदारी करें, उसने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपना आख़िरी नबी बना कर भेजा और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर अपना आख़िरी कलाम क़ुरआन मजीद नाज़िल फ़रमाया कि मैं इसकी हिफ़ाज़त करुंगा।

हमको बताया हैं कि हम ख़ुद भी क़ुरआन मजीद पढ़ते रहें और दूसरे लोगों को भी समझाते रहें।

फ़रिश्ते

यह अल्लाह तआला की बहुत बड़ी मख़लूक़ है और बहुत ताक़तवर भी है उनकी शक्ल व सूरत कैसी है यह अल्लाह ही जानता है, फ़रिश्ते इतने ज़ियादा हैं कि हम उनकी गिनती भी नहीं

कर सकते। यह फ़रिश्ते कुछ खाते पीते भी नहीं, क्योंकि अल्लाह तआला ने उनको ऐसा ही बनाया है, यह सिर्फ़ अल्लाह तआला की इबादत ही करते रहते हैं, लाखों फ़रिश्ते इस तरह इबादत करते रहते हैं जिस तरह नमाज़ में खड़े रहते हैं और क़ियामत तक इसी तरह खड़े-खड़े अल्लाह तआला की तारीफ़ बयान करते रहेंगे इसी तरह रुकू और सज्दे में लाखों तारीफ़ करते रहते हैं, अल्लाह तआला फ़रिश्तों के ज़रीए दुनिया के मुख़्तलिफ़ काम लेते रहते हैं, उनके सबसे बड़े और मशहूर फ़रिश्ते हज़रत जिबरील अलैहिस्सलाम हैं जो हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास वह्य यानी अल्लाह का पैग़ाम ले कर आया करते थे। जब अल्लाह तआला का बन्दा अकेला या जमा हो कर अल्लाह की इबादत करते हैं तो अल्लाह के फ़रिश्ते भी उनके गिर्द जमा हो जाया करते हैं और उनकी मग़फ़िरत के लिए अल्लाह तआला से दुआ करते हैं।

शैतान

अल्लाह तआला की बनाई हुई मख़लूक़ में जिन्न भी हैं, जो हम को दिखाई नहीं देते, मगर जिन्न हमको देख सकते हैं, यह बहुत ताक़तवर होते हैं और जहां चाहें थोड़ी सी देर में जा सकते हैं, अल्लाह तआला ने आदमियों को मिट्टी से जिन्नों को आग से पैदा किया है, यह जंगलों और पहाड़ों में रहते हैं।

जिन्नों में सबसे बड़ा जिन्न शैतान है; उसका नाम इब्लीस है यह पहले आसमान में रहता था, और अल्लाह तआला की बहुत इबादत करता था अल्लाह तआला ने जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम यानी इंसानों के सबसे बड़े बाप को बनाया तो फ़रिश्तों और इब्लीस को कहा कि इनको सज्दा करो सब फ़रिश्तों ने अल्लाह का हुक्म

माना और इंसान को सज्दा किया, लेकिन शैतान ने सज्दा न किया, अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि जब मैंने तुझको हुक्म दिया तो किस वजह से तूने सज्दा न किया, शैतान ने कहा मैं इससे अच्छा हूं मुझ को आपने आग से बनाया है और इसे मिट्टी से बनाया है, अल्लाह ने फ़रमाया तू बहिश्त से उतर जा तू इस काबिल नहीं कि यहां ग़ुरूर करे। तू ज़लील है, शैतान ने कहा कि मुझे क़ियामत तक के लिए मुहलत दीजिए, अल्लाह ने फ़रमाया कि जा मुहलत दी जाती है, शैतान ने फिर कहा, मुझे तो आपने मलऊन किया है, मैं भी इनको सीधे रास्ते से बहकाऊंगा इनके आगे से और पीछे से, इनके दाएं से और बाएं से आऊंगा, और इनमें से अक्सर आपका शुक्र अदा न करेंगे, अल्लाह तआला ने फ़रमाया निकल जा यहां से ज़लील मर्दूद, जो लोग इनमें से तेरा कहना मानेंगे इन सब को और तुझको जहन्नम में भर दूंगा,, बच्चों उस वक़्त से शैतान हम सब का दुश्मन है और चाहता है कि हम अल्लाह की इबादत न करें, दुनिया में रह कर अच्छे काम न करें, नमाज़ें न पढ़ें, मां-बाप का कहना न मानें, झूठ बोलें, चोरी करें, कमज़ोरों को सताएं और परेशान करें, किसी की मदद न करें ताकि अल्लाह तआला से जो बात उसने कही है वह उसको पूरा कर दिखाए, अगर हम शैतान के कहने में आ गए तो अल्लाह तआला ने भी शैतान से जो वादा किया है वह उसको पूरा करेंगे यानी शैतान को और जो उसका कहना मानेंगे सबको जहन्नम में भर देंगे, अल्लाह हम सब को जहन्नम से बचाए, आमीन।

क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला ने कहा है कि अल्लाह मुसलमानों का दोस्त और मददगार है उनको अंधेरों से निकाल कर रौशनी की तरफ़ लाता है और जो अल्लाह का कहना नहीं मानते और शैतान के दोस्त हैं उनको वह रौशनी से अंधेरों में ले जाता है, ऐसे

लोग दोज़ख़ में हमेशा रहेंगे। बच्चों, तुम अल्लाह तआला के दोस्त बनोगे या शैतान के?

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम

बच्चो! हज़रत आदम अलैहिस्सलाम सबसे पहले इंसान हैं जिनको अल्लाह तआला ने दुनियां में भेजा, और सबसे पहले नबी आप हैं, आप ही की औलाद सारी दुनिया में फैली, आपका ज़िक्र क़ुरआन पाक में उन्नीस बार आया है जब अल्लाह तआला ने दुनिया को आबाद करने का इरादा किया तो उसने फ़रिश्तों से कहा मैं दुनिया में अपना एक नाइब, ख़लीफ़ा बनाना चाहता हूं, फ़रिश्तों ने कहा, ऐ अल्लाह तू दुनिया में ऐसे शख़्स को नाइब बनाना चाहता है जो ख़राबियां करके और ख़ून करता फिरे, हम तेरी तारीफ़ करने के साथ तेरी तस्बीह और पाकी बयान करते रहते हैं। अल्लाह तआला ने फ़रमाया मैं वह बातें जानता हूं जो तुम नहीं जानते, अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को सब चीज़ों के नाम सिखा दिए, फिर उनको फ़रिश्तों के सामने किया, और फ़रमाया: अगर तुम सच्चे हो तो मुझे इनके नाम बताओ उन्होंने कहा कि तू पाक है जितना इल्म तूने हम को बख़्शा है इसके सिवा हम को कुछ नहीं मालूम, फिर अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि तुम आदम अलैहिस्सलाम को सज्दा करो, तो वह सब सज्दे में गिर पड़े, मगर शैतान ने सज्दा नहीं किया इसका ज़िक्र पहले भी आया है, अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से कहा कि तुम और तुम्हारी बीवी जन्नत में रहो, और जहां से चाहो खाओ पियो, मगर एक ख़ास दरख़्त के मुतअल्लिक हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को मना कर दिया कि उसके क़रीब भी न जाना वर्ना

तुम भी ज़ालिमों में से हो जाओगे, इस तरह अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का इमतिहान लिया कि देखें यह हमारा कहना मानते हैं या भूल जाते हैं, और शैतान के बहकाए में आ जाते हैं।

शैतान जो पहले ही हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से नाराज़ था कि उनकी वजह से वह अल्लाह तआला के दरबार से निकला और खुदा तआला की लानत उस पर हुई और उसने क़सम खाई थी कि मैं हज़रत आदम और उसकी औलाद को क़ियामत तक बहकाता रहूंगा, कि अल्लाह तआला का कहना न मानें और खूब बुराईयां फैलाए, वह हज़रत आदम और उनकी बीवी हज़रत हव्वा अलैहिमुस्सलाम को बराबर बहकाता रहा कि उस दरख़्त का फल तुम ज़रूर खाओ उसके खाने से तुम फ़रिश्ता बन जाओगे, जन्नत में से कभी न निकलोगे, आख़िर एक दिन हज़रत आदम अलैहिस्सलाम और उनकी बीवी हज़रत हव्वा भूल से शैतान के बहकाए में आ गए, और दरख़्त का फल खा लिया, फल खाते ही दोनों नंगे हो गए, और जन्नत का लिबास उनके बदन से ग़ाइब हो गया, और वह जन्नत के पत्तों से अपने बदन को छुपाने लगे।

अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से कहा कि हमने कह दिया था कि इस दरख़्त के पास भी न जाना, और शैतान के कहने में न आना, वह तुम्हारा दुश्मन है तुम उसके कहने में आ गए। अब तुम और हव्वा जन्नत से चले जाओ, और दुनिया में जाकर रहो।

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को जन्नत से निकलने और शैतान के बहकाए में आने का बहुत रंज हुआ और बहुत अर्सा तक अल्लाह तआला से मुआफ़ी मांगते रहे और रोते रहे कि अल्लाह तआला मुझे मुआफ़ कर दे, आख़िर अल्लाह तआला को रहम आया

और हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को यह दुआ सिखाई कि ऐ हमारे रब हमने अपने ऊपर ज़ुल्म किया, और तू हम पर रहम नहीं करेगा तो हम बड़ा नुक़्सान उठाने वालों में से हो जाएंगे तो हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने यह दुआ बहुत गिड़गिड़ाकर मांगी, और अल्लाह तआला तो बहुत रहम करने वाले हैं, जब कोई बन्दा गुनाह कर लेता है और सच्चे दिल से तौबा कर लेता है कि ऐ अल्लाह यह गुनाह तो मुझ से ग़लती से हो गया आइंदा ऐसा न करुंगा, तो वह मुआफ़ कर देते हैं, चूनांचे हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को भी अल्लाह तआला ने मुआफ़ कर दिया और फिर कहा कि तुम और तुम्हारी औलाद दुनिया में रहो और यह बात याद रखो कि जब मेरी तरफ़ से कोई नबी अलैहिस्सलाम मेरी हिदायत ले कर तुम्हारे पास आए तो तुम उसका कहना मानना जो मेरे भेजे हुए नबीयों का कहना मानेगा, उसको फिर न कोई ख़ौफ़ होगा और न ग़म होगा और जो लोग मेरे नबीयों की बात को नहीं मानेंगे और हमारी आयतों को झुठलाएंगे वह दोज़ख़ में जाएंगे, और हमेशा उसी में रहेंगे।

इसके बाद हज़रत आदम अलैहिस्सलाम और हज़रत हव्वा अलैहिस्सलाम दुनिया में रहने सहने लगे, ख़ूब जी लगा कर अल्लाह की इबादत करते उनकी बहुत औलाद हुई और दुनिाय में सब जगह आबाद होती रही। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम अपनी औलाद को यही बात बताते रहे कि तुम कभी शैतान के बहकाए में न आना, वह हमारा दुश्मन है और हमको बुरी बातें करने के लिए बहकाता रहता है, हमेशा अल्लाह की इबादत करना सच बोलना, किसी पर ज़ुल्म न करना, एक दूसरे के नेक कामों में मदद करते रहना। आख़िर कार हज़रत आदम अलैहिस्सलाम नौ सौ साल ज़िन्दा रह कर वफ़ात पा गए।

क़ाबील व हाबील

बच्चो! क़ुरआन मजीद में हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के दो बेटों क़ाबील व हाबील का क़िस्सा है और हम तुम को सुनाते हैं कि हज़रत आदम और हव्वा अलैहिमुस्सलाम से बहुत औलाद हुई, इन्हीं में से दो बच्चे क़ाबील व हाबील थे, क़ाबील बड़ा लड़का था, लेकिन यह मां-बाप का कहना नहीं मानता था, हाबील छोटा भाई था जो मां-बाप का कहना मानता था, अक़लीमा एक लड़की थी जिससे क़ाबील शादी करना चाहता था, मगर हज़रत आदम व हव्वा अलैहिस्सलाम उसकी शादी अपने छोटे बेटे हाबील से करना चाहते थे, जो नेक और शरीफ़ था, इसलिए क़ाबील अपने मां-बाप और भाई का दुश्मन हो गया, अल्लाह तआला ने हुक्म दिया कि तुम दोनों क़ुर्बानी करके पहाड़ पर रख आओ, जिसकी क़ुर्बानी क़बूल होगी उससे अक़लीमा की शादी की जाएगी, अल्लाह तआला को अपने नेक बन्दे पसंद होते हैं और वह उनकी मदद करता है, आसमान से एक आग आई और हाबील की क़ुर्बानी को ले गई, यानी हाबील की क़ुर्बानी क़बूल हो गई, अब उसके भाई क़ाबील को बहुत गुस्सा आया, उसने हाबील से कहा कि मैं तुझ को क़त्ल कर दूंगा।

हाबील ने कहा: अल्लाह नेक बन्दों की क़ुर्बानी क़बूल करता है अगर तुम मुझ से लड़ोगे तो मैं तुम पर हाथ नहीं उठाऊंगा, आख़िर एक दिन क़ाबील ने हाबील को क़त्ल कर दिया।

दुनिया में यह पहला क़त्ल था जो क़ाबील ने अपने भाई हाबील का किया, क़त्ल करने के बाद क़ाबील को फ़िक्र हुई कि हाबील की लाश का क्या करे किस तरह छुपाए, उसने देखा कि एक कव्वा चोंच

से ज़मीन खोद कर एक दूसरे मरे हुए कव्वे को दफ़न कर रहा है, तब उसने भी अपने भाई हाबील को ज़मीन खोद कर दफ़न कर दिया और ख़ुद जाकर आग की पूजा करने लगा, हज़रत आदम व हव्वा अलैहिमुस्सलाम को बहुत रंज हुआ।

बच्चो! क़ाबील व हाबील दोनों भाईयों के झगड़े से हम को सबक़ लेना चाहिए, हमारा हक़ीक़ी भाई या मुसलमान भाई अगर हम पर ज़ियादती करें तो बेहतर यह है कि हम सब्र करें. और अपने भाई पर हाथ न उठाएं क़ाबील ने अपने भाई को क़त्ल किया, क़ियामत तक लोग उस पर लानत करते रहेंगे और आख़िरत में अल्लाह के अज़ाब का मुस्तहक़ हुआ, और हाबील को क़ियामत तक लोग अच्छा कहते रहेंगे। और वह जन्नत का वारिस हुआ।

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम

बच्चो! हज़रत नूह का तज़किरा क़ुरआन मजीद में ब्यालीस जगह आए है, हज़रत आदम की औलाद दुनिया में ख़ूब बढ़ी आहिस्ता-आहिस्ता यह ख़ुदा को भूलते गए जिसने उसे पैदा किया था, और जो उनका पालने वाला है, और शैतान के बहकाए में आने लगे जिसने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को जन्नत से निकलवा दिया था, शैतान के बहकाए में आकर यह लोग बुतों और आग, सूरज वग़ैरह को पूजने लगे, और एक ख़ुदा के बजाए मिट्टी और पत्थर के बहुत से ख़ुदा बना लिए, अपने हाथ से अपना ख़ुदा बनाते और फिर उनसे मांगते, हालांकि यह मिट्टी और पत्थर के ख़ुदा अपने लिए भी कुछ न कर सकते थे, उनके लिए क्या करते, अल्लाह तआला ने जो अपने बन्दों से बड़ी मुहब्बत रखता है उसको यह कभी गवारा नहीं कि उसके बन्दे शैतान के बहकाए में आकर

अल्लाह के एलावा किसी और की इबादत करने लगें और उसकी सज़ा में मरने के बाद दोज़ख़ में जलें, अल्लाह पाक ने हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को अपना नबी बना कर भेजा, उस ज़माना में लोगों की उमरें बहुत बड़ी-बड़ी होती थीं, हज़रत नूह अलैहिस्सलाम साढ़े नौ सौ साल तक अपनी क़ौम में वअज़ करते रहे कि ऐ लोगो! सिर्फ़ एक अल्लाह की इबादत करो, और मेरा कहा मानो, वह तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा, लेकिन लोगों ने हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की बातों को न माना और अपने कानों में उंगलियां दे लीं, और कपड़े ओढ़ लिए ताकि हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की आवाज़ कानों तक न पहुंचे, हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने हिम्मत न हारी वह बराबर समझाते रहे।

और कहते रहे ऐ लोगो! अल्लाह से मुआफ़ी मांगो, वह बड़ा मुआफ़ करने वाला है, वह तुम पर आसमान से बारिश बरसाएगा ताकि तुम ख़ूब अनाज पैदा कर सको, और उसके ज़रीए से बड़े-बड़े बाग़ पैदा कर देगा, इनमें नहरें पैदा कर देगा, तुम्हें माल व दौलत देगा और बेटे देगा, तुम्हें क्या हो गया है कि तुम ख़ुदा को नहीं मानते, हालांकि उसने आसमान बनाए, चांद और सूरज बनाए, उसने तुम को मिट्टी से पैदा किया और फिर उसी मिट्टी में एक दिन तुम मिल जाओगे, और फिर क़ियामत के दिन उसी मिट्टी से तुमको दोबारा ज़िन्दा करेगा लेकिन लोगों ने अपने बुतों को नहीं छोड़ा, और हज़रत नूह अलैहिस्सलाम से कहने लगे कि हम अपने बुतों को हरगिज़ न छोड़ेंगे, और हम तो तुम को अपने जैसा आद देखते हैं और तुम्हारा कहना भी सिर्फ़ चंद ग़रीब लोगों ने माना और हम तो तुम को झूठा समझते हैं।

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने कहा कि ऐ मेरी क़ौम मैं तुमको जो नसीहत करता हूं उसके बदले में तुम से कोई माल व दौलत नहीं चाहता और जो गरीब आदमी मुसलमान हुए हैं, और अल्लाह पर ईमान लाए हैं उनको मैं अपने पास से तुम्हारे कहने से निकालूंगा नहीं, अगर मैं उनको अपने पास से निकाल दूं तो ख़ुदा के अज़ाब से मुझे कौन बचाएगा अगर मैं ऐसा करूंगा तो बहुत नाइंसाफ़ हो जाऊंगा, उनकी क़ौम के लोगों ने कहा ऐ नूह तुम ने हम से झगड़ा बहुत कर लिया, अगर तुम सच्चे हो तो जिस अज़ाब से तुम हम को डराते हो वह ले आओ, हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने कहा कि जब अल्लाह पाक चाहेंगे अज़ाब ले आएंगे।

अल्लाह तआला ने हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को वह्य के ज़रिए से हुक्म भेजा कि तुम्हारी क़ौम में जो लोग ईमान ला चुके हैं, उनके अलावा और कोई ईमान न लाएगा, तुम ग़म न करो, एक किश्ती बनाओ, हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने ख़ुदा के हुक्म के मुताबिक़ किश्ती बनानी शुरू की तो जब उनकी क़ौम के सरदार उनके पास से गुज़रते तो उनको किश्ती बनाते हुए देखते तो उनका मज़ाक़ उड़ाते, हज़रत नूह अलैहिस्सलाम उनके मज़ाक़ के जवाब में कहते कि आज मज़ाक़ कर लो कल जब तुम्हारे ऊपर अज़ाब आएगा तो उस वक़्त हम तुम्हारा मज़ाक़ उड़ाएंगे, आख़िर अल्लाह तआला का अज़ाब उसके वादा के मुताबिक़ आया, ज़मीन से पानी निकलना शुरू हुआ, और आसमान से बारिश आनी शुरू हुई, अल्लाह तआला ने हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को हुक्म दिया कि सब जानवरों का एक-एक जोड़ा किश्ती में सवार कर लो, और जो लोग तुम्हारे ऊपर ईमान लाए हैं यानी मुसलमान हो गए हैं, उनको सवार कर लो,

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने उस किश्ती में सवार होने वालों से कहा कि अल्लाह तआ़ला का नाम ले कर इस किश्ती में सवार हो जाओ कि इसका चलना और ठहरना उसी के हाथ में है, अल्लाह तआ़ला बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है।

किश्ती उन सब को ले कर लहरों में चलने लगी तो उस वक़्त हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने अपने बेटे से कहा, ऐ बेटा हमारे साथ सवार हो जाओ, और काफ़िरों के साथ मत हो, उसने कहा मैं किसी पहाड़ पर चढ़ जाऊंगा, और वह पानी से बचा लेगा।

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने कहा कि आज ख़ुदा के अज़ाब से सिवाए ख़ुदा के कोई बचाने वाला नहीं, इतने में दोनों के दरमियान एक पानी की लहर उठी और वह डूब गया, फिर ख़ुदा तआ़ला ने ज़मीन को हुक्म दिया कि अपना पानी निगल जा, और आसमान को भी हुक्म दिया कि पानी बरसाना बन्द कर दे यहां तक कि पानी ख़ुश्क हो गया और तमाम काफ़िर दुनिया में ख़त्म कर दिए गए, हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की किश्ती कोहे जूदी पर ठहरी, हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने अपने परवरदिगार से अर्ज़ किया कि ऐ मेरे रब मेरा बेटा भी मेरे घर वालों में से है, और आपका वादा सच्चा है, यानी हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का मतलब था कि ऐ अल्लाह तआ़ला आपने वादा फ़रमाया था कि तेरे घर वालों को इस तूफ़ान से बचा लूंगा, फिर मेरा बेटा क्यों डूबा।

तो ख़ुदावन्द तआ़ला ने फ़रमाया कि ऐ नूह तेरा बेटा तेरे घर वालों में से नहीं था, क्योंकि उसके अ़मल अच्छे नहीं थे, मैं तुझ को नसीहत करता हूं कि ऐसी बात न कर जो तेरे इल्म में नहीं (इसलिए कि कनआ़न अल्लाह के इल्म अज़ली में काफ़िर था, और यह बात

नूह अलैहिस्सलाम के इल्म में न थी) हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने अल्लाह पाक से तौबा की और अपने कहने की मुआफ़ी चाही, अल्लाह पाक ने उनको मुआफ़ कर दिया और हुक्म दिया कि ऐ नूह हमारी तरफ़ से सलामती और बरकतों के साथ उतर।

इसके बाद हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की उम्मत से दुनिया बसी और आहिस्ता-आहिस्ता उनके बाल बच्चे आबाद होते गए, यह सब लोग ख़ुदा तआला की इताअ़त करते रहे, ज़माना गुज़रता गया और आहिस्ता-आहिस्ता शैतान ने फिर बहकाना शुरू किया तो यह लोग खुदावन्द तआला को भूलने लगे।

बच्चो! हज़रत नूह अलैहिस्सलाम जो अल्लाह तआला के इतने बड़े पैग़म्बर थे, अपने बेटे को उसके बुरे कामों की वजह से अल्लाह तआला के अज़ाब से न बचा सके, इस तरह अगर हमारे मां-बाप अल्लाह के कितने ही वली क्यों न हों अगर हमारे अमल अच्छे न हों तो वह हम को अल्लाह तआला के अज़ाब से न बचा सकेंगे हम को अपने बुज़ुर्गों के नेक अमल का सहारा नहीं लेना चाहिए, बल्कि अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बताए हुए कामों पर अ़मल करके नेक बनना चाहिए, इसी वजह से अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में कहा है कि अगर तुम एक ज़र्रा बराबर भी नेकी करोगे तो उसका बदला हम तुम को देंगे, और अगर एक ज़र्रा बराबर भी बुरा अ़मल करोगे तो वह भी तुम्हारे सामने आ जाएगा।

हज़रत हूद अलैहिस्सलाम

बच्चो! हज़रत हूद अलैहिस्सलाम का ज़िक्र क़ुरआन शरीफ़ में बार-बार आता है, सूर-ए-अअ़राफ़, सूर-ए-हूद और सूर-ए-हश्र

वगैरह में इसकी तफ़सील मौजूद है।

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की औलाद मुद्दतों तक दुनिया में बसी और आहिस्ता-आहिस्ता फिर ख़ुदा तआला को भूल गई, शैतान ने फिर उनको बहका कर बुतों की पूजा पर लगा दिया, ख़ुदावन्द तआला जो अपने बन्दों पर बड़ा रहम करने वाला है, उसने फिर हज़रत हूद अलैहिस्सलाम को अपना पैग़म्बर बना कर उन लोगों के पास भेजा, और उन्होंने अपनी क़ौम से जो आद कहलाती थी कहा कि तुम ख़ुदा ही की इबादत करो, इसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं है, मैं तुम से इस वअ्ज़ व नसीहत के बदले कोई मज़दूरी या उजरत नहीं मांगता, मुझे इसका बदला तो वह देगा जिसने मुझे पैदा किया है, और ऐ मेरी क़ौम तुम अपने रब से बख़्शिश मांगो और इससे तौबा करो, वह तुम्हारे लिए मेंह बरसाएगा जिससे तुम्हारे खेत और बाग़ान अच्छे होंगे और तुम्हारी ताक़त बहुत बढ़ा देगा।

वह बोले कि ऐ हूद हम तुम्हारे कहने से अपने बुतों को नहीं छोड़ सकते, तुम कोई निशानी दिखाओ, हम तो यह समझते हैं कि हमारे बुतों में से किसी ने तुम पर आसेब कर दिया है, और तुम दीवाने हो गए हो।

हज़रत हूद अलैहिस्सलाम ने कहा कि तुम सब मिल कर मेरे लिए जो तदबीर करनी चाहो कर लो, और मुझे मुहलत भी न दो, मैं ख़ुदा पर भरोसा रखता हूं, जो मेरा और तुम्हारा परवरदिगार है, मेरे हाथ अल्लाह तआला ने तुम्हें जो पैग़ाम भेजा था वह मैंने तुम्हें पहुंचा दिया, अगर तुम मेरा कहना न मानोगे तो अल्लाह पाक तुम्हारी जगह और लोगों को बसा देगा और तुम ख़ुदावन्द तआला का कुछ नुक़सान नहीं कर सकते, इस पर उनकी क़ौम ने कहा कि

रोज़ तू हमें ख़ुदा के अज़ाब से डराता है, जा अपने ख़ुदा से कह कि हम पर अज़ाब नाज़िल कर दे और इसमें हरगिज़ देर न करे हज़रत हूद अलैहिस्सलाम पर जो ईमान लाए थे वह ग़रीब और कमज़ोर थे, और जो काफ़िर थे वह मालदार और सरदार थे। उन सब ने हज़रत हूद अलैहिस्सलाम का मज़ाक़ उड़ाया, आसमान पर एक बादल नमूदार हुआ जिसे देखकर यह समझे कि बारिश होने वाली है, हज़रत हूद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने बता दिया था कि यह अज़ाब है चूनांचे वह ईमानदार लोगों को ले कर बस्ती से बाहर चले गए, उस बादल के बाद आंधी आई जो आठ दिन और सात रात तक मु-त्तवातिर चलती रही यहां तक कि सब काफ़िर मर गए और नेस्त व नाबूद हो गए, सिर्फ़ अल्लाह तआला पर ईमान लाने वाले ही बाक़ी बच गए, और इस तरह एक बार फिर अल्लाह तआला की ज़मीन काफ़िरों और मुश्रिकों से ख़ाली हो गई।

हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम

हज़रत हूद अलैहिस्सलाम की उम्मत जो आद कहलाती थी वह अल्लाह तआला के अज़ाब से हलाक हो गई, और इसमें के बाक़ी बचे हुए लोग फिर आबाद हुए, उनकी औलाद होती गई और बढ़ती गई, उन्होंने अपना नाम समूद रखा, यह लोग भी आहिस्ता-आहिस्ता बुत प्रस्ती करने लगे और बुरे कामों में पड़ गए तो अल्लाह तआला ने उनके पास हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम को नबी बना कर भेजा, उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, और देखो अल्लाह तआला ने क़ौम हूद के बाद तुमको सरदार बनाया और ज़मीन पर आबाद किया, तुम ज़मीन में बड़े-बड़े महल बनाते हो, और पहाड़ों को काट-काट कर

उस पर भी घर तराशते हो, तुम अल्लाह की नेमतों का शुक्र अदा करो और ज़मीन में फ़साद मत फैलाओ।

बच्चो! इनकी क़ौम के अमीर और सरदार लोग जो ग़ुरूर करते थे उन्होंने उन ग़रीबों से पूछा जो हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम पर ईमान ले आए थे कि भला तुमको यक़ीन है कि सालेह को अल्लाह ने नबी बना कर भेजा है उन ग़रीब ईमान वालों ने कहा कि हां हम को यक़ीन है कि हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने नबी बना कर भेजा है, इस पर मग़रूर अमीर कहने लगे कि अच्छा तुम ईमान लाओ, हम तो ईमान नहीं लाते, उन अमीर लोगों को यह तअज्जुब हुआ कि अगर अल्लाह पाक किसी को नबी बना कर भेजते तो हम अमीरों में से किसी को नबी बनाते।

हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम बराबर अल्लाह तआला का पैग़ाम उनको पहुंचाते रहे मगर कोई उनकी न सुनता बल्कि उलटा मज़ाक़ उड़ाते, आख़िर बच्चो! इन लोगों ने फ़ैसला कर लिया कि हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम से कहा जाए कि अगर सच्चे नबी हैं तो उस पहाड़ में से ऊंटनी पैदा कर दें, हम आप ईमान ले आएंगे, और जानेंगे कि आप सच्चे नबी हैं, हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम ने अल्लाह से दुआ की, अल्लाह तआला तो सब कुछ कर सकते हैं, अल्लाह तआला ने हज़रत सालेह की दुआ क़बूल की और एक पहाड़ में ऊंटनी को पैदा कर दिया, लेकिन बच्चो! उनकी क़ौम यह सच्चाई देखने के बाद फिर भी ईमान न लाई, यह अल्लाह की ऊंटनी ऐसी थी कि जिस चश्मे पर जा कर पानी पीती थी सब पानी ख़त्म कर देती थी, अब तो उनकी क़ौम के लोग और भी परेशान हुए, हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम से कहा कि देखो इस ऊंटनी के लिए बारी मुक़र्रर कर लो, एक रोज़ तुम्हारे जानवर चश्मे

से पानी पिएं और एक रोज़ यह ऊंटनी पिए, लेकिन देखो इसको बुरी नीयत से हाथ न लगाना, यानी इसको तक्लीफ़ न पहुंचाना वर्ना तुम्हारे हक़ में अच्छा न होगा।

बच्चो! कुछ रोज़ तक तो वह ऊंटनी को हैरत से देखते रहे आख़िर उनकी क़ौम के चंद लोगों ने मशवरा करके ऊंटनी को मार डाला।

हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम को इसकी ख़बर हुई, तो आपको बहुत रंज हुआ और उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि मैंने तुमको मना किया था कि इस ऊंटनी को तक्लीफ़ मत देना वर्ना तुम पर जल्द अल्लाह का अज़ाब आएगा मगर तुम ने न माना, अब तुम लोग अपने घरों में तीन रोज़ और मज़े कर लो इसके बाद अल्लाह का अज़ाब आएगा जो तुम सब को ख़त्म कर देगा।

चूनांचे बच्चो ऐसा ही हुआ। अल्लाह तआला ने हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम और उन लोगों को बचा लिया जो ईमान ले आए थे, लेकिन जो लोग ईमान नहीं लाए थे एक बड़ी हैबतनाक और ख़ौफ़नाक आवाज़ पैदा हुई जिससे वह अपने घरों में औंधे पड़े रह गए और मर गए। ऐसा मालूम होता था कि कभी यह यहां रहते ही न थे।

बच्चो! जो लोग ख़ुदा के हुक्म पर नहीं चलते और पैग़म्बरों का कहना नहीं मानते उनका यही हाल होता है, अल्लाह तआला हम सब को अपने अज़ाब से बचाए और अपनी और अपने रसूल की इताअत नसीब करे, आमीन।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम

बच्चो! आपका ज़िक्र क़ुरआन शरीफ़ में 68 जगह आया है, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम बहुत ही बड़े नबी गुज़रे हैं, दुनिया में

जब बुत प्रस्ती का ज़ोर हो गया, लोग बुतों को बनाते और ख़ुद उनकी पूजा करते हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के वालिद भी बुत बनाते थे, और बुतों को ख़ुदा समझते थे।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम अभी बच्चे ही थे, वह देखते कि मेरे वालिद और दूसरे लोग खुद ही मिट्टी और लकड़ी से बुतों को बनाते हैं और फिर उनको ख़ुदा समझने लगते हैं, वह हैरान हुए कि किस क़द्र बेवक़ूफ़ हैं, यह सब लोग कि इन बे-जान मुर्तियों को ख़ुदा समझ रहे हैं।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का बुतों को तोड़ना

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम उन लोगों से कहते कि तुम लोग क्यों इन बुतों को पूजते हो, यह तुम्हें न कोई नफ़ा दे सकते हैं न नुक़्सान। मगर वह जवाब देते कि जो हमारे बाप-दादा करते हैं वही हम कर रहे हैं।

बच्चो! एक रोज़ उन लोगों का शहर से बाहर कोई बड़ा मेला हुआ यह सब लोग उस मेले में शरीक होने शहर से चले गए, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम उस मेले में न गए, उनके पीछे हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम मुल्क के बड़े बुत ख़ाने में गए और यहां के सब बुतों को तोड़ डाला सिवाए एक सबसे बड़े बुत के, और कुलहाड़ी जिससे सब बुतों को तोड़ा था वह उस बड़े बुत के कंधे पर रख दी जिससे यह मालूम होता था कि यह सब उसी ने तोड़े हैं।

लोग जब वापस आए और उन्होंने बुतों की यह दुरगत देखी कि किसी का सर नहीं है तो किसी का पैर नहीं तो बहुत गुस्सा हुए कि यह हरकत किसने की है, सबने शुबहा हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर किया कि वही बुतों को बुरा कहते थे, और मेले में भी नहीं गए

थे आख़िर उनको बुला कर पूछा कि यह बुत किसने तोड़े हैं, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने जवाब दिया कि मुझ से पूछने के बजाए अपने ख़ुदाओं से क्यों नहीं पूछते जिनकी तुम इबादत करते हो। कि उनको किसने तोड़ा है वह ख़ुद बता देंगे।

इन लोगों ने जवाब दिया कि आप को मालूम है कि यह बोल नहीं सकते, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने कहा कि फिर तुम ऐसे बेकार ख़ुदाओं की पूजा करते हो। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने फिर कहा कि देखो कुल्हाड़ी बड़े बुत के कंधे पर रखी है, यह काम इसी का मालूम होता है, इससे पूछो, यह लोग बहुत नाराज़ हुए, और उनके बाप आज़र से शिकायत की कि तुम्हारा बेटा ऐसी हरकत कर रहा है इसको समझा लो वरना अच्छा न होगा।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने बाप को भी समझाया, और बुत प्रस्ती से मना किया, और अर्ज़ किया कि ऐ बाप मैं डरता हूं कि तुम पर ख़ुदा का कोई अज़ाब नाज़िल न हो, इस पर उनके बाप बहुत सख़्त नाराज़ हुए और कहा कि आइंदा तूने मुझ से कोई ऐसी बात कही तो मैं तुझे संगसार कर दूंगा, और कहा कि तू मेरे पास से हमेशा के लिए चला जा, आपने बाप को सलाम किया और कहा कि मैं चला जाता हूं लेकिन तुम्हारे लिए मग़फ़िरत की दुआ करता रहूंगा।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और आग

बच्चो! फिर क्या हुआ, वहां के बादशाह नमरूद को जो बहुत ज़ालिम और बुतप्रस्त था, इन सब बातों का पता चला कि आज़र का बेटा इब्राहीम लोगों को बुतों की पूजा से मना करता है और एक ख़ुदा की दावत देता है तो उसने उनको अपने दरबार में बुलाया,

और आप से झगड़ने लगा।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मेरा ख़ुदा तो वही है जो मारता भी और जिलाता भी है।

नमरूद ने कहा मैं भी मार सकता हूं और जिला सकता हूं, चूनांचे उसने एक क़ैदी को जिसको सज़ाए मौत का हुक्म हो चुका था आज़ाद कर दिया और एक बेगुनाह को पकड़ कर क़त्ल करा दिया और कहा कि अब बताओ मेरे और तुम्हारे ख़ुदा के दरमियान क्या फ़र्क़ है, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने कहा कि मेरा रब हर रोज़ सूरज मशरिक़ से निकालता है तुम उसे मग़रिब से निकाल दो इस पर नमरूद लाजवाब हो गया और हुक्म दिया कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम को ज़िन्दा जला दिया जाए चूनांचे बहुत सी लकड़ीयां इकट्ठी की गईं और इनमें आग लगाई गई। जब आग बहुत भड़क उठी और उसके शुअ्ले आसमान की ख़बर लाने लगे तो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को इसमें फेंक दिया गया, मगर वह आग ख़ुदा के हुक्म से ठंडी हो गई, और आपको आग से कोई तकलीफ़ नहीं पहुंची।

बच्चो! इस तरह जो लोग अल्लाह तआला के कहने पर चलते हैं, अल्लाह पाक उनको हर तकलीफ़ से बचा लेते हैं और उनके लिए आसानियां ही आसानियां हो जाती हैं, और जो लोग अल्लाह तआला का कहना नहीं मानते उनके लिए इस दुनिया में मुश्किल ही मुश्किल होता है और मरने के बाद तो हमेशा जहन्नम में रहेंगे।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और ज़मज़म

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम अल्लाह के हुक्म से हज़रत हाजरा और अपने बच्चे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को जो अभी

पैदा हुए थे एक ऐसी जगह छोड़ आए जहां दूर-दूर तक आबादी न थी और न पानी था और न कोई दरख़्त था, हज़रत हाजरा ने हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को एक पत्थर के साया में लिटाया और ख़ुद पानी की तलाश में इधर-उधर दौड़ें लेकिन पानी न मिला, ख़ुदा की क़ुदरत से जहां हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम ऐड़ियां रगड़ रहे थे वहां पानी का चश्मा फूट निकला, जो आज तक ज़मज़म के नाम से मशहूर है, और हज़रत हाजरा जहां दौड़ीं थीं उसे सफ़ा व मर्वा कहते हैं जहां जाकर आज हाजी इसी तरह दौड़ते हैं।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और क़ुर्बानी

हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम कुछ बड़े हुए तो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को अल्लाह की तरफ़ से यह हुक्म हुआ कि अपने बेटे इस्माईल अलैहिस्सलाम को मेरी राह में क़ुर्बान कर दो, चूनांचे आपने हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को यह बात बताई हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम ने कहा कि अब्बा जान! अल्लाह तआला आपको जो हुक्म दे रहा है उसको ज़रूर पूरा कीजिए, आप इंशा अल्लाह मुझे साबित क़दम पाएंगे।

चूनांचे हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम अपने बेटे इस्माईल अलैहिस्सलाम को ज़िब्ह करने के लिए लेकर चले और जंगल में ले जा कर उनको उल्टा लिटाया और अपनी आंखों पर पट्टी बांध ली कि कहीं बेटे की मुहब्बत, अल्लाह के हुक्म को पूरा करने से न रोके और गले पर छुरी चला दी, उसी वक़्त आवाज़ आई कि ऐ इब्राहीम तूने हमारे हुक्म को सच्चा कर दिखाया, और जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने आंखों से पट्टी खोली तो हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के बजाए एक दुंबा ज़िब्ह किया हुआ पड़ा था इसी वाक़िआ की

याद में मुसलमान हर साल क़ुर्बानी करते हैं।

बच्चो! हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की ज़िन्दगी से हम को बहुत सबक़ मिलते हैं, हज़रत इब्राहीम ने हम को सिखाया कि अल्लाह की रज़ा के लिए मां-बाप को छोड़ा जा सकता है, अपने मुल्क और बिरादरी को ख़ैर बाद कहा जा सकता है, अपने बच्चे और बीवी को जंगल में बे-सर व सामान छोड़ कर उनसे भी पीठ फेरी जा सकती है।

बच्चो! अल्लाह तआला अगर किसी मुसलमान का इम्तिहान लेते हैं और उसमें वह कामियाब हो जाता है तो अल्लाह तआला उसको फिर और ज़ियादा नेमतें देते हैं।

ख़ान-ए-काबा

जब हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम जवान हुए तो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम ने मिल कर ख़ाना काबा को दोबारा तामीर करना शुरू किया, और जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से दुआ की ऐ मेरे रब इस शहर को लोगों के लिए अम्न की जगह बना दे, मुझे और मेरी औलाद को बुतों की पूजा से बचाए रख, ऐ हमारे रब मैंने अपनी औलाद को मैदान में जहां खेती नहीं होती तेरे इज़्ज़त वाले घर की ख़ातिर आबाद किया है ताकि ऐ मेरे रब ये नमाज़ पढ़ें, तू लोगों के दिलों को ऐसा कर दे कि इनकी तरफ़ झुके रहें, और इनको मेवे दे कि तेरा शुक्र अदा करें।

ऐ परवरदिगार जो बात हम छुपाते हैं और ज़ाहिर करते हैं तू इन सब को जानता है और ख़ुदा से ज़मीन व आसमान में कोई चीज़ छुपी हुई नहीं है, और मेरे रब तू मुझ को तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरी

नमाज़ पढ़ता रहूं और मेरी औलाद भी नमाज़ पढ़ती रहे, ऐ मेरे रब मेरी दुआ कबूल फ़रमा, ऐ मेरे रब हिसाब किताब यानी कियामत के दिन मुझ को और मेरे मां-बाप को और मुमिनों को बख़्श दे।

यह वही ख़ाना काबा है, जहां सारी दुनिया से लाखों मुसलमान हर साल हज करने आते हैं और जिसकी तरफ़ मुंह करके हम सब मुलमान पांचों वक़्त की नमाज़ें अदा करते हैं।

हज़रत लूत अलैहिस्सलाम

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के ज़माने ही में एक दूसरी बस्ती में अल्लाह पाक ने हज़रत लूत अलैहिस्सलाम को अपना पैग़म्बर बना कर भेजा हज़रत लूत अलैहिस्सलाम की कौम के लोग बड़ी बे-शर्मी के काम किया करते थे, चोरी, डाका ज़नी वग़ैरह, हज़रत लूत अलैहिस्सलाम ने बार-बार समझाया कि तुम ऐसी बे-शर्मी के काम क्यों करते हो, जो तुम से पहले दुनिया में किसी ने नहीं किए, तुम औरतों को छोड़ कर लड़कों से बे-शर्मी की बात करते हो, उनकी कौम वालों को और कोई जवाब नहीं आया तो कहने लगे कि लूत और उसके घर वालों को अपने गांव से निकाल दो, यह बहुत पाक बनते हैं।

हज़रत लूत अलैहिस्सलाम ने फिर समझाया कि देखो जो कुछ मैं कहता हूं, तुम्हारी ही भलाई के लिए कहता हूं, मैं तुम से यह नहीं कहता कि जो कुछ मैं तुम को नसीहत करता हूं इसके बदले में मुझ को कोई पैसा या मज़दूरी दो बल्कि इसका बदला तो मुझ को अल्लाह तआला देंगे।

हज़रत लूत अलैहिस्सलाम की नसीहत का उन पर कोई असर न हुआ और कहने लगे कि जिस अज़ाब से तू हम को डराता है

अगर तू सच्चा है तो एक दिन इस अज़ाब को हम पर ले आ।

बच्चो! फिर क्या हुआ, आख़िर ख़ुदा का ग़ज़ब जोश में आ गया, अल्लाह ने फ़रिश्तों को ख़ूबसूरत लड़कों की शक्ल में हज़रत लूत अलैहिस्सलाम के मकान पर भेजा, हज़रत लूत अलैहिस्सलाम ने जब लड़कों को देखा तो बहुत ग़मगीन हुए कि यह लड़के मेरे पास मेहमान आए हैं और मेरी क़ौम के लोग इनको परेशान करेंगे, कहने लगे, आज का दिन मेरी मुश्किल का दिन है, हज़रत लूत अलैहिस्सलाम की क़ौम के लोगों ने ख़ूबसूरत लड़कों को उनके घर पर देखा तो दौड़ते हुए आए क्योंकि यह लोग पहले ही से बुरे काम करते थे, हज़रत लूत अलैहिस्सलाम ने उनसे कहा कि ऐ मेरी क़ौम ख़ुदा से डरो, और मेरे मेहमानों के बारे में मेरी इज़्ज़त ख़राब न करो, तुम मेरी लड़कियों से शादी कर लो, क्या तुम में कोई भी भला मानस नहीं है वह बोले कि तुम को मालूम है कि तुम्हारी बेटियों की हम को ज़रूरत नहीं है, जो कुछ हम चाहते हैं वह तुम को मालूम है, हज़रत लूत अलैहिस्सलाम ने कहा काश मुझ में तुम्हारे मुक़ाबला की ताक़त होती, या मैं किसी मज़बूत क़िला में होता, फ़रिश्ते जो ख़ूबसूरत लड़कों की शक्ल में आए थे उन्होंने हज़रत लूत अलैहिस्सलाम को इतना ग़मगीन देखा तो कहा: ऐ लूत हम तुम्हारे रब की तरफ़ से भेजे हुए फ़रिश्ते हैं यह लोग आप तक हरगिज़ नहीं पहुंच सकते, आप रात के अंधेरे में अपने घर वालों को ले कर इस बस्ती से चल दें, और कोई शख़्स पीछे मुड़ कर न देखे, मगर अपनी बीवी को छोड़ देना, क्योंकि वह काफ़िर है, और जो आफ़त इस बस्ती पर आने वाली है वह उस पर भी पड़ेगी, इस बस्ती पर सुब्ह के क़रीब अल्लाह का अज़ाब होगा।

हज़रत लूत अलैहिस्सलाम ख़ुदा के हुक्म के ब-मोजिब अपनी बीवी को छोड़ कर बक़ीया अपने घर वालों को ले कर रात को इस बस्ती से चल निकले सुब्ह के क़रीब अल्लाह तआला का अज़ाब आया और उस बस्ती पर पत्थर और कंकरों की बारिश शुरु हुई, फिर उस बस्ती को उठा कर उल्टा पटख़ दिया और उसे नीचे ऊपर कर दिया, और वह बस्ती जिसके लोग लड़कों से बे-शर्मी की बातें करते थे और हज़रत लूत के मना करने से नहीं मानते थे, सब फ़ना हो गए।

बच्चो: यह तो थी उनकी दुनिया में ख़राबी, और दोज़ख़ का अज़ाब अल्लाह तआला के हां जाकर मिलेगा वह इलाहिदा।

ख़ुदा तआला हम सब को ऐसी बे-शर्मी की बातों से महफ़ूज़ रखे कि जिसकी वजह से इस क़द्र सख़्त अज़ाब आया कि ज़मीन को बलंद करके उल्टा पलट दिया।

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम

बच्चो! आप हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का क़िस्सा सुन चुके हैं।

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम के छोटे बेटे थे और याक़ूब अलैहिस्सलाम हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पोते थे, इस तरह हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पड़पोते हुए।

हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम के बारह बेटे थे और हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम सबसे छोटे थे, बहुत ख़ूबसूरत थे, बाप उनको बहुत चाहते थे, हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने एक ख़्वाब में देखा कि ग्यारह सितारे और चांद और सूरज मुझे सज्दा कर रहे हैं, उन्होंने

यह ख़्वाब अपने बाप को बताया, बाप ने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को मना कर दिया कि यह ख़्वाब अपने सौतेले भाईयों को न बताएं।

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के सौतेले भाईयों ने मिल कर मशवरा किया कि हमारे अब्बा जान यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को बहुत चाहते हैं और हम को इतना नहीं चाहते, इसलिए यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को जान से मार दिया जाए, लेकिन उनमें से एक ने कहा कि जान से मत मारो बल्कि यूसुफ़ को ऐसे कुवें में फेंक दो जिसमें पानी न हो, सब ने मिल कर यह बात तय कर ली।

सब भाई अपने बाप के पास आए और कहा कि आप यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को हमारे साथ खेलने के लिए भेज दें, उनके बाप हज़रत याक़ूब ने कहा कि मुझे डर है कि कहीं तुम खेल में लग जाओ और कोई भेड़िया जंगल में उसको खा जाए, भाईयों ने कहा कि हम एक ताक़तवर जमाअत हैं ऐसा कैसे हो सकता है।

आख़िर बाप ने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को भाईयों के साथ भेज दिया, भाईयों ने उनको साथ ले जा कर एक अंधेरे कुवें में फेंक दिया, और रात को रोते हुए घर वापस आए और कहा कि अब्बा जान हम आपस में दौड़ लगा रहे थे, और यूसुफ़ हमारे सामान के पास बैठा था कि एक भेड़िया आया और उसको खा गया, सुबूत के लिए एक कुरता ख़ून लगा कर बाप को दिखाया, बूढ़े बाप क्या करते, सब्र किया ख़ामोश हो गए, लेकिन बेटे की जुदाई में रोते रहते।

बच्चो जिस कुवें में हज़रत यूसुफ़ को फेंका था, उसके क़रीब ही एक क़ाफ़िला आया और उन्होंने पानी निकालने के लिए डोल कुवें में डाला, देखा कि एक ख़ूबसूरत लड़का कुवें में है, उनको बाहर निकाल लिया और जब क़ाफ़िला मिस्र पहुंचा तो वहां पर मिस्र के बादशाह ने उन क़ाफ़िले वालों को थोड़ी क़ीमत देकर ख़रीद लिया और अपनी

बीवी ज़ुलेख़ा से कहा कि उसको पा लो हो सकता है कि हम इसको अपना बेटा बना लें।

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम जवान हो गए, उनकी ख़ूबसूरती व वजाहत व अक़्लमन्दी और बढ़ गई, ज़ुलेख़ा अज़ीज़े मिस्र की बीवी उन पर फ़रेफ़्ता हो गई और उनको उनके नफ़्स की जानिब मे फ़ुसलाने लगी, एक रोज़ उसने कमरे के मारे के सारे दरवाज़े बन्द कर दिए, हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने यह हालत देखी तो ख़ुदा से पनाह मांगी और दरवाज़े की तरफ़ भागे, ज़ुलेख़ा ने पीछे मे आपकी क़मीस पकड़ ली जिससे क़मीस फट गई।

उस वक़्त अज़ीज़े मिस्र यानी ज़ुलेख़ा का शौहर भी दरवाज़े पर आ गया ज़ुलेख़ा ने उल्टा इल्ज़ाम हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम पर लगाया, और अपने ख़ाविन्द से कहा कि यह शख़्स तेरी बीवी की बे-आबरु करना चाहता था जिसकी सज़ा इसको मिलनी चाहिए, हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने कहा मैं बे-गुनाह हूं बल्कि यह औरत मुझ को फुसलाने की कोशिश कर रही थी मगर ख़ुदा ने मुझको इससे बचा लिया, आख़िर यह मुआमला क़ाज़ी के पास पेश हुआ, क़ाज़ी ने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से सफ़ाई के लिए गवाह तलब किए, हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अज़ीज़े मिस्र के ख़ानदान के एक मासूम और नन्हें बच्चे की तरफ़ इशारा किया कि यह उस वक़्त मौजूद था यह सच्ची गवाही देगा, नन्हें बच्चे ने कहा कि अगर क़मीज आगे से फटी है तो यूसुफ़ मुजरिम हैं, और अगर क़मीस पीछे से फटी है तो यूसुफ़ अलैहिस्स्लाम सच्चे हैं और ज़ुलेख़ा झूठी है जब हज़रत यूसुफ़ का कुर्ता देखा गया तो वह पीछे से फटा था, अज़ीज़े मिस्र ने हज़रत यूसुफ़ से कहा कि इस बात को जाने दो, और ज़ुलेख़ा से कहा कि तू मुआफ़ी मांग, हक़ीक़त में तूही क़सूरवार है।

औरतों की दावत

इस वाक़िआ की ख़बर सारे मिस्र में फैल गई और औरतें आपस में बातें करने लगीं कि ज़ुलेख़ा अपने ग़ुलाम को चाहती है, जब ज़ुलेख़ा को इसका इल्म हुआ तू उसे अपनी बदनामी का ख़्याल आया, उसने तरकीब सोची वह यह कि उसने मिस्र की औरतों की दावत की और सबके हाथों में एक-एक छुरी और एक-एक फल दे दिया और उसी वक़्त हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को वहां ले आई औरतों ने जब हज़रत यूसुफ़ के हुस्न व जमाल और ख़ूबसूरती को देखा तो वह सब अपने होश में न रहीं और छुरियों से बजाए फलों के अपने हाथों को काट लिया और कहने लगीं वाक़ेई यह कोई इंसान नहीं फ़रिश्ता है, ज़ुलेख़ा ने उन औरतों से कहा कि यह वही शख़्स है कि जिसके लिए तुम मुझे मलामत करती हो, मैं हक़ीक़त में इसको चाहती हूं, अगर उसने मेरी मुहब्बत को ठुकरा दिया तो मैं इसको क़ैद करा दूंगी।

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम जेल में

हज़रत यूसुफ़ को जब इसका इल्म हुआ तो उन्होंने अल्लाह तआ़ला से दुआ की कि ऐ अल्लाह तू ही मुझ को बचा सकता है, अगर मैं इन औरतों के फ़रेब में आ गया तो मैं जाहिलों में से हो जाऊंगा, इससे यह बेहतर है कि मुझे क़ैद ख़ाना में डाल दिया जाए, अल्लाह ने हज़रत यूसुफ़ की दुआ क़बूल की और वह जेल में डाल दिए गए।

हज़रत यूसफ़ से पहले जेल में दो क़ैदी और भी थे, एक शाही बावरची और दूसरा बादशाह को शराब पिलाने वाला साक़ी, उनके ख़िलाफ़ इल्ज़ाम था कि उन्होंने बादशाह को ज़हर देने की कोशिश

की है हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम जेल में क़ैदियों को अल्लाह तआ़ला की बातें बताते रहे और खुदा का पैग़ाम पहुंचाते रहे, एक दिन यह दोनों क़ैदी हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के पास आए और उन्होंने कहा कि हमने एक अजीब ख़्वाब देखा है, साक़ी ने कहा कि मैंने देखा है कि बादशाह को अंगूर शराब पिला रहा हूं, बावरची ने कहा कि मैंने देखा है कि मेरे सर पर रोटियां हैं और परिंदे उनको नोच-नोच कर खा रहे हैं, यह ख़्वाब बयान करने के बाद उन्होंने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से इसकी ताबीर पूछी, हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने बताया कि साक़ी तो जेल से छूट जाएगा, और फिर बादशाह की मुलाज़मत में जाकर उसको शराब पिलाएगा, और बावरची को सूली पर चढ़ा दिया जाएगा, और इसकी लाश को जानवर खाएंगे।

ऐसा ही हुआ, अल्लाह तआ़ला ने साक़ी को रिहा करा दिया और बावरची को सूली हो गई।

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम इसके बाद भी सालों जेल में रहे लेकिन किसी को इनकी रिहाई का ख़्याल न आया, इत्तेफ़ाक़न एक मिस्र के बादशाह ने ख़्वाब में देखा कि सात दुबली पतली गायें सात मोटी ताज़ा गायों को खा रही हैं, और सात हरी और सात सूखी हुई बालें देखीं बादशाह ने अपने दरबारियों से इसकी ताबीर पूछी मगर कोई भी सहीह जवाब न दे सका, इस मौक़ा पर साक़ी को याद आया कि उसने अपना ख़्वाब हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से पूछा था और आपका जवाब बिल्कुल सहीह हुआ था, उसने कहा कि जेल में एक शख़्स है जो ख़्वाब की सहीह ताबीर बयान करता है। बादशाह से जिसको अज़ीज़े मिस्र कहते थे इजाज़त लेकर वह जेल गया और हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से सारा वाक़िआ़ बयान

किया, हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि इस ख़्वाब की ताबीर तो यह है कि सात साल मुल्क में ख़ूब गल्ला पैदा होगा, और सात साल सख़्त कहत पड़ेगा, और फिर एक साल आएगा, जिसमें ख़ूब बारिश होगी और गल्ला होगा, जब उस शख़्स ने बादशाह को जाकर यह ख़बर सुनाई तो उसने कहा कि हज़रत यूसुफ़ को बुलाया जाए, जब वह दोबारा हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के पास गया और बादशाह का पैग़ाम सुनाया, तो आपने फ़रमाया उन औरतों का क्या हाल है जिन्होंने अपने हाथ काट लिए थे, बेशक मेरा रब उनके मक्र व फ़रेब से वाकिफ़ है, बादशाह ने उन औरतों को बुला कर पूछा तो उन्होंने कहा कि हमने हज़रत यूसुफ़ में कोई बुराई नहीं देखी यह देख कर ज़ुलेख़ा भी बोली कि अब जब कि हक़ ज़ाहिर हो गया है, सच बात यह है कि मैंने ही हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को वरग़लाया था और वह बिल्कुल सच्चा है।

हज़रत यूसुफ़ बादशाह बन गए

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम जब जेल से रिहा हो गए तो बादशाह ने हुक्म दिया कि यूसुफ़ को इज़्ज़त के साथ बुलाया जाए, मैं शाही ख़िदमत उनके सुपुर्द करुंगा, हज़रत यूसुफ़ आए और बादशाह से बात-चीत की, हज़रत यूसुफ़ ने कहा कि मुझको शाही ख़ज़ाने का वज़ीर मुक़र्रर कीजिए मैं इसकी बेहतर हिफ़ाज़त करुंगा, बादशाह ने मंज़ूर किया और उन्हें शाही ख़ज़ाने का वज़ीर मुक़र्रर कर दिया।

आख़िरकार वह क़हत का ज़माना आ गया जिसका बादशाह ने ख़्वाब देखा था और इसका असर उस जगह भी पहुंचा जहां हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के वालिद और भाई भी रहते थे, चूनांचे

हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम ने अपने बेटों को ग़ल्ला लाने के लिए मिस्र में हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के पास भेजा, जब हज़रत यूसुफ़ के भाई आए तो हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने उनको पहचान लिया और भाई हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को नहीं पहचान सके, हज़रत यूसुफ़ ने उनको ग़ल्ला दिया और कहा कि अगली दफ़ा अओ तो अपने दूसरे भाई को भी साथ ले कर आना, वर्ना मैं तुमको ग़ल्ला नहीं दूंगा, और अपने मुलाज़िमों से कह दिया कि जो क़ीमत उन्होंने ग़ल्ला की दी है वह भी चुपके से उनके सामान में रख दो, ताकि वह फिर मिस्र आएं।

जब यह लोग अपने शहर कनआन पहुंचे तो अपने बाप हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम से कहा कि अब्बा जान, अब के हमारे साथ भाई को भेजीए वर्ना हम को ग़ल्ला नहीं मिलेगा, और हम इसकी ख़ूब हिफ़ाज़त करेंगे।

जब उन्होंने अपना अम्बाब खोला और उसमें सारी रक़म देख कर बहुत ख़ुश हुए, फिर बाप से कहा कि देखिए शाहे मिस्र ने हमारी रक़म भी वापस कर दी है, आप हमारे साथ भाई को ज़रूर कर दें, हम ख़ूब हिफ़ाज़त करेंगे और हमको सामान भी ज़ियादा मिलेगा।

हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम ने कहा कि जब तक तुम अल्लाह का अहद मुझ को न दो कि इसकी हिफ़ाज़त करोगे और इसको सबके साथ रखोगे उस वक़्त तक मैं इसको तुम्हारे साथ नहीं भेजूंगा, आख़िरकार सब भाईयों ने अहद किया।

हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम ने इनको नसीहत की कि तुम सब एक दरवाज़ा से दाख़िल मत होना, आख़िर ज़ब यह सब इलाहिदा-इलाहिदा दरवाज़ों से दाख़िल हुए तो हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अपने सगे भाई यामीन को बताया कि मैं तुम्हारा

सगा भाई हूं, और मैं तुम को अपने पास रखूंगा, आख़िर जब उन सब का सामान तैयार हो गया तो हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अपना एक बर्तन अपने सगे भाई के सामान में चुपके से रखवा दिया और एलान हुआ कि शाही कटोरा गुम हो गया है, जिसने लिया हो वह दे दे उसको एक ऊंट गल्ला इंआम दिया जाएगा, सब भाईयों ने इंकार किया, बादशाह के आदमियों ने कहा कि जिसके सामान से निकले इसको रोक रखें इसकी यही सज़ा है, हमारे मुल्क का भी यही क़ानून है, फिर तमाम भाईयों की तलाशी ली गई, आख़िर यामीन के सामान में से वह कटोरा निकला, इस तरह हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अपने भाई यामीन को अपने पास रोक लिया।

भाईयों ने देखा तो कहने लगे इसका भाई भी चोर था, हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने सब कुछ सुना और ख़ामोश रहे, अब सब भाईयों ने मिलकर हज़रत यूसुफ़ से दरख़्वास्त की कि इसका बाप बहुत बूढ़ा है इस पर रहम खा कर इसे छोड़ दीजिए और इसकी जगह हम में से किसी को पकड़ लीजिए, हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: अल्लाह की पनाह जो चोर को छोड़ कर बे-गुनाह को पकड़ूं, जब यह लोग बिल्कुल मायूस हो गए तो सबने मिलकर मशवरा किया कि अब क्या करना चाहिए तो सबसे बड़े ने कहा तुम ने अल्लाह की क़सम खा कर अपने बाप को यक़ीन दिलाया था कि इसको ज़रूर वापस लाओगे फिर यूसुफ़ के साथ हमने जो हरकतें कीं वह तुम से छुपी नहीं इसलिए मेरी तो हिम्मत नहीं कि बाप को मुंह दिखाऊं, या ख़ुद हाज़िर होने की इजाज़त दें या अल्लाह कोई दूसरी सूरत पैदा कर दें तो और बात है, तुम लोग जाओ और जो कुछ हुआ है ठीक-ठीक अपने बाप से बयान कर दो, अगर वह अपनी तसल्ली करना चाहें तो इस गांव के लोगों से पूछ लें कि जहां हम

ठहरे थे और इस क़ाफ़िला से मालूम कर लें जिसके साथ हम आए हैं। इस मशवरा के बाद यह लोग घर पहुंचे और वालिद साहिब को तमाम क़िस्सा सुनाया, उन्होंने सुनते ही फ़रमाया तुम्हारे दिलों ने यह बात घड़ ली है, बहरहाल सब्र अच्छा है, उम्मीद है कि अल्लाह हम सबको एक जगह जमा कर देगा, वही ख़ूब जानता है कि यह क्या हो रहा है, और उनसे दूसरी तरफ़ रुख़ कर लिया, हज़रत यूसुफ़ के ग़म से उनकी आंखें सफ़ेद हो गई थीं यूसुफ़ के भाईयों ने कहा, अब्बा जान आप तो यूसुफ़ को याद करते हुए घुल जाएंगे और जान दे देंगे।

उन्होंने फ़रमाया मैं अपनी शिकायत तो अल्लाह से करता हूं और मैं ऐसी बातें जानता हूं जिनकी तुम्हें ख़बर नहीं, जाओ यूसुफ़ और उसके भाई को तलाश करो वह मिस्र ही में कहीं न कहीं मिल जाएंगे, अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद होने की कोई वजह नहीं।

हज़रत यूसुफ़ की भाईयों से मुलाक़ात

अब एक बार फिर सब भाई मिलकर मिस्र पहुंचे, हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से घर वालों की बुरी हालत बयान की और कहा कि हम अपने साथ बहुत थोड़ा सामान लाए हैं मगर चाहते हैं कि आप पूरा-पूरा ग़ल्ला दें, हज़रत यूसुफ़ ने अपने घर का यह हाल सुना तो बेताब हो गए उनसे रहा न गया, और उन्होंने अपने भाईयों से कहा तुम जानते हो कि तुम ने यूसुफ़ और उसके भाई के साथ क्या किया है, भाईयोंने निहायत तअज्जुब और हैरानी के साथ पूछा कि कहीं आप ही तो यूसुफ़ नहीं?

आपने फ़रमाया हां मैं ही यूसुफ़ हूं और यह मेरा भाई है, अल्लाह ने हम पर बड़ा एहसान किया बेशक जो शख़्स नेक ज़िन्दगी

बसर करता है और सब्र से काम लेता है, अल्लाह इसका बदला देता है, जब तमाम भाईयों को यक़ीन हो गया कि जिसके दरबार में हम इस वक़्त खड़े हैं, हमारे भाई यूसुफ़ हैं, तो सबने मिलकर अपने गुनाहों का इक़रार किया, आपने फ़रमाया तुम कोई फ़िक्र न करो, तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं, अल्लाह तमाम गुनाहों को मुआफ़ करे वही सबसे ज़ियादा रहम करने वाला है, जाओ मेरा कुर्ता मेरे बाप के चहरे पर डाल दो उनकी बीनाई लौट आएगी, और फिर सबको यहां ले आओ।

उधर क़ाफ़िला मिस्र से रवाना हुआ और इधर हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम ने अपने घर वालों को यह ख़ुशख़बरी दी कि मुझे यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की बू आ रही है, उन्होंने सुना तो कहा कि तुम्हारे सर पर एक ही ख़ब्त सवार है, आख़िर क़ाफ़िला आ गया, हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का कुर्ता उनके सामने रख कर तमाम हालता सुनाए तो उन्होंने घर वालों से कहा, देखो मैंने तुम से नहीं कहा था, आख़िर सब बेटों ने मिलकर आप से गुनाहों की मुआफ़ी मांगी और मिस्र को चल दिए।

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात हुई तो उन्होंने मां-बाप को अपने पास ठहराया और कहा ख़ुदा चाहे तो मिस्र में अम्न और आराम के साथ रहिए फिर उनको अपने साथ तख़्त पर बिठाया, सबके सब भाई शाही आदाब बजा लाए, आपने फ़रमाया यह मेरे ख़्वाब की ताबीर है, अल्लाह ने उसको सच कर दिखाया, उसने मुझ पर बड़ा एहसान किया जो मुझे क़ैद से छुड़ाया, और शैतान ने जो फ़साद मेरे और मेरे भाईयों के दरमियान डाल दिया था, आप सबको देहात व बयाबान से यहां ले आया बेशक मेरा रब ख़ैर

की हिक्मत जानता है।

ऐ मेरे परवरदिगार तूने मुझे हुकूमत दी, बातों का मतलब समझा दिया, ऐ ज़मीन व आसमान के पैदा करने वाले खुदा तू ही दुनिया और आख़िरत में मेरा काम बनाने वाला है, मुझे मुसलमान ही मारना और नेक बन्दों के साथ मिला देना।

ग़रज़ एक अर्सा तक हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम अल्लाह के बताए हुए क़ानून के मुताबिक़ मिस्र में हुकूमत करते रहे, लोगों को अल्लाह की तरफ़ बुलाते रहे, बुराईयों से रोकते रहे, भलाईयों को फैलाते रहे मुल्क मिस्र को अच्छाईयों से भर दिया और बिलआख़िर अल्लाह के पास चले गए यानी आपकी वफ़ात हो गई और आप मिस्र में दफ़न हैं।

बच्चों! हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को भाईयों की वजह से कैसी-कैसी तक्लीफ़ें उठानी पड़ीं, अंधेरे कुवें में रहे, गुलाम बने, जेल खाना में रहे लेकिन जब यह सब अल्लाह की आज़माइश पूरी हो गई और अल्लाह पाक ने उनको मिस्र का बादशाह बना दिया तो भाईयों से कोई बदला नहीं लिया, बल्कि अल्लाह तआला से उनके गुनाहों के मुआफ़ी के लिए दुआ की और खुद भी मुआफ़ कर दिया। बच्चों भाईयों के साथ यही करना चाहिए, क़ुरआन शरीफ़ में एक दूसरी जगह है, जिसका मतलब यह है कि अगर तुम्हारे साथ कोई ज़ियादती करे और तुम उसके बदले उसके साथ नेकी और भलाई करो, तो वह दुश्मन तुम्हारा हक़ीक़ी दोस्त बन जाएगा।

अल्लाह हम को ऐसी ही तौफ़ीक़ दे। आमीन

हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम

आपका ज़िक्र भी क़ुरआन शरीफ़ में बार-बार आया है, ताकि

लोग आपकी सच्ची बातों से सबक़ सीखते रहें।

बच्चो! पुराने ज़माने में मदयन नामी एक बड़ा पुर रौनक़ शहर था, वहां के लोग ख़ूब मालदार थे, तिजारत और सौदागरी उनका पेशा था मगर वह लोग बुतों की पूजा करते थे, सौदा बेचते वक़्त कम तौला करते थे और इसी तरह कम नापा करते थे, अल्लाह तआला ने हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम को उनके पास नबी बना कर भेजा, हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम ने बड़ी नर्मी, आजिज़ी और प्यार से उन लोगों से कहना शुरू किया, ऐ लोगो तुम सिर्फ़ एक अल्लाह की इबादत किया करो, नाप तौल पूरी दिया करो, लोगों को उनकी चीज़ें कम तौल कर न दिया करो, ज़मीन में फ़साद न फैलाया करो, और तुम सड़कों पर इस ग़रज़ से मत बैठो कि अल्लाह तआला पर ईमान लाने वालों को धमकियां दो। और अल्लाह की राह से रोको, और इसमें क़जी की तलाश में लगे रहो तुम कितने थोड़े थे, अल्लाह ने तुम पर मेहरबानी की, तुम को औलाद दी, और तुम बहुत हो गए, देखो फ़साद का नतीजा हमेशा बुरा होता है, अगर तुम मुझे झूठा ख़्याल करते हो और दूसरे लोगों को मेरे सच्चे होने का पूरा-पूरा यक़ीन है तो सब्र करो, यहां तक कि अल्लाह हमारे और तुम्हारे दरमियान फ़ैसला कर दे।

क़ौम के दौलतमन्द रईस लोग इस बार-बार की नसीहत को बर्दाश्त न कर सके और उन्होंने कहा यह किस तर हो सकता है कि हम उनको छोड़ दें जिन्हें हमारे बाप-दादा पूजा करते थे, माल हमारा अपना है और इसको हम जिस तरह चाहते हैं ख़र्च न करें, और वह भी सिर्फ़ आपके कहने पर और आप ऐसे सच्चे नेक कहां से बन गए, क्या आप की नमाज़ ऐसी ही बातों का हुक्म देती है, आप झूठे हैं, आप पर किसी ने जादू कर दिया है अगर सच्चे हो तो आसमान

से हम पर पत्थर बरसाओ, और उनकी क़ौम के लोगों ने कहा कि ऐ शुऐब इस बात का यक़ीन कर लो कि हम तुम्हें भी इस बस्ती से निकाल देंगे, और इन लोगों को भी जो तुम पर ईमान लाए हैं, वर्ना हमारे दीन में वापस आ जाओ, तुम बहुत कमज़ोर आदमी हो अगर तुम्हारी बिरादरी के लोग न होते तो हम तुम्हें कबके पत्थरों से मार-मार कर ख़त्म कर चुके होते, और वैसे तुम्हारा हम पर कोई दबाव भी नहीं, हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम की क़ौम के लोग अपनी दौलत और रुपये पैसे के ग़ुरूर में बार-बार अपने सच्चे नबी हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम से इसी क़िस्म की बातें करते रहते।

हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं अल्लाह तआला ने मुझे सीधा रास्ता बताया है और अपनी मेहरबानी से मुझे हलाल रोज़ी बख़्शता है, अब यह किस तरह हो सकता है कि जिस काम से मैं तुमको रोकता हूं उसे ख़ुद करने लग जाऊं मैं तो सिर्फ़ तुम लोगों को दुरुस्त करना चाहता हूं, और सिर्फ़ अल्लाह पर भरोसा रखता हूं, तुम लोग मेरी ज़िद में आकर ऐसा गुनाह न कर बैठना कि तुम पर अज़ाब उतर आए जैसा कि तुम से पहले लोगों पर आ चुका है बल्कि तुम अपने गुनाहों की मुआफ़ी मांगो और आगे के लिए उसी के हुज़ूर में तौबा करो।

तुमने अल्लाह को बिल्कुल भुला दिया है, क्या तुम मेरी बिरादरी से ज़ियादा डरते हो, और अल्लाह का ख़ौफ़ तुम्हारे दिलों से उठ गया है, मैंने अपना फ़र्ज़ अदा कर दिया, अगर तुम नहीं जानते तो चंद रोज़ के बाद तुम्हें मालूम हो जाएगा कि झूठा कौन है, और किस पर अल्लाह का अज़ाब उतरता है, आख़िर अल्लाह का अज़ाब आ गया, शुऐब अलैहिस्सलाम और ईमान वाले तो बच गए और जो लोग अल्लाह की नाफ़रमानी करते थे वह अपने घरों

में बैठे के बैठे रह गए और ऐसे बरबाद हुए कि गोया इन मकानों में कभी बसे ही न थे।

बच्चो! बस अल्लाह तआला के सिवा दूसरे की इबादत करना, अल्लाह तआला को भूल जाना, और ग़ैरों को याद करना, रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बातें न मानना, दिल की ख़्वाहिशात को पूरा करना, कम तौलना, कम नापना, अम्न व अमान के बाद ज़मीन पर फ़साद मचाना, रुपया का ग़ुरूर, दौलत का घमंड करना, अल्लाह को बेहद नापसंद है, जो लोग ऐसा करते हैं और तौबा नहीं करते सहीह राह इख़्तियार नहीं करते आख़िरकार एक दिन ज़रूर सज़ा पाएंगे और नुक़सान उठाएंगे।

बच्चो! आओ हम सब मिलकर अहद करें कि अल्लाह तआला के सिवा किसी की इबादत न करेंगे और कभी न कम तौलेंगे न कम नापेंगे, ग़ुरूर न करेंगे, और किसी का माल बेईमानी से न खाएंगे, और अगर हम ने ऐसा किया तो हमारा हश्र भी हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम की क़ौम जैसा हो जाएगा, अल्लाह हमको महफ़ूज़ रखे आमीन।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला के बहुत बड़े रसूल गुज़रे हैं, आप पर तौरेत शरीफ़ नाज़िल हुई उनकी क़ौम जिन्हें इस वक़्त यहूदी कहा जाता है, उन्हीं बनी इस्राईल की हिदायत और नजात का काम आपके सुपुर्द हुआ, क़ुरआन पाक में आपका बार-बार ज़िक्र आता है, इसलिए इस क़िस्से को खोल कर बयान करना चाहते हैं, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का क़िस्सा तो आप पहले सुन चुके हैं।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के दो बेटे बहुत मशहूर हुए हैं, हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम, और हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम, हज़रत इस्माईल मक्का मुकर्रमा में ठहरे जहां हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम उनकी वालिदा के साथ छोड़ आए थे जहां उनकी औलाद ख़ूब फूली फली, उन्हीं में हमारे रसूल पाक जनाब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पैदा हुए, हज़रत इस्हाक़ के बेटे हज़रत हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम थे जिनका दूसरा नाम इस्राईल यानी अल्लाह का बन्दा था, उनकी औलाद बनू इस्राईल कहलाई यह लोग हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की वजह से मिस्र में आबाद हो गए थे जहां का क़िस्सा पहले तहरीर कर दिया गया है, जहां वह मिस्रियों के चार सौ साल तक ग़ुलाम बने रहे मिस्र पर उस ज़माना में क़िबतियों की हुकूमत थी, उनका बादशाह फ़िरऔन कहलाता था, यह बनू इस्राईल पर तरह-तरह के ज़ुल्म करता था, अल्लाह तआला ने रहम फ़रमाया और बनू इस्राईल की हिदायत और आज़ादी के लिए हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को पैदा किया।

मिस्र के बादशाह फ़िरऔन को नजूमियों ने बताया कि बनी इस्राईल में बहुत जल्द एक लड़का पैदा होने वाला है जो तेरी हुकूमत को तबाह करके अपनी क़ौम को आज़ाद करा लेगा, इस ख़बर से वह परेशान हो गया और उसने हुक्म दिया कि इस क़ौम में जो भी लड़का पैदा हो उसे ज़िब्ह कर दिया जाए मगर लड़कियां ज़िन्दा रहने दी जाएं।

जिस साल हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पैदा हुए उनकी वालिदा को इस बात का हर वक़्त खटका लगा रहता था कि कोई दाया बादशाह को इस बात की ख़बर न दे मगर अल्लाह ने उनको तसल्ली दी कि तुम फ़िक्र न करो, जब भेद खुल जाने का ख़तरा ज़ियादा हो

गया तो उन्होंने अल्लाह के हुक्म से उन्हें एक संदूक़ में बन्द करके दरिया में डाल दिया, दरिया के दूसरी तरफ़ फ़िरऔन के घर वाले थे, उन्होंने संदूक़ को जो बहते देखा तो उठा कर घर ले गए, उन्हें ख़बर न थी कि आगे चल कर यही लड़का उनके रंज का सबब होगा, फ़िरऔन की बीवी ने कहा, इसे क़त्ल न करो यह हम सबकी आंखों की ठंडक है, हमारे काम आएगा और इसे अपना बेटा बनाएंगे।

अब उसके दूध पिलाने की फ़िक्र हुई तो वह किसी औरत का दूध नहीं पीते थे, उनकी बहन जो उस संदूक़ के पीछे लगी हुई थीं, यह सब कुछ देख रही थीं, उन्होंने कहा कि मैं एक अन्ना का पता देती हूं, जो उसको पाल लेगी और अच्छी तरह देख भाल कर लेगी और उन्होंने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की मां का पता बताया, इस तरह मूसा अलैहिस्सलाम अपनी मां के पास पहुंच गए, अल्लाह तआला हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को अपनी क़ौम के दुश्मन फ़िरऔन के घर में परवरिश पाते रहे, यहां तक कि जवान हो गए, एक रोज़ का क़िस्सा है कि वह सुब्ह सवेरे शहर आए उस वक़्त सबके सब आराम से सो रहे थे, उन्होंने अपनी क़ौम के एक आदमी को देखा जिसे क़िब्ती मार रहा था, क्योंकि वह इससे बेगार में काम लेना चाहता था और वह इंकार कर रहा था, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से अपनी क़ौम की ज़िल्लत बर्दाश्त न हो सकी और उसकी मदद के लिए मजबूर हो गए, उन्होंने उसके घूंसा मारा कि उसकी जान निकल गई, उसका मरना था कि हुकूमत में खलबली मच गई, बनी इस्राईल के एक शख़्स ने हमारी क़ौम के आदमी को मार डाला, चूनांचे हुक्म दिया गया कि क़त्ल करने वाले को मार दिया जाए मगर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को वक़्त पर ख़बर मिल गई और वह

मदयन की तरफ़ चले गए जो हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम का शहर था।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का निकाह और पैग़म्बरी

मदयन के क़रीब पहुंचे तो देखा कुवें के पास बहुत से लोग जमा हैं जो अपने-अपने जानवरों को पानी पिला रहे हैं मगर दो लड़कियां अपने जानवरों के लिए एक तरफ़ खड़ी हैं, हज़रत मूसा ने उन से पूछा कि तुम यहां क्यों खड़ी हो, उन्होंने कहा हमारा बाप बूढ़ा है हम इस इंतिज़ार में खड़े हैं कि यह लोग अपने जानवरों को पानी पिला लें तो बचा हुआ पानी अपने जानवरों को दें, यह सुना तो उन्होंने पानी खींचा और उनके जानवरों को पानी पिला दिया, और एक दरख़्त के नीचे जाकर बैठ गए क्योंकि शहर में किसी से जान पहचान न थी।

वह दोनों लड़कियां हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम की साहिबज़ादीयां थीं जिनका क़िस्सा आप पहले सुन चुके हैं उन्होंने घर जाकर अपने वालिद से तमाम क़िस्सा बयान किया और उनके फ़रमाने पर अपने घर ले गईं, जब उन्होंने अपनी मुसीबत का क़िस्सा सुनाया तो हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया अब डरने की ज़रूरत नहीं अल्लाह ने आपको ज़ालिम क़ौम से बचा लिया है।

हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम ने उनसे कहा कि तुम आठ साल तक मेरे पास काम करो और दो साल ठहर जाओ तो तुम्हें अख़्तियार है मगर मैं इसका हक़ नहीं रखूंगा, आठ साल गुज़र जाने पर तुम्हें अपने पास रहने पर मजबूर न करूंगा, मैं अपनी तरफ़ से यह वादा करता हूं कि अपनी एक लड़की का निकाह तुम से कर दूंगा।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा कि मुझे मंज़ूर है, आठ दस साल इसमें जो मुद्दत चाहूं पूरी करूं, मुझ पर ज़ोर ज़ियादती न होनी चाहिए और अल्लाह तआला इन बातों पर गवाह है, चूनांचे वह बराबर काम करते रहे और जब मुद्दत पूरी हो गई, तो हज़रत शुऐब ने अपनी लड़की का निकाह उनसे कर दिया।

जब निकाह हो गया तो दोनों मियां-बीवी वहां से रवाना हुए और रास्ते में एक जगह पहाड़ी की तरफ़ उन्होंने आग देखी, मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी बीवी से कहा कि तुम यहां ठहरो मैं आग लेकर अभी आता हूं, और अगर कोई शख़्स वहां मिल गया तो उससे रास्ता भी मालूम कर लूंगा, वहां गए तो मैदान के किनारे पर दरख़्त में से आवाज़ आई मुबारक है वह जो इस आग में है और जो इसके चारों तरफ़ है, तुम तुवा के मैदान में हो, अपने जूते उतार दो, मैं बड़ी दानाई वाला अल्लाह हूं तमाम जहान का, और तुम्हारा पालने वाला, मैंने तुम्हें पैग़म्बरी के लिए चुन लिया है, जो कुछ कहता हूं उसको सुन, मेरी इबादत कर, और मेरी याद की ख़ातिर नमाज़ की पाबन्दी कर बेशक क़ियामत आने वाली है, मूसा (अलैहिस्सलाम) तुम्हारे दाएं हाथ में क्या है? उन्होंने कहा यह मेरी लाठी है, इस पर सहारा लेता हूं, अपनी बकरियों के लिए इससे पत्ते झाड़ता हूं और इसके सिवा इससे और भी काम लेता हूं, अल्लाह तआला ने हुक्म दिया कि इस लाठी को ज़मीन पर डाल दो लाठी जो डाली तो वह सांप की तरह दौड़ती हुई दिखाई दी, इस पर वह डर गए, अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया कि इसको पकड़ लो और डरो नहीं हम अभी इसको पहली हालत पर कर देते हैं, और अपना दाहिना हाथ अपनी बाईं बग़ल में दे लो फिर निकालो, बिला किसी ऐब के निहायत रौशन होकर निकलेगा, यह दूसरी निशानी होगी ताकि हम

तुम को अपनी क़ुदरत की बड़ी निशानियों में से बाज़ निशानियां दिखा दें।

इन दोनों निशानियों के साथ-साथ अल्लाह ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को फ़िरऔन के पास भेजा और फ़रमाया इस मुल्क में फ़िरऔन ने फ़साद फैला रखा है और सरकशी पर कमर बांध रखी है, आपने फ़रमाया कि मुझे डर है कि वह मुझे झुठलाएगा, मैंने उसके एक आदमी को मार दिया था, अब वह मुझे मारने की कोशिश करेगा, मेरा जी रुकता है, मेरी ज़बान खोल कि लोग मेरी ज़बान समझ लें और मेरे भाई हारून को भी मेरे साथ कर दे कि मुझे क़ुव्वत मिले।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की दुआ क़बूल हो गई और दोनों भाईयों ने मिस्र में जाकर फ़िरऔन से कहा कि अल्लाह तआला ने हमें तरे पास भेजा है कि तू बनी इस्राईल को न सता, और उन्हें हमारे साथ रवाना कर दे, हमारे पास तेरे रब की निशानियां हैं, और यह भी यक़ीन कर ले कि सलामती उस शख़्स के लिए है जो सीधी राह पर है और जो शख़्स झुठलाएगा और सरकशी करेगा उस पर अल्लाह का अज़ाब आएगा।

फ़िरऔन के पास अल्लाह का पैग़ाम पहुंचा दिया गया मगर उसे अपनी हुकूमत फ़ौज और ख़ज़ानों पर घमंड था इसलिए वह बराबर उनसे बहस करता रहा, और जब हर बात का उसको ठीक-ठीक जवाब मिलता रहा तो उसने मूसा से कहा तुम बच्चे से थे जब तुम हमारे घर में आए, हमने तुम्हें सालहा साल तक अच्छी तरह पाला, और रहा एहसान जतलाना परवरिश का सो वह यह नेमत है जिसका तू मुझ पर एहसान रखता है कि तूने बनी इस्राईल को सख़्त ज़िल्लत में डाल रखा था, और जब तुम ने मेरे क़त्ल का

इरादा किया तो मैं मदयन चला गया फिर अल्लाह ने मुझे दानाई दी और अब रसूल बना कर तेरी तरफ़ भेजा, फ़िरऔन ने कहा तुम ने वह हरकत यानी क़िबती को क़त्ल किया था और तुम बड़े नासपास हो।

हज़रत मूसा ने जवाब दिया कि वाक़ई मैं इस वक़्त वह हरकत कर बैठा था और मुझ से ग़लती हो गई थी।

फ़िरऔन इस बात को सुन कर ला जवाब हो गया, और बात बदल कर पूछने लगा, तुम्हारा रब कौन है, आपने फ़रमाया जिसने आसमान और ज़मीन को पैदा किया जो न सिर्फ़ तुम्हारा बल्कि तुम्हारे बाप दादा का पालने वाला है।

फ़िरऔन ने दरबारियों से कहा कि यह तो कोई दीवाना है जो बहकी-बहकी बातें कर रहा है।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का जादूगरों से मुक़ाबला और उनका मुसलमान होना

आख़िर जब वह हर तरह से तंग हो गया तो उसने तमाम मुल्क में ढिंढोरा पिटवाया, बड़े-बड़े जादूगरों को बुलवाया, चारों तरफ़ हरकारे दौड़ा दिए और ईद के दिन सबके सब मैदान में जमा हुए अब एक तरफ़ फ़िरऔन था, उसके दरबारी शाही फ़ौजें और उसकी क़ौम, और दूसरी तरफ़ ग़रीब और बेकस हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और हारून अलैहिस्सलाम थे, अल्लाह के सिवा और मदद देने वाला न था।

जादूगरों ने नज़रबन्दी करके अपनी रस्सियां और लाठियां डाल दीं और देखने वालों को ऐसा मालूम हुआ कि वह सब दौड़ रही हैं हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पहले तो डर गए मगर अल्लाह तआ़ला

ने कहा तू न डर तेरी ही फ़त्ह होगी, तेरे दाहिने हाथ में जो लाठी है उसे डाल दे कि वह इन सब को निगल जाएगी, जो कुछ उन्होंने बनाया है यह सिर्फ़ जादू है जहां अल्लाह का हुक्म आ जाए वहां जादू काम नहीं कर सकता, अब जो उन्होंने अपनी लाठी डाली तो वह अज़दहा बन कर सब को निगल गई, जादूगरों ने जो देखा तो वह सबके सामने सज्दे में गिर पड़े, और कहा कि हम मूसा और हारून अलैहिस्सलाम के रब पर ईमान ले आए, फ़िरऔन ने गुस्सा में आकर कहा तुमने इसको मान लिया है अभी मैंने हुक्म नहीं दिया था, वही तुम्हारा बड़ा है जिसने तुम को जादू सिखाया है तुम सबने मिलकर यह शरारत की है तुम सबके हाथ और पांव काट डालूंगा और फिर सबको सूली पर चढ़ा दूंगा।

मगर इन जादूगरों पर धमकी का कुछ असर न हुआ, उन्होंने कहा हमें कुछ परवाह नहीं हमें अपने रब के पास जाना है, ज़ोर तो बस इसी ज़िन्दगी तक चल सकता है जो कुछ तुझे करना है कर ले, ऐ हमारे पालने वाले हम तुझ पर ईमान ले आए हैं, जब हम पर यह मुसीबतें आई तो हमें सब्र देना और दुनिया से मुसलमान ही उठाना।

फ़िरऔन ने इन जादूगरों को जो मुसलमान हो गए थे सूली पर चढ़ा दिया और उनके हाथ पैर कटवा दिए, इतनी तक्लीफ़ों के होते हुए भी वह ईमान पर क़ाइम रहे, इस वाक़िआ के बाद भी फ़िरऔन की क़ौम अल्लाह तआला पर ईमान नहीं लाई और अपने गुरूर पर रही, अल्लाह तआला बड़ा मेहरबान है, वह बार-बार अपने बन्दों को सीधी राह दिखाता है इसके बाद अल्लाह पाक फ़िरऔन और उसकी क़ौम को डराने के लिए तरह-तरह के अज़ाब भेजता रहा, कभी लोगों की नसीहत के लिए कहत डाल दिया और पैदावार की कमी कर दी, मगर जब कभी उन पर कोई आफ़त आती तो यही कहते

कि मूसा और उनके साथियों की नहूसत है, फिर और ज़ियादा समझाने के लिए उन पर वबा, टिड्डियां, जुएं, मेंडक और ख़ून की निशानियां भेजीं, मगर जब कभी उन पर कोई अज़ाब आता तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से कहते कि आप हमारे लिए दुआ करें, अगर अज़ाब टल गया तो हम ज़रूर मुसलमान हो जाएंगे, मगर उनकी हालत यह थी कि इधर अज़ाब टला और उधर वह अपने इक़रार से फिर गए। जब उनकी हद हो गई तो अल्लाह के हुक्म से हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अपनी तमाम क़ौम को लेकर वहां से रातों रात निकल खड़े हुए, फ़िरऔन ने भी शरारत और ज़ुल्म से उनका पीछा किया और सुब्ह होते ही उनको समंद्र के क़रीब जा लिया, मूसा अलैहिस्सलाम के साथी चिल्लाए कि हम पकड़े गए आपने फ़रमाया हरगिज़ नहीं, मेरे साथ मेरा रब है, वह मुझे रास्ता बता देगा।

अल्लाह की नेमतें

ग़रज़ अल्लाह तआला ने बनी इस्राईल को सहीह व सालिम समुंद्र के पार उतार दिया मगर जब फ़िरऔन और उसके लशकरों ने ज़ुल्म और शरारत के लिए उनका पीछा किया तो देखते ही देखते सब ग़र्क़ हो गए और यूं अल्लाह ने उनको बाग़ों चश्मों और आलीशान महलों से निकाला और फिर उन ज़ालिमों पर न आसमान रोया और न ज़मीन, और बनी इस्राईल को उन चीज़ों का मालिक बना दिया इसलिए कि वह सब्र करते थे।

मन व सलवा की नेमतें

समुंद्र से पार होकर यह लोग मिस्र के रेगिस्तानों में सफ़र कर रहे थे, अल्लाह तआला ने उन्हें धूप की तक्लीफ़ से बचाने के लिए

उन पर अब्र का साया कर दिया और उनके खाने के वास्ते मन व सलवा भेज दिए, उनको बारह क़बीलों में तक़सीम कर दिया और हर एक के लिए पानी का एक चश्मा मुक़र्रर कर दिया, मगर ज़ियादा देर तक वह इन चीज़ों पर सब्र न कर सके और गेहूं और साग, ककड़ियां, लहसन, मसूर और प्याज़ की ख़्वाहिश की, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने मजबूरन उन्हें शहर जाने की इजाज़त दे दी।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम तूर पर गए कि अल्लाह तआ़ला से तौरात हासिल करें उनकी ग़ैर हाज़िरी में उनकी क़ौम ने सोने चांदी का एक बछड़ा बना लिया और उसे पूजना शुरू कर दिया, हज़रत हारून अलैहिस्सलाम ने उन्हें बहुत समझाया मगर वह न माने आख़िर तंग आकर वह चुप हो गए कि कहीं इनमें ज़ियादा इख़्तिलाफ़ न हो जाए तूर से वापस आकर आप अलैहिस्सलाम ने उन लोगों को बताया कि तुमने बहुत बुरा किया सब ने अपने गुनाहों का इक़रार किया, और आईंदा के लिए तौबा की।

बनू इस्राईल की सरकशी

एक मर्तबा बनी इस्राईल ने हज़रत मूसा से कहा कि हम आपकी कोई बात न मानेंगे, जब तक हम अपनी आंखों से अल्लाह तआ़ला को न देख लें, इस काम के लिए उन्होंने अपनी क़ौम में से सत्तर आदमी चुन लिए और मुक़र्ररा जगह पर पहुंच गए, यहां बिजली की कड़क ने उनको आ लिया, और वह बेहोश होकर गिर पड़े, इस बाद अल्लाह ने उनको ज़िन्दा कर दिया कि फिर ऐसी बात ज़बान से न निकालें।

क़ौम की बुज़दिली और नाफ़रमानी

आपने क़ौम से फ़रमाया कि अल्लाह ने तुम में नबी पैदा किए

और तुम्हें आज़ाद किया, अब तुम हिम्मत करके मुल्क शाम पर हमला करो, अल्लाह तुम्हें ज़रूर कामियाब करेगा, और अगर बुज़दिली से काम लिया तो ज़रूर नुक़्सान उठाओगे मगर उन लोगों ने साफ़ इंकार कर दिया और कहा वहां के रहने वाले बड़े बहादुर और जवां मर्द हैं, और अगर वह अपने आप इस मुल्क को ख़ाली कर दें तो हम ज़रूर इस मुल्क पर क़ब्ज़ा कर लेंगे, वर्ना आप जानें और आपका ख़ुदा हम तो यहां से एक इंच आगे नहीं बढ़ेंगे।

आप उनका जवाब सुन कर बहुत नाराज़ हुए और दुआ की ऐ मेरे परवरदिगार मुझे और मेरे भाई को इन नाफ़रमानों से अलग कर दे, अल्लाह तआला की तरफ़ से इरशाद हुआ कि तुम इन बदबख़्तों में रंज न करो हम ने चालीस साल तक इनका दाख़िला मुल्क शाम में बन्द कर दिया है, यह जंगल ही में भटकते फिरेंगे।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात

एक दफ़ा आप अपने ख़ादिम के साथ सफ़र कर रहे थे कि चलते-चलते ऐसी जगह पहुंच गए जहां दो समुंद्र मिलते थे, वहां उनका ख़ादिम मछली भूल गया और दोनों आगे बढ़े चले गए, कुछ दूर जाकर उन्होंने अपने ख़ादिम से कहा मैं थक गया हूं खाना लाओ, उसने कहा जब चट्टान पर हम सफ़र कर रहे थे तो उस मछली ने दरिया का रास्ता लिया था, अस्ल में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को उसी जगह की तलाश थी, इसलिए फिर उसी जगह पर वापस चले आए, वहां उन्होंने अल्लाह के एक नेक बन्दे को देखा, और कहा कि अल्लाह ने जो कुछ आपको इल्म दिया है वह मुझे भी सिखा दीजिए, मगर उन्होंने जवाब दिया कि तुम सब्र

सब्र

न कर सकोगे, आखिर जब उन्होंने ज़ियादा इसरार किया तो कहा कि तुम मेरे साथ रहना चाहते हो तो शर्त यह है कि जब तक मैं खुद तुम से न कहूं मुझ से कोई बात न करना और न ही पूछना, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने यह शर्त मंज़ूर कर ली, और दोनों सफ़र पर रवाना हो गए।

दोनों एक किश्ती पर सवार हो गए तो उस अल्लाह के बन्दे ने किश्ती को तोड़ डाला, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम इस पर नाराज़ हुए और कहा तुमने ख्वाह-मख्वाह किश्ती तोड़ दी, इसमें सवार लोग डूब जाएंगे, उन्होंने शर्त याद दिलाई तो आपने कहा मैं भूल ग.., अब ऐसा नहीं होगा, आगे बढ़े तो खुश्की पर एक लड़का मिला जिसे उनहोंने क़त्ल कर डाला, इस पर मूसा बिगड़ गए और कहा बग़ैर किसी क़सूर के उसको मार डाला, आपने बहुत बुरा किया, इस पर उन्होंने कहा कि मैंने कहा था कि आप मेरे साथ न चल सकेंगे, फिर दोनों में क़ौल-व क़रार हुआ।

चलते-चलते एक गांव में पहुंचे जहां के लोगों ने उनको अपना मेहमान बनाने से इंकार कर दिया, मगर इन दोनों ने देखा कि एक दीवार गिरने वाली है उसको उन्होंने दुरुस्त कर दिया, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम फिर सब्र न कर सके और कहा कि अगर आप चाहते तो उनसे इस काम पर मज़दूरी मांग लेते, अल्लाह के बन्दे उनसे कहा कि अब हम दोनों एक साथ नहीं रह सकते मगर जुदा होने से पहले इन क़िस्सों का मतलब सुन लीजिए, किश्ती चंद ग़रीब आदमियों की थी जो उसे किराया पर चलाते थे, दरिया के उस तरफ़ का बादशाह ज़बरदस्ती किश्तीयां छीन लिया करता था, मैंने उसको तोड़ दिया कि ऐबदार होने की वजह से उसे कोई न लेगा।

रहा लड़का तो उसके मां-बाप ईमानदार थे मगर यह सरकश और काफ़िर था, डर था कि इसकी नाफ़रमानी और कुफ़्र से मां-बाप को तक्लीफ़ पहुंचे, मैंने क़त्ल कर दिया कि अल्लाह इन्हें मेहरबान और नेक बेटा अ़ता करे।

दीवार शहर के दो यतीम बच्चों की थी, जिसके नीचे उनकी दौलत दफ़न थी, उनका बाप नेक था, अगर दीवार गिर जाती तो दूसरे लोग उनकी दौलत पर क़ब्ज़ा कर लेते, अल्लाह तआ़ला की मर्ज़ी यह थी कि दोनों जवान होकर अपना ख़ज़ाना निकाल सकें।

यह जो कुछ हुआ तुम्हारे रब की रहमत का नतीजा है, मैंने अपनी तरफ़ से कुछ नहीं किया, यही वह बातें थीं जिन पर सब्र न कर सके, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम उसके बाद एक अर्सा तक बनू इस्राईल को हिदायत करते रहे, बुराईयों से रोकते रहे, अच्छाईयों की ताकीद करते रहे और आख़िरकार अपने अल्लाह पाक से जा मिले, जिसने उनको भेजा था।

बच्चो! जो क़ौम अल्लाह की नाफ़रमानी करती है तो उसको थोड़ा-थोड़ा अज़ाब देकर ख़बरदार किया जाता है, वह अगर फिर भी नाफ़रमानी करती रहती है तो उसको कुछ अर्सा के लिए बिल्कुल ढील दी जाती है ताकि वह बिल्कुल ग़फ़्लत में पड़ जाए, फिर एक दम अल्लाह का सख़्त अज़ाब आकर उसको बिल्कुल ख़त्म कर देता है, फ़िरऔन ख़ुद को ख़ुदा कहलवाता था, बनू इस्राईल पर ज़ुल्म करता था, अल्लाह तआला ने उसी के घर में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को पलवाया और फिर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ज़रीए से उसकी क़ौम को ख़त्म करा दिया।

दूसरा सबक़ हमको यह मिलता है कि जो क़ौम बहुत अर्सा तक किसी की ग़ुलाम रहती है उसकी रग-रग में ग़ुलामी बस जाती

है, ग़ैरत बहादुरी ख़त्म हो जाती है, और उसका जी चाहता है कि बार-बार वही ग़ुलामी की बातें करे जिस तरह बनू इस्राईल ने आज़ाद होने के बाद कीं।

तीसरा सबक़ हम को हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम के क़िस्से से यह मिलता है कि अल्लाह अपने नेक बन्दों की हिफ़ाज़त उनकी ज़िन्दगी में करता है, और उनके मरने के बाद उनकी औलाद की हिफ़ाज़त करता रहता है।

हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम

बच्चो! हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के इंतिक़ाल के बाद बनू इस्राईल की बहुत तरक़्क़ी हुई, इसके बाद आहिस्ता-आहिस्ता इनमें इख़्तिलाफ़ पैदा हो गए और अल्लाह तआ़ला के बताए हुए। सहीह रास्ता को भूलते गए, बनू इसराईल की हिदायत के लिए अल्लाह पाक ने और कितने नबी भेजे जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर नाज़िल की हुई किताब तौरेत की तालीम देते रहे और बनू इस्राईल को फिर सीधे रास्ते पर लगाते रहे, हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम भी उन्हीं पैग़म्बरों में से एक हैं जो बनू इस्राईल को तौरेत की तालीम देने के लिए तशरीफ़ लाए थे, हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम अल्लाह तआ़ला के बड़े साबिर पैग़म्बर गुज़रे हैं, आपका ज़िक्र भी कई जगह क़ुरआन मजीद में मिलता है, आप बड़े ही मालदार ख़ुशहाल थे और आपकी बहुत सी औलाद थी, आप अल्लाह तआ़ला की उन नेमतों पर हर वक़्त शुक्र अदा करते थे, हर तरफ़ ख़ुशी ही ख़ुशी थी, रंज व ग़म, फ़िक्र व अंदेशा का कहीं दूर-दूर तक नाम व निशान नहीं था।

कड़ी आज़माइश

आख़िर आपकी आज़माइश का वक़्त आ गया ताकि अल्लाह तआला के सच्चे बन्दों की निशानी रहती दुनिया तक क़ाइम रहे, और सब्र व शुक्र की मिसालें हमेशा ज़िन्दा रहें, अल्लाह तआला ने एक-एक करके अपनी नेमतें वापस लेना शुरु कर दीं, माल व दौलत, बाग़ात, सब्ज़ाज़ार, खेत, मकानात, जानवर, औलाद सबके सब रुख़्सत हो गए, और आख़िर में सेहत ने भी जवाब दे दिया, बदन में कीड़े पड़ गए, सारा बदन फट गया मगर आप इन सब मुसीबतों पर भी अल्लाह तआला का शुक्र ही अदा करते रहे, अल्लाह तआला ही की याद में लगे रहते, शिकवा शिकायत तक न करते नाशुक्री का ज़िक्र ही क्या।

आख़िर सब्र रंग लाया

सब्र की भी एक हद होती है, जब इसका पैमाना लबरेज़ हो गया तो उन्होंने अपने रब को पुकारा, और फ़रयाद की, मुझे शैतान ने रंज और तक्लीफ़ पहुंचा रखी है तू मेरे हाल पर रहम कर कि तू ही सबसे ज़ियादा रहम करने वाला है आख़िर अल्लाह तआला को उनके हाल पर रहम आया उसने हुक्म दिया कि तुम अपने पांव से ज़मीन पर ठोकर मारो, ठोकर मारी तो एक चश्मा निकला, इस पर अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि तुम्हारे नहाने और पीने के लिए ठंडा पानी मौजूद है, जब वह इस पानी से नहाए और इसको पिया तो उनकी तमाम बीमारियां दूर हो गईं और इसके साथ ही अल्लाह ने यह भी एहसान किया कि उनको फ़िर तमाम नेमतें और बरकतें भी दीं, और बीवी बच्चे भी इनायत किए।

बेशक हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम बड़े सब्र करने वाले थे,

क्या ही अच्छे बन्दे थे जो हर बात में अल्लाह ही की तरफ़ दौड़ते थे।

बच्चो! अल्लाह तआला हम सब को हर आज़माइश और हर इम्तिहान से बचाए लेकिन अगर कभी कोई मुसीबत आ जाए तो इसको अल्लाह तआला की तरफ़ से अपने बुरे कामों का एक इम्तिहान समझना चाहिए और अल्लाह के प्यारे नबी हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम की तरह सब्र करना चाहिए और इस हाल में अल्लाह तआला का ज़िक्र और उसकी तारीफ़ करनी चाहिए कि यह बड़े इंसानों और बड़े सच्चे बन्दों की निशानी है, अल्लाह पाक हम सब को सब्र व सबात और हर हाल में अपने मालिक हक़ीक़ी की तारीफ़ करते रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए आमीन।

हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम

बच्चो! क़ुरआन पाक में आपका ज़िक्र बार-बार आया है, सूर-ए-अंआम, सूर-ए-यूनुस, सूर-ए-साफ़्फ़ात और सूर-ए-अंबिया में आपका ज़िक्रे मुबारक मिलता है।

मुल्के इराक़ के शहर नैनवा में पैदा हुए थे जिस शहर की तरफ़ आपको नबी बना कर भेजा गया था उसकी आबादी एक लाख या इससे कुछ ज़ियादा थी आप भी लोगों को बुत प्रस्ती से मना फ़रमाते थे और एक अल्लाह की इबादत की तालीम देते रहे, बुराईयों से मना करते और अच्छाईयों की हिदायत करते इस बात से आपकी क़ौम आपकी दुश्मन हो गई, आख़िर क़ौम की बार-बार मुख़ालिफ़त से तंग आकर आपने फ़रमाया कि अब अल्लाह का अज़ाब तुम पर आकर रहेगा, और यह कहकर दरिया की तरफ़ चले गए, एक किश्ती जाने के लिए तैयार थी इस पर सवार होकर रवाना हो गए,

जब किश्ती बीच दरिया में पहुंची तो रुक गई, मल्लाह ने कहा इस किश्ती में कोई ग़ुलाम है जो अपने मालिक से भाग कर आया है, जब तक वह नहीं उतरेगा, किश्ती नहीं चलेगी, क़ुरआ डाला गया तो आपका नाम निकला लोगों ने ज़बरदस्ती आपको दरिया में फेंक दिया, अल्लाह का करना ऐसा हुआ कि एक मछली देर से मुंह खोले खड़ी थी, उसने आपको निगल लिया, लेकिन हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम बराबर अल्लाह की पाकी और बुज़ुर्गी बयान करते रहे, अगर आप अल्लाह की पाकी और बुज़ुर्गी बयान करने वाले न होते तो क़ियामत तक मछली के पेट में रहते, मगर अल्लाह तआ़ला बेहद मेहरबान और रहमत वाले हैं, वह हर तौबा करने वाले की तौबा क़बूल करते हैं, और हर पनाह चाहने वाले को पनाह बख़्शते हैं, हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम बग़ैर अल्लाह की मर्ज़ी के भाग आने पर शर्मिंदा थे, अल्लाह ने उनको मुआफ़ कर दिया, आजिज़ आकर अंधेर में पुकार उठे **लाइला-ह इल्ला अन-त सुब्हा-न-क इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन** ऐ अल्लाह तेरे सिवा कोई इबादत के क़ाबिल नहीं तू पाक है, मैंने अपने ऊपर ज़ुल्म किया।

अल्लाह तआ़ला ने उनकी दुआ क़बूल की और ग़म से नजात दी, मछली के पेट से निकाल कर मैदान में डाल दिया और इस पर एक बेलदार दरख़्त उगा दिया।

हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम की अपनी क़ौम से रवाना होने के बाद अल्लाह तआ़ला ने उन पर एक बड़ा सख़्त अज़ाब भेजा, लेकिन क़ौम ने देखा कि अज़ाब आ रहा है तो वह सब जंगलों में आकर अल्लाह से इस्तग़फ़ार करने और तौबा करने लगे, अल्लाह तआ़ला ने अज़ाब दूर कर दिया।

हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम अच्छे होकर दोबारा क़ौम के पास

आए तो वह उनके इंतिज़ार में थे, चूंकि उन्होंने अपनी आंखों से अज़ाब देख लिया था इसलिए सबके सब ईमान ले आए, और सदीयों तक अम्न व चैन से रहे, इस तरह अल्लाह का वादा पूरा हुआ। कि जो लोग ईमान लाएंगे उनको मैं ख़ूब रिज़्क़ दूंगा और बरकतें अता करुंगा, चूनांचे क़ौमे यूनुस अलैहिस्सलाम से तमाम अज़ाब और तक्लीफ़ दूर हो गईं जो हज़रत यूनुस की बद्दुआ और नाराज़गी की वजह से उन पर मुसल्लत हो गई थी।

बच्चो! हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम ने मछली के पेट में जो दुआ की यानी **लाइला-ह इंल्ला अन्-त सुब्हा-न-क इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन**, अब जब कोई मुसीबत या आफ़त नाज़िल होती है तो इसको पढ़ा जाता है अल्लाह पाक इसकी बरकत से आफ़ात को दूर कर देता है।

हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम

बच्चो! हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम भी बनी इस्राईल के बड़े नबी गुज़रे हैं, आपका ज़िक्र क़ुरआन पाक में कई जगह आया है, सूर-ए-सॉद में खुसूसीयत से निहायत तफ़सील से मिलता है, यह सूरह पारह 23 में है, आप पर आसमानी किताब ज़बूर नाज़िल हुई थी।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के इंतिक़ाल के काफ़ी अर्सा बाद बनी इस्राईल के सरदारों ने उस वक़्त के नबी से कहा कि हमको एक बादशाह की ज़रूरत है, जिसकी सरदारी में हम अल्लाह के दुश्मनों से जंग करें, अल्लाह के नबी इनकी हालत को ख़ूब जानते, पहले उन्होंने इंकार कर दिया कि यह लोग बुज़दिल हैं जंग वग़ैरह कुछ नहीं करेंगे, मगर जब क़ौम और सरदारों का इसरार बढ़ा, और

वह नहीं माने तो अल्लाह के नबी ने फ़रमाया, अल्लाह तआला ने तुम्हारे तालूत को बादशाह मुकर्रर किया है, तालूत एक ग़रीब आदमी थे, सरदार लोग अमीर लोग तालूत का नाम सुनते ही नाराज़ हो गए कि सरदारी और बादशाहत तो हमारा हक था, यह ग़रीब आदमी को कैसे मिल गया।

बच्चो! हज़रत तालूत बड़े आलिम, आबिद, जंग के माहिर और बड़े बहादुर ताक़तवर आदमी थे, इसलिए अल्लाह ने उनको बादशाह मुकर्रर किया था, अल्लाह के नज़दीक तो अमीर व ग़रीब सब बराबर है, उसके नज़दीक वही अच्छा है जो नेक हो।

लोगों की तसल्ली के लिए उस वक़्त के नबी ने यह भी फ़रमाया था कि हज़रत तालूत को बादशाह बनाने की एक निशानी यह भी है कि तीन संदूक़ में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और हज़रत हारून अलैहिस्सलाम की यादगार है उसे फ़रिश्ते उठा कर तुम्हारे पास ले आएंगे, चूनांचे फ़रिश्ते वह संदूक़ उनकी क़ौम के पास ले आए, आख़िर उन्होंने हज़रत तालूत को अपना बादशाह बना लिया।

आख़िर जब तालूत अपनी फ़ौज लेकर रवाना होने लगे, तो उन्होंने अपनी क़ौम की एक आज़माइश की कि अगर कोई मुसीबत आई तो यह लोग इसका मुक़ाबला करेंगे या भाग जाएंगे, उन्होंने कहा कि आगे चलकर पानी की एक नहर आएगी, जिसने इसका पानी पी लिया, उसको मुझ से कोई तअल्लुक़ न होगा, मेरा आदमी वह है जो इसमें से न पिए, ज़ियादा से ज़ियादा एक चुल्लु पीने की इजाज़त है, मगर जब नहर पर पहुंचे तो चंद लोगों के सिवा सबने ख़ूब पानी पी लिया, जब नहर के पार उतर गए तो कहने लगे हम अपने दुश्मन जालूत से लड़ने की ताक़त नहीं रखते मगर उनमें वह लोग जो ईमान वाले थे और जिन्होंने सिर्फ़ एक घूंट पानी पिया था

वह पुकार उठे कि अक्सर ऐसा होता है कि अल्लाह के हुक्म से थोड़ी सी जमाअत बड़ी जमाअत पर ग़ालिब आ जाती है, अल्लाह हमेशा सब्र करने वालों का साथ देता है, जब यह लोग जालूत के लश्कर के सामने आए तो दुआ की कि ऐ हमारे रब हमें अपने पास से सब्र अता कर कि मर मिटें मगर दुश्मन से डर कर पीछे न हटें, हमारे पांव जमाए रख और हमें फ़त्ह दे, फिर अल्लाह के हुक्म से उन्होंने दुश्मन को शिकस्त दी।

बच्चो! हज़रत तालूत के बाद हज़रत दाऊद को अल्लाह ने हुकूमत अता की, और हुकूमत भी ऐसी अता की कि इंसानों के साथ पहाड़ों और परिंदों को भी उनका फ़रमांबरदार कर दिया, उनको दानाई और मुक़द्दमों के फ़ैसले करने की लियाक़त बख़्शी, फिर भी वह अल्लाह की इबादत हर वक़्त करते रहे, अल्लाह ने उनको हुक्म दिया था कि पूरी-पूरी ज़रहें बनाएं, कड़ीयों के जोड़ने में मुनासिब अन्दाज़ का ख़्याल रखें, और अपनी ज़िन्दगी नेक कामों पर ख़र्च करें।

बच्चो! एक दफ़ा अल्लाह तआला ने इनका इम्तिहान लिया इस तरह कि दो आदमी दीवार फांद कर उनके मकान में घुस आए, जिसमें वह इबादत किया करते थे, आपने उन्हें देखा तो घबरा गए, उन्होंने कहा आप घबराएं नहीं, हम अपना झगड़ा ले कर आए हैं, मेरे इस भाई के पास निनान्वे दुंबिया हैं और मेरे पास सिर्फ़ एक है, अब यह एक दुंबी को भी लेना चाहता है, आप इंसाफ़ के साथ फ़ैसला करें।

आपने फ़रमाया कि जो तुम से दुंबी मांग रहा है, इसमें यह ज़ियादती पर है, और अक्सर शरीक एक दूसरे पर ज़ियादती करते हैं, अलबत्ता जो लोग अल्लाह पर ईमान रखते हैं और नेक काम

करते हैं वह इस ज़ियादती से बच जाते हैं मगर ऐसे शरीक बहुत कम होते हैं, जब यह लोग चले गए तो आपको ख़्याल गुज़रा कि अल्लाह ने यह मेरा इम्तिहान लिया है उन्होंने तौबा की, सज्दे में गिर पड़े और अल्लाह की तरफ़ तवज्जुह की, अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि ऐ दाऊद हमने तुम्हें इस ज़मीन का ख़लीफ़ा बनाया है, लोगों में इंसाफ़ करना और ख़्वाहिश पर न चलना वर्ना अल्लाह की राह से भटक जाओगे।

बच्चो! हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के क़िस्से में हमको यह सबक़ मिलते हैं।

(1) मुसलमानों के बादशाह के लिए अमीर होना ज़रूरी नहीं बल्कि उसको आलिम, ताक़तवर, बहादुर और लड़ाई के तरीक़े मालूम होने चाहिएं, जैसे हज़तर तालूत गो ग़रीब आदमी थे मगर यह सब ख़ूबियां उनमें मौजूद थीं, अल्लाह तआ़ला ने उनको बादशाह बनाया।

(2) दुश्मन से लड़ाई जीतने के लिए यह ज़रूरी नहीं कि तादाद ज़ियादा हो, मगर ज़रूरी यह है कि हमारा अल्लाह पर कामिल यक़ीन हो कि वह हमारी मदद करेगा, हम मौत से न डरें और अपने अमीर की इताअ़त करें।

हमारे पास कितनी ही दौलत आ जाए, यहां तक कि चरिंद-परिंद, पहाड़ लोहा सब हमारे ताबेअ़ हो जाए मगर हमें अल्लाह को नहीं भूलना चाहिए, दिलकी ख़्वाहिश पर न चलना चाहिए, सबके साथ इंसाफ़ करना चाहिए।

हज़रत लुक़्मान अलैहिस्सलाम

बच्चो! हज़रत लुक़्मान अलैहिस्सलाम का नाम आपने सुना

होगा, अल्लाह तआ़ला ने इनको ऐसी हिकमत अ़ता की थी कि उनका नाम आज तक ज़िन्दा है और क़ुरआन पाक में भी एक सूरत का नाम लुक़मान है, अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआन शरीफ़ में इरशाद फ़रमाया है कि:-

हमने लुक़मान को अक़्लमन्दी दी और कहा कि हक़ तआ़ला का हक़ मान, अगर तू अल्लाह का हक़ मानेगा तो यह तेरी ही भले के लिए होगा।

हज़रत लुक़मान ने अपने बेटे को चन्द नसीहतें कीं, जिनका इस सूरत में ज़िक्र है, इन नसीहतों का मतलब यह है:

1:-ऐ बेटे अल्लाह तआ़ला का शरीक किसी को न बनाना कि बड़ी नाइंसाफ़ी है।

2:-मां-बाप का कहना मानना कि तेरी मां ने तुझको पेट में रखा और इसके लिए कितनी तक्लीफ़ें उठाईं, फिर दो बरस तक दूध पिलाया, हां अगर तुम्हारे मां-बाप यह कहें कि अल्लाह का किसी को शरीक बनाओ, तो फिर उनका कहना न मानना, लेकिन उनकी ख़िदमत फ़िर भी करते रहना।

3:-ऐ मेरे बेटे अगर कोई चीज़ राई के दाने के बराबर होगी और वह किसी पत्थर में हो या आसमान व ज़मीन में कहीं भी होगी, अल्लाह उसको क़ियामत के रोज़ हाज़िर कर देगा।

4:-ऐ मेरे बेटे नमाज़ पढ़ा कर, और भली बात सिखा और बुराई से मना कर और जो तुझ पर मुसीबत पड़े उस पर सब्र कर बेशक यह हिम्मत के काम हैं।

5:-और अपने गाल न फुला लोगों की तरफ़, और मत चल ज़मीन पर अकड़ता, यानी ग़ुरूर न कर, अल्लाह को इतराने वाले और ग़ुरूर करने वाले पसंद नहीं।

6:-और चल मसीह की चाल, और नीची कर अपनी आवाज़, बेशक बुरी आवाज़ गधों की सी है।

बच्चो! हज़रत लुक़्मान ने अपने बेटे को जो नसीहतें कीं वह हम सबके लिए भी हैं कि अल्लाह का शरीक किसी को न करें, इसका मतलब यह है कि हम यक़ीन कर लें कि हर काम का करने वाला अल्लाह ही है।

मां बाप का कहना मानें।

अगर हम ज़र्रा बराबर भी नेकी या बुराई करेंगे तो अल्लाह तआला उसको क़ियामत के रोज़ हाज़िर कर देगा, इसलिए हमको नेकीयां ज़ियादा से ज़ियादा करनी चाहिए, और बुराईयों से बचना चाहिए ताकि क़ियामत के रोज़ हमारा नेकीयों का पल्ला भारी रहे, नमाज़ पढ़ा करें और लोगों को नेक बात सिखाया करें और बुरी बात से मना करें, और नेक बात समझाने और बुरी बात को रोकने में हमको कुछ तक्लीफ़ बर्दाश्त करनी पड़े तो इस पर सब्र करें, कि यह बड़ी हिम्मत का काम है।

ग़ुरूर न किया करें कि यह अल्लाह को बहुत नापसंद है।

ऊंची आवाज़ से न बोला करें कि गधे की आवाज़ के मुशाबा है।

बच्चो! इन सब बातों को अपने दिल में बिठा लो।

हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम

बच्चो! हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के बेटे थे, जिनका क़िस्सा तुम पहले सुन चुके हो, क़ुरआन पाक में आपका ज़िक्र सूर-ए-बक़रा, सूरह अंआम, सूर-ए-अंबिया, सूर-ए-नम्ल, सूरह सबा और सूरह साद में आया है।

अल्लाह तआला ने आपको भी नूबूवत और बादशाहत दोनों

अ़ता की थीं, इंसानों के एलावा जिन्न, हवा और जानवर भी आपके ताबेअ़ कर दिए थे, आप उन सबकी बोलियां भी समझते थे और बोलते थे आपके ज़माना में बनी इस्राईल को बहुत बड़ाई हासिल हुई, जो इससे पहले कभी न हुई थी, ह़ज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम भी बावुजूद इतनी ताक़त और सलतनत के अल्लाह की याद में मशग़ूल रहते थे, उनको दुनिया की बड़ी से बड़ी चीज़ भी अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल नहीं कर सकती थी, एक दफ़ा का ज़िक्र है कि आप आला दर्जा के घोड़ों को देख रहे थे, उनके देखते-देखते अस्र की नमाज़ को देर हो गई, आपने उनको फिर बुलाया और उनकी पिंडलियां और गर्दनें काट डालीं, ताकि जिनकी मुहब्बत ने अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल कर दिया इनको ख़त्म कर दिया जाए।

एक दफ़ा का ज़िक्र है आप अपनी फ़ौजों के साथ तशरीफ़ ले जा रहे थे, चलते-चलते च्यूंटियों की वादी में पहुंचे, एक च्यूंटी ने कहा अपने-अपने घरों में घुस जाओ, ऐसा न हो कि सुलैमान और उसका लश्कर तुम्हें तबाह कर दे, और उन्हें इसकी ख़बर भी न हो, आप च्यूंटी की बात सुनकर मुस्कुराए और कहा कि ऐ अल्लाह मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरी नेमतों का शुक्र अदा करुं, जो तूने मुझे और मेरे मां-बाप को दी हैं, और ऐसे नेक काम करुं जिनसे तू ख़ूश हो और अपनी मेहरबानी से मेरे मरने के बाद मुझे अपने नेक बन्दों में दाख़िल कर।

बच्चो! एक दफ़ा का ज़िक्र है कि आपने परिंदों की हाज़िरी ली, तो इसमें हुद-हुद नज़र नहीं आया, आपने फ़रमाया कि इसकी ग़ैर हाज़िरी पर हम उसको सख़्त सज़ा देंगे, या ज़िब्ह कर देंगे, वर्ना इस ग़ैर हाज़िरी की वजह बयान करे। थौड़ी देर बाद हुदहुद आ गया,

उसने अर्ज़ किया कि सबा के शहर से बिल्कुल सहीह ख़बर लेकर आया हूं।

मैंने एक औरत देखी है जो वहां हुकूमत करती है। उसके पास हर तरह का सामान है, उसका बहुत बड़ा तख़्त है मलिका और उसकी क़ौम के लोग सूरज को सज्दा करते हैं और शैतान ने उनको सीधे रास्ता से रोक दिया है।

हुदहुद ने बयान ख़त्म किया तो आपने उस मलिका के नाम यह ख़त दिया।

"अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं जो बहुत बड़ा मेहरबान निहायत रहम करने वाला है। हम से सरकशी न करो, और फ़रमांबरदार हो कर हमारे दरबार में हाज़िर हो।

और फ़रमाया कि इसे सबा की मलिका के पास ले जाओ फिर देखो वहां से क्या जवाब मिलता है।

सबा की मलिका ने जिसका नाम बिल्क़ीस था, यह ख़त अपने दरबारियों को पढ़ कर सुनाया, और उनसे पूछा कि तुम इसकी बाबत क्या कहते हो। सबने यक ज़बान होकर कहा कि हम बड़े ताक़त वाले और बड़े लड़ने वाले हैं, वैसे आपको अख़्तियार है जो हुक्म दें, मलिका ने कहा "बादशाह जब किसी शहर में दाख़िल होते हैं तो उसे तबाह व बर्बाद कर देते हैं, और ऐसा ही यह भी करेंगे, मैं उनके पास कुछ तुहफ़े भेजकर देखती हूं कि मेरे एलची क्या जवाब लाते हैं, जब ऐलची तुहफ़े लेकर आए तो हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, तुम्हारे तुहफ़े तुम ही को मुबारक हों तुम इन्हें वापस ले जाओ।

जब ऐलची ने वापस जाकर बिल्क़ीस से हज़रत सुलैमान

अलैहिस्सलाम की बातें कहीं तो वह दरबार में हाज़िर होने की तैयारियां करने लगी, ऐलची के वापस जाने के बाद हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने अपने दबार वालों को हुक्म दिया कि मलिका के तख़्त को हमारे पास लाकर हाज़िर करो, एक बड़ा देव बोला कि मैं इससे पहले कि आप दरबार से जाएं, आपकी ख़िदमत में पेश कर दूंगा मगर एक शख़्स और कि जिसको अल्लाह ने किताब का इल्म दिया था, उसने कहा कि मैं आपकी आंख झपकने से पहले तख़्त ले आऊंगा, चूनांचे आपकी ख़िदमत में पेश किया गया, तो आपने फ़रमाया कि मेरे अल्लाह का इम्तिहान है कि मैं इसका शुक्र अदा करता हूं या नहीं।

बहरहाल तख़्त की सूरत बदल कर बिछा दिया गया, और बिल्क़ीस आ गई, तो उससे पूछा कि तुम्हारा तख़्त भी ऐसा ही है, बिल्क़ीस ने जवाब दिया यह तो बिल्कुल वैसा ही है और हम तो पहले ही आपकी शान व शौकत और क़ुव्वत व ताक़त को जानते थे, और आपको मान गए थे, जिस चीज़ को यह अल्लाह के सिवा पूजती थी, उसने उसको अब तक सुलैमान के पास आने से रोक रखा था।

फिर बिल्क़ीस से महल में जाने को कहा गया, जब उसने हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम का महल देखा जो शीशे का बना हुआ था, और मालूम होता था कि पानी से भरा हुआ है, बिल्क़ीस ने इसमें से गुज़रने के लिए अपने पाएचें ऊपर उठा लिए, और अपनी दोनों पिंडलियां खोल दीं; हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने देखा तो फ़रमाया यह महल है जिसमें शीशे जड़े हुए हैं।

ग़रज़ जब बिल्क़ीस को अपने मज़हब की ग़लती मालूम हुई तो

पुकार उठी, ऐ अल्लाह मैंने जो इतनी मुद्दत तक सूरज की पूजा की, और मेरी वजह से मेरी क़ौम भी इसको पूजती रही तो मैंने अपने ऊपर ज़ुल्म किया। अब मैं सुलैमान के साथ तमाम जहानों के पालने वाले पर ईमान लाती हूं।

बच्चो! हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम इतने बड़े नबी और इतने बड़े बादशाह थे कि इंसान, जिन्न, परिंदे और हवा सब उनके ताबेअ़ थे, मगर आप ग़रीबों और बेकसों के साथ बैठकर खाना खाते थे और अपने हाथ से चटाइयां और टोकरियां बनाकर रोज़ी कमाते थे, हर वक़्त यादे इलाही में मशग़ूल रहते, रातों को बहुत कम सोते, दिन में अल्लाह की मख़लूक़ की ख़िदमत करते, बस यही उनकी ज़िन्दगी थी।

इबादते इलाही और ख़िदमते ख़ल्क़

हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम

बच्चो! हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम भी बनी इस्राईल की हिदायत के लिए भेजे गए, आपके ज़माना में बनी इस्राईल की हालत बहुत ख़राब थी मगर फिर भी उनमें नेक लोग भी थे, और ऐसी औरतें भी थीं जो औलाद को दीन के लिए वक़्फ़ कर दी थीं और उनसे दुनिया का काम न लिया जाता था।

हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से दुआ की और कहा कि ऐ अल्लाह मेरी हड्डियां कमज़ोर हो गई हैं, सर बुढ़ापे से सफ़ेद हो गया है मैं तुझ से दुआ करके कभी ना काम ही रहा, मेरी बीवी बांझ है, और मुझे अपने भाई बंदों से डर है, पस तू मुझे नेक वारिस अता कर, जो मेरा और याक़ूब की औलाद का वारिस हो इसको हर दिल अज़ीज़ और मुझे अकेला न छोड़।

एक रोज़ हज़रत ज़करिया नमाज़ पढ़ रहे थे तो फ़रिश्तों ने उनहें आवाज़ दी कि अल्लाह तुम्हें यहया के पैदा होने की खुशख़बरी देता है, यह अल्लाह के हुक्म की तस्दीक़ करेगा, लोगों का पेशवा पाक दामन और नेक बख़्त नबी होगा, आपने यह खुशख़बरी सुनी तो तअ़ज्जुब से कहने लगे कि इस उम्र में मेरे लड़का कैसे पैदा होगा, जब कि मैं बूढ़ा हूं, और मेरी बीवी बांझ है, जवाब मिला हमारे लिए तमाम बातें आसान हैं।

हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया कि मेरे इतमिनान के लिए कोई निशानी मुक़र्रर कर दीजिए, हुक्म हुआ कि तुम लोगों से तीन दिन तक इशारे के सिवा बातें न करोगे, अल्लाह को ख़ूब याद करो, उसकी बुज़ुर्गी सुब्ह व शान बयान करो, आप अपने हुजरे से निकल कर लोगों के पास आए और उन्हें हुक्म दिया कि सुब्ह व शाम अल्लाह की पाकी बयान करते रहें, अल्लाह तआ़ला ने उनकी बीवी को अच्छा कर दिया और यहया अलैहिस्सलाम पैदा हो गए।

हज़रत यहया अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआ़ला का हुक्म था कि वह तौरत पर ख़ूब अच्छी तरह अ़मल करें, अभी हज़रत यहया बच्चे ही थे कि अल्लाह तआ़ला ने उनको दानाई बख़्शी, रहम दिली और पाकीज़गी अ़ता की वह परहेज़गार थे और अपने मां-बाप के साथ भलाई करते थे, वह सरकशर और नाफ़रमान न थे।

बच्चो! हज़रत यहया अलैहिस्सलाम के मुतअ़ल्लिक़ अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआन पाक में फ़रमाया है, इसका मतलब यह है कि:-

"जिस" दिन वह पैदा हुए और जिस दिन मरे और जिस रोज़ ज़िन्दा होकर उठाए जाएंगे, उन पर अल्लाह की सलामती और अमान हो, यह लोग नेक कामों में जल्दी करते थे, उम्मीद और डर से अल्लाह को पुकारते थे और उसी के आगे आजिज़ी करते थे।

हज़रत मरयम अलैहिस्सलाम

बच्चो! क़ुरआन पाक में हज़रत मरयम अलैहिस्सलाम का ज़िक्र कई जगह आया है, खुसूसन सूर-ए-मरयम में इसका ज़िक्र ज़ियादा है, आपके पैदा होने से पहले आपकी वालिदा ने अल्लाह से मन्नत मानी कि मेरे हां औलाद होगी तो इससे दुनिया का कोई काम न लूंगी और इसे अल्लाह तआला की नज़्र करुंगी ताकि तमाम उम्र इबादते इलाही करता रहे, मगर जब लड़के की जगह हज़रत मरयम पैदा हुईं तो आपकी वालिदा को बहुत रंज हुआ कि अब मैं अपनी मन्नत कैसे पूरी करुं, मेरे हां तो लड़की हुई है, मगर अल्लाह तआला ने उन्हें क़बूल किया, आपकी वालिदा ने कहा कि मैं इनका नाम मरयम रखती हूं और इसको और इसकी औलाद को शैतान मर्दूद से अल्लाह की पनाह में देती हूं, उनको हज़रत ज़करिया की निगरानी मेंदे दिया गया, यह हर वक़्त मस्जिद की मेहराब में बैठी इबादत करती रहीं, अल्लाह तआला उनको बेमौसम के फल खाने को देता, हज़रत ज़करिया जब भी उनके पास जाते और उनके पास यह चीज़ें देखते तो उनको बहुत तअज्जुब होता और हज़रत मरयम से पूछते कि यह चीज़ें तुम्हारे पास कहां से आईं, हज़रत मरयम जवाब देतीं कि यह सब अल्लाह तआला की तरफ़ से है वह जिसे चाहता है बे-हिसाब रिज़्क़ देता है।

एक रोज़ का ज़िक्र है कि वह अपने लोगों से पर्दा करके अलग पूरब रुख़ एक जगह जा बैठीं, अल्लाह पाक ने जिबरील अलैहिस्सलाम को उनके पास भेजा, वह उनके पास कामिल इंसान की शक्ल में आए, हज़रत मरयम अलैहिमुस्सलाम ने ग़ैर आदमी को अपने पास देखा तो पुकार उठीं, अगर तुम नेक आदमी हो तो मैं तुम से

अल्लाह की पनाह मांगती हूं, फ़रिश्ते ने कहा कि मैं तुम्हारे रब की तरफ़ से भेजा गया हूं कि तुम्हें पाक लड़का दूं, इसका नाम मसीह होगा, वह दुनिया और आख़िरत में मुअज़्ज़िज़ और अल्लाह के नेक मुक़र्रब बन्दों में से होगा। झूले में, और बड़ा होकर लोगों से बातें करेगा और नेक बच्चों में से होगा, हज़रत मरयम ने कहा: मेरे हां लड़का कैसे हो सकता है, मुझे किसी आदमी ने छुवा तक नहीं, और मैं बदकार भी नहीं हूं, अल्लाह की तरफ़ से जवाब मिला कि ऐसा होकर रहेगा, हम इसको लोगों के लिए एक निशानी बनाएंगे और अपनी रहमत का ज़रीया क़रार देंगे इसको किताबे अक़्ल और दानाई, तौरात और इंजील की तालीम देंगे और इसे बनी इस्राईल की तरफ़ रसूल बना कर भेजेंगे, इसके बाद जिबरील ने इनके गिरेबान में फूंक मार दी जिससे हज़रत मरयम को हमल हो गया, वह दूर एक मकान में चली गई, उन्हें दर्द हुआ, और वह इस दर्द की वजह से खजूर की एक दरख़्त के नीचे चली गईं, उन्हें आवाज़ आई कि तू ग़म न कर रब ने तेरे पास पानी का चश्मा बहा दिया है, और खजूर की जड़ पकड़ कर अपनी तरफ़ हिला तुझ पर पक्की-पक्की खजूरें गिर पड़ेंगी, तू खजूरें खा और चश्मे का पानी पी, बेटे को देखकर अपनी आंखें ठंडी कर, फिर अगर किसी आदमी को एतराज़ करता देखे तो कह देना कि मैंने रब के लिए रोज़े की मन्नत मानी है, इसलिए मैं किसी से बात न करुंगी।

हज़रत मरयम अपने बच्चे को लेकर क़ौम के पास आईं तो उन्होंने देखकर कहा कि तूने बहुत बुरा काम किया, तेरा बाप और तेरी मां दोनों में से कोई भी बदचलन न था, आपने बच्चे की तरफ़ इशारा किया, मगर उन लोगों ने कहा कि हम इस गोद के बच्चे से किस तरह बात करें।

बच्चा बोल उठा! मैं अल्लाह का बन्दा हूं, उसने मुझे किताब दी है, नबी बनाया है, जहां कहीं रहूं, मुझे बरकत वाला किया है, जब तक ज़िन्दा रहूं मुझे नमाज़ और रोज़े का हुक्म दिया है अपनी मां के साथ भलाई करने वाला बनाया है, सरकश और बदबख़्त पैदा नहीं किया।

मुझ पर अल्लाह की अमान हो, जिस रोज़ पैदा हुआ, जिस रोज़ मरुं और जिस रोज़ ज़िन्दा उठाया जाऊं।

बच्चो! अल्लाह पाक क़ुरआन मजीद में फ़रमाते हैं कि यह थे ईसा मरयम के बेटे, जिसमें झगड़ते हैं अल्लाह ऐसा नहीं कि औलाद रखे, वह पाक ज़ात है जब कोई काम करना चाहता है तो यही कहता है इसको कि "हो जा" वह हो जाता है।

बच्चो! ईसाई कहते हैं कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ख़ुदा के बेटे थे, अल्लाह तआला ने इसको इफ़तरा क़रार दिया, और जो ठीक बात थी वह बता दी।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम

बच्चो! हज़रत मरयम के बयान में आपको बताया जा चुका है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की पैदाइश किस तरह अल्लाह के हुक्म से हुई और अल्लाह तआला ने आपको बचपन में बोलना सिखा दिया, आपने लोगों से बातें कीं, यह आपका मुजज़ा था, अल्लाह पाक ने आपको नबी बनाकर बनी इस्राईल की तरफ़ भेजा जिन में तौरेत की तालीम के मुतअ़ल्लिक़ बहुत इख़्तिलाफ़ हो चुका था और वह तौरेत की तालीम के ख़िलाफ़ अ़मल करते थे, अल्लाह पाक ने आपको इंजील मुक़द्दस दी आप इसकी तालीम लोगों को सिखाते रहे, अल्लाह तआला ने आपको बड़े-बड़े मुजज़े अ़ता किए

ताकि लोग उनको देखकर ईमान ले आएं।

आपने फ़रमाया कि मैं तुम्हारे लिए मिट्टी से परिंद की शक्ल बनाता हूं, मुर्दे को ज़िन्दा करता हूं, जो कुछ तुम खाते हो और जो कुछ तुम अपने घरों में जमा रखते हो तुम्हें बता देता हूं, मैं तौरात की तस्दीक़ करता हूं, बाज़ चीज़ें तुम पर हराम कर दी गई थीं उन्हें तुम्हारे लिए हलाल करता हूं, मैं तुम्हारे पास रब की निशानियां लेकर आया हूं, तुम्हें एक रसूल की ख़ुशख़बरी देता हूं जो मेरे बाद आएगा, उनका नाम **अहमद** होगा।

अब तुम अल्लाह से डरो, मेरी बात मान लो, और अल्लाह तआ़ला की बंदगी करो।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर जो लोग उनकी ज़िन्दगी में ईमान लाए उन्हें हवारी कहते हैं, उन्होंने आपसे दरख़्वास्त की कि अल्लाह हम पर आमान से ख़्वान उतारे, आपने फ़रमाया ऐसे सवालात मत करो, मगर उन्होंने जवाब दिया कि हम अपने दिल का इतमिनान चाहते हैं, और आपकी सच्चाई पर हमेशा गवाह रहेंगे, जब उन लोगों का इसरार बढ़ गया तो आपने यूं दुआ की।

ऐ मेरे रब, हम पर आसमान से ख़्वान उतार जो हमारे अगलों और पिछलों के लिए ईद हो, और तेरी एक निशानी, अल्लाह ने जवाब दिया कि मैं इसको तुम पर उतारुंगा, लेकिन अगर इसके बाद तुम में से किसी ने नाशुक्री की तो मैं इसको बहुत सख़्त सज़ा दूंगा।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम बनी इस्राईल को नसीहत करते रहे, लोगों ने एक न मानी और आपको मारने की तदबीरें शुरु कर दीं, उस वक़्त अल्लाह तआ़ला ने ईसा अलैहिस्सलाम से फ़रमाया मैं पहले तुझे अपनी तरफ़ बलंद करुंगा, फिर वफ़ात दूंगा, और जिन लोगों ने तेरा इंकार किया है, उनसे तुझको पाक करने वाला हूं, जो

लोग तेरी बात मान लेंगे उन्हें इंकार करने वालों पर क़ियामत तक ग़ालिब रखूंगा।

दुश्मनों के जवाब में अल्लाह तआ़ला की तदबीर यह थी कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और उनकी वालिदा हज़रत मरयम अलैहस्सलाम को एक ऊंची जगह दे जो रहने के क़ाबिल थी।

वह यहूदी बड़े बे-हया थे जिन्होंने हज़रत मरयम अलैहस्सलाम जैसी पाक दामन औ़रत पर इल्ज़ाम लगाया, और फिर यह कहा कि हमने अल्लाह के रसूल ईसा बिन मरयम को क़त्ल किया है, अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया इनको न किसी ने क़त्ल किया और न सूली पर चढ़ाया, बल्कि अल्लाह तआ़ला ने उनको अपनी तरफ़ उठा लिया।

बच्चो! हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तमाम उम्र अपनी क़ौम से भी यही कहते रहे कि मैं अल्लाह का बन्दा हूं, और इबादत के लाइक़ सिर्फ़ एक अल्लाह है, लेकिन उनके दुनिया से तशरीफ़ ले जाने के बाद उनकी क़ौम यानी ईसाई गुमराह हो गए, और कहने लगे कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अल्लाह तआ़ला के बेटे हैं, और यूं कहने लगे कि ख़ुदा तीन हैं।

(1) एक अल्लाह तआ़ला (2) एक हज़रत जिबरील (3) एक ईसा मसीह

यहूदी और ईसाई दोनों ने अपनी नबी को ख़ुदा बना लिया, या उनको ख़ुदा का मर्तबा दे दिया, कहीं मुसलमान भी अपने नबी को ख़ुदा न बना लें इसलिए कलिमा दोम में मुसलमान को सिखा दिया गया।

अश-हदु अंल्लाइला-ह इल्लल्लाहु व अशहदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहु व रसूलुहू

यानी गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के

लाइक़ नहीं, और गवाही देता हूं कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं।

अस्हाबे कहफ़

बच्चो! अस्हाबे कहफ़ के मअ़ना ग़ार वाले के हैं, यह चंद सच्चे मुमिन नौजवान बच्चों का क़िस्सा है, जिसको क़ुरआन पाक में सूर-ए-कहफ़ में बयान किया गया है।

आ़ज से सैकड़ों बरस पहले किसी मुल्क में एक मुश्रिक और ज़ालिम बादशाह था, वह खुद भी अल्लाह को छोड़ कर बुतों की पूजा करता था और दूसरों को भी बुतों की पूजा का हुक्म देता था, जो ऐसा नहीं करता उसको सख़्त सज़ाएं देता, उनकी सलतनत में कुछ नौंजवान बच्चे जिनकी तादाद तक़रीबन सात थी, अल्लाह ने उनको सीधा रास्ता दिखाया, यह अल्लाह को मानते और बुतों को पूजने को बुरा समझते थे, उनके मां-बाप ने उनको बहुत समझाया कि बादशाह को अगर ख़बर हो गंई तो क़त्ल करा देगा, लेकिन उन बच्चों के दिल में अल्लाह की मुहब्बत घर कर गई थी, मां-बाप की भी न सुनी, और अल्लाह की तारीफ़ एलानिया करने लगे, आख़िर एक दिन बादशाह को ख़बर पहुंच गई, लड़के डर की वजह से एक पहाड़ की ग़ार में जाकर छुप गए, उनके साथ उनका कुत्ता भी था वह भी साथ चला गया।

बच्चो! जब कोई शख़्स अल्लाह का हो जाता है तो अल्लाह भी उसकी मदद करता है, जब यह ग़ार में पहुंचे तो अल्लाह तआ़ला ने उनको सुला दिया, और कुत्ता ग़ार के मुंह पर बैठ गया, उसको भी अल्लाह तआ़ला ने सुला दिया, अल्लाह तआ़ला ने अपनी निशानी और लोगों को अपनी क़ुदरत दिखाने के लिए तीन सौ नौ

साल तक सुलाए रखा, इस अर्सा में पता नहीं कितने बादशाह ख़त्म हो गए, ज़माना बदल गया, लोग बदल गए तीन सौ नौ साल बाद अल्लाह तआ़ला ने उनको थोड़ी देर के लिए जगाया, उनको ऐसा मालूम हुआ कि वह अभी सोए थे, उन्होंने देखा कि सब चीज़ें उसी तरह मौजूद हैं जिस तरह वह सोए थे, कुत्ता भी उसी तरह ग़ार के मुंह पर बैठा था, उनको भूक मालूम हुई तो उन्होंने अपने चंद साथियों को सिक्के दिए कि छुप छिपाकर किसी तरह बाज़ार जाकर कुछ खाना ले आएं, जब यह साथी बाज़ार गए तो वहां की हर चीज़ बदली हुई नज़र आई, दुकान पर पहुंचे, खाना ख़रीदा, जब वह सिक्का दिया तो लोगों को बहुत तअज्जुब हुआ कि यह सिक्का फ़ुलां बादशाह के वक़्त का है, जिसको मरे हुए कई सौ बरस हो गए, लोगों को शक गुज़रा कि कहीं कोई ख़ज़ाना तो इनको हाथ नहीं लगा, और आहिस्ता-आहिस्ता यह बात उस वक़्त के बादशाह को पहुंच गई, यह बादशाह बहुत ईमानदार था, और अल्लाह को और रोज़े क़ियामत को मानता था, उसने उन लड़कों को अपने दरबार में बुलाया, और सारा क़िस्सा सुना, बादशाह को और हाज़िरीन को बहुत तअज्जुब हुआ, बादशाह मअ़ दरबारियों के उस ग़ार तक आए, उन्होंने उन लड़कों को सोता हुआ देखा, उनकी आंखें खुली हुई थीं मगर जिस्म सो रहे थे, बादशाह और उनके दरबारियों पर एक वहशत तारी हो गई और वापस चले आए, यह लड़के जो खाना लेने आए थे ग़ार में दाख़िल होते ही अपने साथियों के साथ मिलकर सो गए।

बादशाह और उनके दरबारियों को और यक़ीन हो गया कि अल्लाह तआ़ला बड़ी ताक़त और क़ुदरत वाला है, मरने के बाद वह इसी तरह ज़िन्दा करेगा, जिस तरह इन ग़ार वालों को किया है, यह

लोग उसी ग़ार में क़ियामत तक सोते रहेंगे।

बच्चो! अल्लाह तआला ने इस वाक़िआ से हमको बताया कि वह अपने मानने वालों की हिफ़ाज़त करता है, ज़ालिमों से नजात की ऐसी सूरतें पैदा कर देता है, जो किसी इंसान के वहम वं गुमान में भी नहीं आ सकतीं। हम को यह भी सबक़ मिलता है कि जिस शख़्स में अल्लाह तआला की मुहब्बत पैदा हो जाती है वह किसी बड़े से बड़े बादशाह से भी नहीं डरता।

बच्चो! आओ हम सब भी अल्लाह से मुहब्बत करें और यक़ीन पैदा करें कि हर काम उसी से होता है और जो कुछ हम दुनिया में अच्छा या बुरा काम करेंगे, क़ियामत के रोज़ हमको इसका बदला मिलेगा।

हबीबे ख़ुदा, सरदारे अंबिया, ख़ातिमुन्नबीयीन हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से लेकर

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश तक के हालात

बच्चो! हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का ज़िक्र पहले सुन चुके हो उन्होंने भी अपनी क़ौम से कहा था कि मेरे बाद एक नबी आएगा उनका नाम अहमद होगा, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को जब अल्लाह ने आसमान पर ज़िन्दा उठा लिया तो उसके बाद डेढ़ सौ साल तक ईसाई इधर उधर भटकते रहे और आपस में लड़ते रहे, उनके आलिमों ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की तालीमात को इक्ट्ठा किया, उसका नाम इंजील मुक़द्दस है, यह तादाद में हज़ार पहुंच

चुकी थीं, इस वजह से ईसाईयों में बड़ा झगड़ा हुआ कि कौन सी इंजील सहीह है, आख़िर सब ने इत्तेफ़ाक़ करके सब किताबें जला दीं, सिर्फ़, चार बाक़ी रहने दीं, इनका नाम यह है

(1) मती (2) यूहन्ना (3) लूक़ा (4) मरक़स

यह चारों उनके जमा करने वालों के नाम से महशूर हैं, मगर यह बात आज तक तय न हो सकी कि इसमें कौन सी किताब अस्ल इंजील मुक़द्दस है।

ग़रज़ हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बाद जब हर तरफ़ कुफ़्र व शिर्क और जहालत फेल गई, लोग फिर बुत प्रस्ती में मुबतला हो गए, आदमी, आदमी का दुश्मन हो गया, शराब, ज़ुवा, क़त्ल, लूट मार, बदअमनी हर तरफ़ फैल गई शैतान के मानने वाले दुनिया में फैल गए, और अल्लाह तआला को भूल गए, अल्लाह तआला को फिर अपनी मख़लूक़ पर रहम आया, वह बड़ा रहमान और रहीम है और उसने इस दुनिया की हिदायत के लिए, और लोगों को शैतान के पंजे से निकाल कर अल्लाह का सीधा रास्ता बताने के लिए अपने प्यारे हबीब अहमदे मुजतबा, मुहम्मद मुस्तफ़ा रहमतुल लिल आलमीन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मक्का मुअज़्ज़मा में पैदा फ़रमाया।

अज़ विलादत ता नुबूवत

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम 12 रबीउल अव्वल को मक्का मुअज़्ज़मा में पैदा हुए आपकी वालिदा का नाम आमना और आपके वालिद माजिद का नाम अब्दुल्लाह था, जो आप की पैदाइश से दो माह क़ब्ल ही फ़ौत हो चुके थे, आपके दादा अब्दुल मुत्तलिब थे, उन्होंने आपकी सरप्रस्ती फ़रमाई, उस ज़माना में अरब में दस्तूर था कि शरीफ़ घरानों के बच्चे देहातों में परवरिश पाते थे, हमारे नबी

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी एक ख़ातून हलीमा परवरिश के लिए ले गईं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम छः साल तक दाई हलीमा के पास रहे, आप साल भर में दो मर्तबा वालिदा से मिलने आते, इसके बाद वालिदा ने अपने पास बुला लिया, जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम छः बरस के हुए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वालिदा का भी इंतिक़ाल हो गया, वालिद पहले ही फ़ौत हो चुके थे, मेहरबान दादा अब्दुल मुत्तलिब ने जिनको अपने पोते से बहुत मुहब्बत थी उनकी परवरिश अपने ज़िम्मा ली, खुदा की शान कि दादा का साया भी ज़ियादा अर्सा तक क़ाइम न रहा और वालिदा के दो साल के बाद दादा का साया भी सर से उठ गया, उस वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आठ बरस के थे, दादा के इंतिक़ाल के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचा अबू तालिब ने अपनी सरप्रस्ती में ले लिया, चचा को अपने भतीजे से बे-हद मुहब्बत थी और बेटों से ज़ियादा चाहते थे

वह्य

अरब की हालत उस वक़्त बहुत ख़राब थी, जैसा कि पहले बताया जा चुका है गो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हीं लोगों के दरमियान रह कर परवरिश पाई, और आपका उठना बैठना, मिलना जुला उन्हीं लोगों से था मगर आपने किसी की गंदी आदत नहीं ली, आपके हर काम में सफ़ाई, सुथराई पाई जाती थी, आपकी दयानत, सच्चाई और पाकीज़गी की शुहरत होती चली गई, और लोग आपको सादिक़ और अमीन कह कर पुकारने लगे, जब आप पच्चीस साल के हुए तो आपकी शादी हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा से हुई, जो बेवा थीं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

तिजारत का माल लेकर अरब के मुख़्तलिफ़ मुल्कों में जाते वहां भी आपको अमीन और सादिक़ कह कर पुकारा जाता, मक्का मुअज़्ज़मा के तीन मील के फ़ासले पर पहाड़ में एक ग़ार था, जिसको ग़ारे हिरा कहते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कई-कई रोज़ का खाना लेकर इस ग़ार में चले जाते, और वहां अक्सर ख़ुदा की इबादत और सोच विचार में वक़्त गुज़ारते, रमज़ानुल मुबारक का महीना था, और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्र चालीस बरस की हो चुकी थी, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मामूल के मुताबिक़ ग़ारे हिरा में इबादत में मशग़ूल थे, अचानक हज़रत जिबरील अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए और क़ुरआन पाक की यह आयतें पढ़ कर सुनाईं

اِقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّکَ الَّذِیْ خَلَقَ، خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ،
اِقْرَأْ وَرَبُّکَ الْاَکْرَمُ الَّذِیْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَالَمْ
یَعْلَمْ (سورۃ العلق، پ ۳۰ آیت ۱)

पढ़ अपने रब के नाम से जिसने पैदा किया, जिसने इंसान को जमे हुए ख़ून से बनाया, पढ़ और तेरा रब बड़ा करीम है जिसने क़लम के ज़रीए इल्म सिखाया, इंसान को वह बताया जो वह नहीं जानता था।

(सूरतुल अ़लक़ प. 30 आयत 1)

क़ौम को दीन व ईमान की दावत

ग़ारे हिरा में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नुबूवत अ़ता की गई, और हुक्म दिया गया कि अल्लाह के बन्दों को अल्लाह का सीधा रास्ता बताएं, यह काम आसान नहीं था, ऐसी ज़िम्मेदारी का ख़्याल करके आप कांप गए और घबराए हुए घर

तशरीफ़ लाए, हज़रत ख़दीजा ने आपको तसल्ली दी और कहा मेरे आक़ा आप परेशान न हों, अल्लाह तआला आपके साथ हैं, वह आपको कभी ख़ौफ़ व रंज में नहीं डालेगा।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ सबसे पहले अपने क़रीबी रिश्तेदारों और गहरे दोस्तों को अल्लाह की तरफ़ बुलाया और फ़रमायाः **क़ूलू लाइला-ह इल्लल्लाह** कहो अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं। जैसा कि पहले बताया जा चुका है उस ज़माना में अरब में बुत प्रस्ती का ज़ोर था, ख़ाना काबा जो अल्लाह का घर है इसमें बेशुमार बुत रखे थे, उनकी समझ में यह बात नहीं आई और इस बात पर आप से लड़ने को तैयार हो गए, सबसे पहले हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा, हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हु आपके चचाज़ाद भाई,) हज़रत ज़ैद बिन हारिस आपके आज़ाद किए हुए गुलाम, और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के गहरे दोस्त थे, ईमान लाए, और अल्लाह के दीन को फैलाने लगे।

हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह का दीन फैलाने में बड़ी-बड़ी मशक़्क़तें और तक्लीफ़ें बरदाश्त करनी पड़ीं, अल्लाह पाक क़ुरआन मजीद में अपने प्यारे नबी को तसल्ली देता रहा, और हिदायत फ़रमाता रहा कि अब इस तरह और अब इस तरह करो।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तसल्ली के लिए और क़ौम की इबरत के लिए पहले नबीयों के क़िस्से बताए गए कि जिन क़ौमों ने अपने नबी का कहना माना वह दीन व दुनिया में कामियाब रहीं, और जिन्होंने अपने नबी का इंकार किया और अल्लाह का कहना नहीं माना वह क़ौम इस दुनिया से भी नेस्त व नाबूद कर दी

गई और आख़िरत में भी उसको बड़ी सज़ा मिलेगी।

बच्चो! यह क़िस्से तुमको सब सुनाए जा चुके हैं, अब हम क़ुरआन पाक से सिर्फ़ चंद वाक़िआत लिखते हैं, कि हमारे प्यारे नबी अपनी क़ौम को किस तरह समझाते रहे, और क़ौम क्या जवाब देती रही, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब ईमान की दावत देते तो वह मुसलमानों को बेवक़ूफ़ बनाते

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا كَمَآ اٰمَنَ النَّاسُ قَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ كَمَآ اٰمَنَ السُّفَهَآءُ اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَآءُ وَلٰكِنْ لَّا يَعْلَمُوْنَ ۔(سورة البقره پ ۱، آیت ۱۳)

और जब कहिए उनको ईमान लाओ जिस तरह ईमान लाए सब लोग, कहते हैं क्या हम इस तरह मुसलमान हों जैसे मुसलमान हुए बेवक़ूफ़ सुनता है वही हैं बेवक़ूफ़, सुनता है वही हैं बेवक़ूफ़ पर नहीं जानते।

(सूरतुल बक़रह प. 1 आयत 13)

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اِفْكُ نِ افْتَرٰىهُ وَاَعَانَهٗ عَلَيْهِ قَوْمٌ اٰخَرُوْنَ ۔(سورة الفرقان پ ۱۸ آیت ۴)

और काफ़िर कहते हैं कि (क़ुरआन) मनगढ़त बातें हैं जो उसने बना ली हैं, और लोगों ने इसमें उनकी मदद की है। (सूरतुल फ़ुर्क़ान प. 18 आयत 4)

अल्लाह पाक इसका जवाब देते हुए फ़रमाते हैं

فَقَدْ جَآءُوْ ظُلْمًا وَّزُوْرًا وَقَالُوْٓا اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ اكْتَتَبَهَا فَهِيَ تُمْلٰى عَلَيْهِ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا

(سورة الفرقان پاره ۱۸ آیت ۵،۴)

यह लोग ऐसा कहने में ज़ुल्म और झूठ पर उतर आए हैं और कहते हैं कि यह पहले लोगों की कहानियां हैं जिनको उसने लिख रखा है और वह सुब्ह व शाम इसको पढ़-पढ़ कर सुनाई जाती हैं।

(सूरतुल फ़ुर्क़ान पारह 18 आयत 4, 5)

अल्लाह तआला इसका जवाब देते हुए फ़रमाते हैं

قُلْ اَنْزَلَهُ الَّذِیْ یَعْلَمُ السِّرَّ فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ۔ اِنَّهٗ کَانَ غَفُوْرًا رَّحِیْمًا۔

(سورة الفرقان پ ۱۸، آیت ۶)

कह दो कि उसने उतारा है इसको कि जो आसमानों और ज़मीन की पोशीदा बातों को जानता है बेशक वह बख़्शने वाला मेहरबान है।

(सूरतुल फ़ुर्क़ान प. 18, आयत 6)

وَقَالُوْا مَا لِهٰذَا الرَّسُوْلِ یَاْکُلُ الطَّعَامَ وَیَمْشِیْ فِی الْاَسْوَاقِ لَوْلَآ اُنْزِلَ اِلَیْهِ مَلَکٌ فَیَکُوْنَ مَعَهٗ نَذِیْرًا۔

(سورة الفرقان پ ۱۸، آیت ۷)

और कहते हैं कि यह कैसा पैग़म्बर है कि खाना खाता है और बाज़ारों में चलता फिरता है उसके साथ फ़रिश्ता क्यों नहीं नाज़िल किया गया कि उसके साथ हिदायत करने को रहता।

(सूरतुल फ़ुर्क़ान प. 18, आयत 7)

اَوْيُلْقٰى اِلَيْهِ كَنْزٌ اَوْتَكُوْنُ لَهٗ جَنَّةٌ يَّاْكُلُ مِنْهَا وَقَالَ الظّٰلِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا۔

(سورة الفرقان، پ ۱۸، آیت ۸)

या उसकी तरफ़ (आसमान से) ख़ज़ाना उतारा जाता या उसका कोई बाग़ होता कि इसमें से खाया करता और ज़ालिम कहते हैं कि तुम तो एक जादू ज़दा शख़्स की पैरवी करते हो

(सूरतुल फ़ुर्क़ान प. 18 आयत 8)

अल्लाह तआला जवाब देते हुए फ़रमाते हैं।

اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا۔ تَبٰرَكَ الَّذِيْٓ اِنْ شَآءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِّنْ ذٰلِكَ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ وَيَجْعَلْ لَّكَ قُصُوْرًا۔ (سورة الفرقان پ ۱۸ آیت ۹)

(ऐ पैग़म्बर) देखो यह तुम्हारे बारे में किस-किस तरह की बातें करते हैं सो गुमराह हो गए और रास्ता नहीं पा सकते वह (ख़ुदा) बाबरकत है, जो अगर चाहे तो तुम्हारे लिए इससे बेहतर बना दे बाग़ात जिनके नीचे नहरें बहती हों नीज़ तुम्हारे लिए महल बना दे।

(सूरतुल फ़ुर्क़ान प. 18 आयत 9)

وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْنَرٰى رَبَّنَا۔

(سورة الفرقان پ ۱۸، آیت ۲۱)

और जो लोग हम से मिलने की उम्मीद नहीं रखते, कहते हैं कि फ़रिश्ते क्यों नाज़िल नहीं किए गए या हम अपनी आंखों से अपने परवरदिगार को देख लें।

(सूरतुल फ़ुर्क़ान प. 18, आयत 21)

बच्चो! तुम ने देखा कि हमारे प्यारे नबी ने इस दीन को फैलाने की ख़ातिर कैसी-कैसी तक्लीफ़ें उठाईं, आपने सब्र से काम लिया, और हिम्मत नहीं हारी।

मेराज

बच्चो! अल्लाह पाक ने हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बैतुल मुक़द्दस और आसमानों की रातों रात सैर कराई जिसे मेराज कहते हैं, क़ुरआन शरीफ़ में तुम पढ़ोगे।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ سُبْحَانَ الَّذِىْ اَسْرٰى
بِعَبْدِهٖ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَى الْمَسْجِدِ
الْاَقْصَى الَّذِىْ بٰرَكْنَا حَوْلَهٗ لِنُرِيَهٗ مِنْ اٰيٰتِنَا اِنَّهٗ هُوَ
السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ

(سورہ بنی اسرائیل پ۱۵ آیت ۱)

शुरु अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है, पाक ज़ात है जो ले गया अपने बन्दे को रातों रात अदब वाली मस्जिद से मस्जिदे अक़्सा तक जिसमें हम ने ख़ूबियां रखी हैं कि दिखला दें इसको अपनी क़ुदरत के नमूने वही सुनता देखता है।

(सूर-ए-बनी इस्राईल, प. 15, आयत 1)

एक रात जब कि आप सो रहे थे हज़रत जिबरील अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए और आपका सीना चाक करके क़ल्ब को आबे ज़मज़म से धोया और इसमें ईमान और हिकमत भर दी, फिर आपके पास सफ़ेद रंग का बुराक़ लाया गया जिसपर आपको सवार किया गया, हज़रत जिबरील अलैहिस्सलाम ने उसकी रकाब पकड़ी, रास्ते में आपको बहुत से अजाइबात दिखाए गए, बुराक़ का एक क़दम जहां तक निगाह जाती थी पड़ता था, आपको बैतुल मुक़द्दस पहुंचाया गया, जहां मस्जिदे अक़्सा में आप इमाम बने और आपके पीछे तमाम अंबिया ने नमाज़ पढ़ी फिर तमाम अंबिया से मुलाक़ात कराई गई, इसके बाद आसमान का सफ़र शुरु हुआ और एक के बाद दूसरे आसमान पर तशरीफ़ ले गए, हर आसमान पर किसी पैग़म्बर से मुलाक़ात हुई, फिर आपको सिदरतुल मुन्तहा की तरफ़ बलंद किया गया इसका ज़िक्र क़ुरआन पाक में इस तरह आया है

وَلَقَدْ رَاٰهُ نَزْلَةً اُخْرٰى عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهٰى

जिसने जिबरील अलैहिस्सलाम को दूसरी बार सिदरतुल मुन्तहा के पास देखा।

यहां तक कि एक मक़ाम पर पहुंचे, फिर हज़रत जिबरील ठहर गए हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि ऐसे मक़ाम में कोई दोस्त अपने दोस्त को छोड़ता है, उन्होंने कहा कि अगर मैं इस मक़ाम से आगे बढ़ूं तो नूर से जल जाऊं, फिर आपको नूर से पेवस्त कर दिया गया और सत्तर हज़ार हिजाब तय कराए गए यहां तक कि तमाम इंसानों और फ़रिश्तों की आहट क़तअ़ हो गई, यहां तक कि आप अर्शे अज़ीम तक पहुंचे।

अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम को उम्मत के लिए तुहफ़े दिए गए वह यह हैं।

1 : पांच नमाज़ें फ़र्ज़ की गईं।

2 : सूर-ए-बक़रा का आख़िरी रुकूअ़ दिया गया।

3 : जो शख़्स आपकी उम्मत में अल्लाह तआ़ला के साथ किसी को शरीक न ठहराए उसके गुनाह मुआ़फ़ किए गए।

4 : और यह भी वादा हुआ कि जो शख़्स नेकी का इरादा करें और उसको करने न पाए तो उसकी एक नेकी लिखी जाएगी और अगर इसको कर लिया तो कम अज़ कम दस हिस्से करके लिखे जाएंगे, और जो शख़्स बदी का इरादा करे और फिर उसको न करे तो वह बिल्कुल न लिखी जाएगी, और अगर इसको कर ले तो एक ही बदी लिखी जाएगी।

हिजरत

जब कुफ़ार बहुत तक्लीफ़ देने लगे तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने अस्हाब को हिजरत की इजाज़त अता फ़रमाई और अस्हाब ने ख़ुफ़ीया रवाना होना शुरू किया कि एक रोज़ काफ़िरों के सरदारों ने ख़ाना काबा के क़रीब एक मकान में मशविरा किया और सब की यह राए क़रार पाई कि हर क़बीला क़ुरैश में से एक-एक आदमी मुनतख़ब हो, और सब जमा होकर रात को मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मकान पर जा कर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को क़त्ल कर दें, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथी सबसे मुक़ाबला नहीं कर सकते इसलिए ख़ूं बहा पर राज़ी हो जाएंगे, अल्लाह तआ़ला ने आपको इस मशविरा से आगाह कर दिया और हुक्म दिया कि मदीना हिजरत कर जाएं, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम शब को

घर में थे कि कुफ़्फ़ार ने दरवाज़ा जाकर घेर लिया. आप अमानतें हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के सुपुर्द करके घर से निकल गए और खुदा की क़ुदरत से किसी को नज़र न आए, और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ को साथ लिया और ग़ारे सौर में जा छुपे, काफ़िरों ने जब आपको घर में न देखा तो तलाश करते-करते ग़ार तक पहुंचे, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ग़ार में दाख़िल होने के बाद मकड़ी ने ग़ार के मुंह पर जाला बना दिया, और एक कबूतर के जोड़े ने आके ग़ार में अंडे देने शुरू कर दिए, जब कुफ़्फ़ार ने देखा तो कहने लगे कि अगर कोई आदमी इसमें जाता तो यह मकड़ी का जाला टूट जाता और कबूतर इस ग़ार में न ठहरता, इसी ग़ार के मुतअ़ल्लिक क़ुरआने पाक में इस तरह आया है।

اِلَّا تَنْصُرُوْهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللّٰهُ اِذْاَخْرَجَهُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا.
ثَانِیَ اثْنَیْنِ اِذْهُمَا فِی الْغَارِ اِذْيَقُوْلُ لِصَاحِبِهٖ
لَاتَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا (سورہ توبہ.پ ۱۱،آیت ۴۰)

अगर तुम लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मदद न करोगे तो अल्लाह तआ़ला आपकी मदद उस वक़्त करेगा जबकि आपको काफ़िरों ने जिला वतन कर दिया जबकि दो आदमियों में एक आप थे जिस वक़्त दोनों ग़ार में थे जबकि आप हमदर्दी से फ़रमा रहे थे कि ग़म न करो बेशक अल्लाह हमारे साथ है (सूरतुत्तौबा प. 11 आयत 40)

आप तीन दिन इस ग़ार में रहे, फिर आप मदीना शरीफ़ तशरीफ़ ले गए, वहां के लोगों ने बड़ा इस्तक़बाल किया, छोटी-छोटी लड़कियां शौक़ में नज़म पढ़ती थीं।

ग़ज़्व-ए-बद्र

बच्चो! आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना मुनव्वरा में दस साल दो माह रहे जब जिहाद फ़र्ज़ हुआ, आपने कुफ़्फ़ार से क़िताल शुरू किया, चंद छोटी-छोटी लड़ाईयां शुरु हुईं, मदीना मुनव्वरा आने के ढेड़ साल के बाद जंगे बद्र हुई, रमज़ान में आपने ख़बर सुनी कि मक्का के क़ुरैश काफ़िरों का क़ाफ़िला शाम से मक्का को जा रहा है, आप तीन सौ तेरह सहाबा को लेकर उसको रोकने चले, यह ख़बर मक्का पहुंची, कुफ़्फ़ारे क़ुरैश एक हज़ार मुसल्लह आदमी लेकर रवाना हो गए, क़ाफ़िला दूसरी तरफ़ से निकल कर मक्का जा पहुंचा और बद्र के मक़ाम पर उन एक हज़ार मुसल्लह कुफ़्फ़ार से तीन सौ तेरह बे-सर व सामान मुसलमानों की लड़ाई हुई, अल्लाह तआला ने मुसलमानों को फ़त्ह दी और काफ़िर क़त्ल हुए और क़ैद हुए, सूर-ए-अंफ़ाल में यह क़िस्सा बयान किया गया है, इसमें से चंद आयतें यह हैं

وَاِذْ يَعِدُكُمُ اللّٰهُ اِحْدَى الطَّآئِفَتَيْنِ اَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّوْنَ
اَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشَّوْكَةِ تَكُوْنُ لَكُمْ وَيُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ
يُّحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَيَقْطَعَ دَابِرَ الْكَافِرِيْنَ
(سورہ الانفال پ۹ ایت۷)

और उस वक़्त को याद करो जब ख़ुदा तुम से वादा करता था कि दो गिरोहों में से एक गिरोह तुम्हारा हो जाएगा और तुम चाहते थे कि जो क़ाफ़िला बे-शौकत (यानी बे-हथियार) है वह तुम्हारे हाथ आ जाए और अल्लाह चाहता था कि अपने फ़रमान से हक़ को क़ाइम रखे और काफ़िरों की जड़ काट दे।

(सूरतुल अंफ़ाल प. 9 आयत 7)

لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْكَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ
.اِذْتَسْتَغِيْثُوْنَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ اَنِّی مُمِدُّكُمْ
بِاَلْفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُرْدِفِيْنَ۔

(سورۃ الانفال پ۹ آیت ۸)

ताकि सच को सच और झूठ को झूठ कर दे गो मुश्रिक नाखुश ही हों जब तुम अपने परवरदिगार से फ़रयाद करते थे तो उसने तुम्हारी दुआ कुबूल कर ली, हम हज़ार फ़रिश्तों से जो एक दूसरे के पीछे आते रहेंगे तुम्हारी मदद करेंगे। (सूरतुल अंफ़ाल प. 9 आयत 8)

اِذْيُوْحِیْ رَبُّكَ اِلَی الْمَلٰٓئِكَةِ اَنِّیْ مَعَكُمْ فَثَبِّتُوْا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا۔

(سورۃ الانفال پ۹آیت۱۲)

जब तुम्हारा परवरदिगार फ़रिश्तों को इरशाद फ़रमाता था कि मैं तुम्हारे साथ हूं, तुम मुमिनों को तसल्ली दो कि साबित कदम रहें।

(सूरतुल अंफ़ाल प. 9, आयत 12)

سَاُلْقِیْ فِیْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا الرُّعْبَ فَاضْرِبُوْا
فَوْقَ الْاَعْنَاقِ وَاضْرِبُوْا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ۔ ذٰلِكَ
بِاَنَّهُمْ شَاقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَمَنْ يُّشَاقِقِ اللّٰهَ
وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ،ذٰلِكُمْ فَذُوْقُوْهُ وَاَنَّ
لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابَ النَّارِ۔

(سورۃ الانفال پ ۹ آیت ۱۲)

मैं अभी-अभी. काफ़िरों के दिल में रोब दाब डाले देता हूं तो उनके सर उड़ा दो और उनका पोर-पोर मार कर तोड़ दो यह (सज़ा) इसलिए दी गई कि उन्होंने ख़ुदा और उसके रसूल की मुख़ालफ़त की, जो शख़्स ख़ुदा और उसके रसूल की मुख़ालफ़त करता है तो ख़ुदा भी सख़्त अज़ाब देने वाला है, यह मज़ा तो यहां चखो और काफ़िरों के लिए दोज़ख़ का अज़ाब भी तैयार है।

(सूरतुल अंफ़ाल प. 9 आयत 12)

बच्चो! तुम ने देखा कि अल्लाह तआला मुसलमानों की किस तरह मदद करते हैं, सिर्फ़ उस वक़्त ज़ब लड़ाई सिर्फ़ अल्लाह के लिए लड़ी जाए, और तुमने यह भी सुन लिया कि जो शख़्स ख़ुदा और उसके रसूल की मुख़ालफ़त करता है तो अल्लाह तआला उसको सख़्त अज़ाब देते हैं, प्यारे बच्चों, अल्लाह तआला फिर मुसलमानों को नसीहत करते हुए फ़रमाते हैं।

يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا زَحْفًا فَلَا تُوَلُّوْهُمُ الْاَدْبَارَ وَمَنْ يُّوَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ دُبُرَهٗٓ اِلَّا مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ اَوْ مُتَحَيِّزًا اِلٰى فِئَةٍ فَقَدْ بَآءَ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ.

(سورۃ الانفال پ۹ آیت ۱۵)

ऐ अहले ईमान जब मैदाने जंग में कुफ़्फ़ार से तुम्हारा मुक़ाबला हो तो उनसे पीठ न फेरना और जो शख़्स इमरोज़ पीठ फेरेगा सिवाए इसके कि लड़ाई की कोई हिक्मत हो या अपनी फ़ौज में जा मिलना चाहे वह

मुसतस्ना है बाकी और जो ऐसा करेगा वह ख़ुदा के ग़ज़ब में गिरफ़्तार हो गया और उसका ठिकाना दोज़ख़ है और वह बहुत बुरी जगह है।

(सूरतुल अंफ़ाल प. 9 आयत 15)

बच्चो! जंगे बद्र का यह थोड़ा सा वाक़िआ क़ुरआने पाक में से नक़्ल किया है अब जबकि तुम खुद क़ुरआने पाक पढ़ रहे हो तो जब यह समझ कर पढ़ोगे तो इंशा अल्लाह सब पूरा वाक़िआ तुम्हारे सामने आएगा।

ग़ज़्व-ए-उहद सन् 3 हिजरी

बच्चो! ग़ज़्व-ए-बदर के बाद काफ़िरों से चंद छोटी-छोटी लड़ाईयां और झड़पें हुईं।

फिर जंगे बद्र के एक साल बाद जंगे उहद हुई, जिसका क़िस्सा चौथे पारे के निस्फ़ पाव से शुरु होकर निम्फ़ के कुछ बाद तक पहुंचता है, काफ़िरों को बद्र में शिकस्त का रंज था वह इसका बदला लेने के लिए एक साल बाद मदीना मुनव्वरा पर चढ़ आएं, हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुसलमानों से मशविरा किया तय पाया कि मदीना मुनव्वरा से बाहर जाकर मुक़ाबला किया जाए, एक हज़ार मुसलमानों का लश्कर रवाना हुआ, जब कि काफ़िरों का लशकर तीन हज़ार था, रास्ते में अब्दुल्लाह बिन उबय मुनाफ़िक़ों का सरदार अपने तीन सौ आदमीयों को लेकर वापस हो गया और बहाना बना दिया, आपके पास सात सौ जांबाज़ मुसलमान रह गए आपने कोहे उहद पहुंच कर पचास तीर अंदाज़ों को पहाड़ के अहम मक़ामात पर बिठा दिया और बहुत-बहुत ताकीद कर दी और हुक्म दिया कि मेरी इजाज़त के बग़ैर तुम अपनी जगह न

छोड़ना, ख़्वाह हमें शिकस्त हो या फ़त्ह, तुम अपनी जगह पर डटे रहना, जब जंग शुरु हुई तो अव्वल मुसलमानों को फ़त्ह हुई. और मुसलमान माले ग़नीमत जमा करने लगे, यह देखकर वह मुसलमान जिनको पहाड़ की अहम जगहों पर खड़ा किया गया था, दस आदमियों के सिवा बाक़ी सब अपनी जगहों को छोड़ कर आ गए, पहाड़ की अहम जगहों की तरफ़ से जिनको मुसलमानों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ छोड़ दिया था. काफ़िरों ने हमला कर दिया, जिसकी वजह से मुसलमानों के पैर उखड़ गए और सत्तर मुसलमान उसी जंग में शहीद हो गए ज़िनमें हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचा भी शामिल हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पैर में ज़ख़म आए जिससे यह अफ़वाह फैल गई कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम शहीद हो गए, बाद में अल्लाह तआला ने फिर मुसलमानों के दिलों को मज़बूत किया, मुसलमान फिर जम कर लड़े और काफ़िर मैदाने उहद छोड़ कर चले गए और क़ुरआने पाक की चंद आयतें इस जंग उहद के मुतअल्लिक़ तुमको सुनाते हैं, जब तुम ख़ुद पढ़ोगे तो सब ख़ुद समझ लोगे।

وَاِذْ غَدَوْتَ مِنْ اَهْلِكَ تُبَوِّئُ الْمُؤْمِنِيْنَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ اِذْ هَمَّتْ طَّائِفَتٰنِ مِنْكُمْ اَنْ تَفْشَلَا وَاللّٰهُ وَلِيُّهُمَا وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ (سورہ آل عمران پ ۴ آیت ۱۲۱)

और जब कि आप सुब्ह के वक़्त घर से चले मुसलमानों को मुक़ातला करने के लिए मक़ामात पर जमा रहे थे, और अल्लाह तआला सब सुन रहे थे सब जान रहे थे,

जब तुम में से दो जमाअतों ने दिल में ख़्याल किया कि हिम्मत हार दें और अल्लाह तआ़ला तो उन दोनों जमाअतों का मददगार था और बस मुसलमानों को अल्लाह पर एतमाद करना चाहिए।

(सूर-ए-आले इमरान प. 4 आयत, 121)

फिर आगे चल कर फ़रमाते हैं।

وَلَا تَهِنُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِيْنَ (سورہ آل عمران پ ۴ آیت ۱۳۹)

और सुस्त न हो और ग़म न खाओ और तुम ही ग़ालिब रहोगे अगर तुम ईमान रखते हो।

(सूर-ए-आले इमरान प. 4 आयत 139)

मुसलमानों को तसल्ली देते हुए अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है:-

اِنْ يَّمْسَسْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ قَرْحٌ مِّثْلُهٗ۔ (سورہ آل عمران پ ۴ آیت ۱۴۰)

अगर तुम को ज़ख़्म पहुंच जाए तो इस क़ौम को भी ऐसा ही ज़ख़्म पहुंच चुका है।

(सूरह आले इमरान प. 4 आयत 140)

फिर अल्लाह तआ़ला मुसलमानों को नसीहत करते हुए फ़रमाते हैं:-

وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللّٰهُ وَعْدَهٗ اِذْ تَحُسُّوْنَهُمْ بِاِذْنِهٖ حَتّٰى اِذَا فَشِلْتُمْ وَتَنَازَعْتُمْ فِى الْاَمْرِ وَعَصَيْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَآ اَرٰىكُمْ مَّا تُحِبُّوْنَ (سورہ آل عمران پ ۴ آیت ۱۵۲)

और यक़ीनन अल्लाह तआ़ला ने तुम से अपना वादा सच्चा कर दिखाया था जिस वक़्त तुम इन कुफ़्फ़ार को ब-हुक्मे ख़ुदावन्दी क़त्ल कर रहे थे यहां तक कि तुम ख़ुद ही कमज़ोर हो गए और बाहम हुक्म में इख़्तिलाफ़ करने लगे और तुम कहने पर न चले बाद इसके कि तुम को तुम्हारी दिल ख़्वाह बात दिखला दी थी।
(सूरह आले इमरान प 4 आयत 152)

मुसलमानों को काफ़िरों के मुक़ाबला में शिकस्त अल्लाह और उसके रसूल की इताअ़त की कमज़ोरी की वजह से होनी है जैसा कि आपको बताया जा चुका है कि हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पचास तीर अंदाज़ों को चंद जगहों पर बिठा दिया था और ताकीद कर दी थी कि वहां से न हटें लेकिन सिवाए दस के बक़ीया लोग वहां से हट गए, अल्लाह तआ़ला इसी बात को इस तरह फ़रमाते हैं

اَوَلَمَّا اَصَابَتْكُمْ مُصِيْبَةٌ قَدْ اَصَبْتُمْ مِثْلَيْهَا قُلْتُمْ اَنّٰى هٰذَا قُلْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اَنْفُسِكُمْ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ (سوره آل عمران پ ۴ آیت ۱۶۵)

और जब तुम्हारी ऐसी हार हुई जिससे दो हिस्से तुम जीत चुके थे तो क्या तुम (यूं) कहते हो कि यह किधर से हुई फ़रमा दीजिए कि यह तुम्हारी तरफ़ से हुई बेशक अल्लाह तआ़ला को हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत है।
(सूरह आले इमरान प. 4 आयत 165)

बच्चो! यह आयात हमने बहुत थोड़ी सी नक़्ल की हैं, जब

आप क़ुरआन पाक ख़ुद पढ़ेंगे तो तमाम हालात आपके सामने आ जाएंगे।

ग़ज़्व-ए-उहद से हमको दो बातों का सबक़ मिलता है।

अव्वलः- मुसलमानों को सिर्फ़ अल्लाह पर भरोसा करना चाहिए कि फ़त्ह और शिकस्त सिर्फ़ अल्लाह के अख़्तियार में है, सिर्फ़ तादाद या हथियारों की ज़ियादती फ़त्ह नहीं करा सकती, हां हथियार और तादाद भी ज़ियादा से ज़ियादा रखना चाहिए कि यह भी अल्लाह का हुक्म है लेकिन यक़ीन सिर्फ़ यही होना चाहिए कि फ़त्ह अल्लाह तआला देंगे।

दोमः-बात यह है कि हमको जो हमारा अमीर या कमांडर इन चीफ़ हुक्म दे उस पर सख़्ती से क़ाइम रहना चाहिए चाहे जान चली जाए, चूंकि यह भी अल्लाह का हुक्म है, लड़ाई में फ़त्ह हासिल करने के लिए यह भी ज़रूरी है।

बच्चों! जब तुम बड़े हो तो इन बातों का ख़्याल रखना।

ग़ज़्व-ए-बनी नज़ीर सन् 3 हि0

बच्चो! ग़ज़्व-ए-बनी नज़ीर सन् 3 हि0 में हुआ, जिसका सबब यह हुआ कि जब हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना तैय्यिबा, हिजरत फ़रमा कर तशरीफ़ फ़रमा हुए तो यहूदियों के दो क़बीलों ने जो मदीना तैय्यिबा के बाहर रहते थे आपसे अहद किया कि हम आपके मुवाफ़िक़ रहेंगे और आपके लिए कोई बुराई नहीं करेंगे जब आप इस मुआमला पर गुफ़्तगू के लिए उनके पास गए, और उनसे इस मुआमला में गुफ़्तगू की, वह लोग आपको एक दीवार के नीचे बिठा कर मशविरा करने लगे कि दीवार पर से एक पत्थर लुढका कर आपको क़त्ल कर दें, आप सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम को वह्य से इत्तेलाअ़ हो गई, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उठ कर मदीना तशरीफ़ ले गए, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहला भेजा कि तुमने अपने अहद को तोड़ा है, या तो दस दिन के अंदर निकल जाओ वर्ना लड़ाई होगी, वह लड़ाई के लिए तैयार हुए आप उनपर लश्कर ले आए और उसके हलक़ा को घेर लिया आख़िर वह तंग होकर निकल जाने पर राज़ी हुए।

सूर-ए-हश्र में यही क़िस्सा है इसमें से चंद आयतें हम नक़्ल करते हैं, फिर आप जब ख़ुद क़ुरआन पाक पढ़ेंगे तो आपको ख़ुद मालूम हो जाएगा।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ وَهُوَ
الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ هُوَ الَّذِىْ اَخْرَجَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ
اَهْلِ الْكِتَابِ مِنْ دِيَارِهِمْ لِاَوَّلِ الْحَشْرِ مَا ظَنَنْتُمْ
اَنْ يَّخْرُجُوْا وَظَنُّوْا اَنَّهُمْ مَانِعَتُهُمْ حُصُوْنُهُمْ مِنَ
اللّٰهِ فَاَتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوْا وَقَذَفَ
فِىْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ يُخْرِبُوْنَ بُيُوْتَهُمْ بِاَيْدِيْهِمْ
وَاَيْدِى الْمُؤْمِنِيْنَ، فَاعْتَبِرُوْا يَا اُولِى
الْاَبْصَارِ (سورة الحشر پ ۲۸، آيت ۱)

अल्लाह पाक की पाकी बयान करते हैं सब जो कुछ आसमानों और ज़मीन में हैं और वह ज़बरदस्त हिकमत वाला है वही है जिसने कुफ़्फ़ार अहले किताब को उनके घरों से पहली बार इकट्ठा करके निकाल दिया, तुम्हारा गुमान भी न था कि वह कभी अपने घरों से निकलेंगे

और ख़ुद उन्होंने यह गुमान कर रखा था कि उनके क़िले उनको अल्लाह से बचा लेंगे, सो इन पर अल्लाह का (अ़ताब) ऐसी जगह से पहुंचा कि उनको ख़्याल भी न था और उनके दिलों में रोब डाल दिया, कि अपने घरों को ख़ुद अपने हाथों से और मुसलमानों के हाथों से उजाड़ रहे थे, सो ऐ अक़्लमन्दो, (इस हालत को देखकर) इबरत हासिल करो। (सूरतुल हश्र प. 28, आयत 1)

बच्चो! फिर आगे चल कर अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं:-

ذٰلِکَ بِاَنَّھُمْ شَآقُّوا اللّٰہَ وَرَسُوْلَہٗ وَمَنْ یُّشَآقِّ اللّٰہَ فَاِنَّ اللّٰہَ شَدِیْدُ الْعِقَابِ۔ (سورۃ الحشر، پ ۲۸ آیت ۴)

यह इस सबब से है कि इन लोगों ने अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालफ़त की है और जो शख़्स अल्लाह की मुख़ालफ़त करता है तो अल्लाह तआ़ला उसको सख़्त सज़ा देने वाला है।

(सूरतुल हश्र, प. 28 आयत 4)

ग़ज़वा-ए-बदरे सानी सन् 4 हि0

बच्चो! जंगे उहद से वापस जाते हुए काफ़िर कह गए थे कि साल आईंदा बद्र पर फिर लड़ाई होगी, जब वह ज़माना क़रीब हुआ तो काफ़िरों को बद्र तक जाने की हिम्मत न हुई उन्होंने यह सोचा कि ऐसी तजवीज़ करनी चाहिए कि हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी बद्र न जाएं ताकि हम को शर्मिंदगी न हो चूनांचे उन्होंने एक जासूस को मदीना मुनव्वरा भेजा कि मुसलमानों में जाकर यह ख़बर फैलाएं कि

काफ़िरों ने फ़ौज जमा की है।

बच्चो! मुसलमान तो सिर्फ़ अल्लाह से डरता है वह काफ़िरों की ज़ियादती से तो नहीं डरता, उन्होंने सुनकर कहा **हसबुनल्लाहु व निअ्-मल वकीलु** हमारी मदद के लिए अल्लाह काफ़ी है, आप ढेड़ हज़ार आदमीयों को साथ लेकर बद्र तशरीफ़ ले गए और चंद रोज़ क़ियाम किया, लेकिन वहां कोई काफ़िर मुक़ाबले पर नहीं आया, मुसलमानों ने वहां तिजारत में ख़ूब नफ़ा हासिल किया और ख़ुश व ख़ुर्रम वापस लौट आए।

दो मतुल जंदल और ग़ज़्व-ए-अहज़ाब सन् 5 हि0

बच्चो! हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सुना कि दमिश्क़ के क़रीब कुछ कुफ़्फ़ार जमा होकर मदीना मुनव्वरा पर चढ़ना चाहते हैं, आप एक हज़ार आदमियों को लेकर रवाना हुए, वह ख़बर सुनकर भाग गए, आप चंद रोज़ वहां रह कर मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ ले आए, इसको दो मतुल जंदल कहते हैं।

इसी साल ग़ज़्वा बनी मुसतलक़ भी हुआ लेकिन यहां पर भी काफ़िर मुक़ाबले पर नहीं आए और अपना सामान और अहल व अयाल छोड़ कर भाग गए।

बच्चो! फिर इसी साल ग़ज़्व-ए-अहज़ाब हुआ, इसको ग़ज़्व-ए-ख़न्दक़ भी कहते हैं, सूर-ए-अहज़ाब में इसी का ज़िक्र है।

यह लड़ाई इस वजह से हुई कि पहले तुम को बताया जा चुका है कि यहूदियों के दो क़बीलों को जिन्होंने मुआहिदा की ख़िलाफ़ वर्ज़ी की थी, इनको उनके क़िलों से निकाल दिया गया था, चूनांचे इन्हीं में का एक आदमी अपने साथियों को साथ लेकर मक्का पहुंचा, और काफ़िरों को लड़ाई के लिए आमादा किया और इसके

लिए बहुत कोशिश की, यहां तक कि दस हज़ार काफ़िरों की फ़ौज मदीना मुनव्वरा पर हमला करने चली, हमारे प्यारे नबी रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुसलमानों से मशविरा करके मदीना के पास ख़न्दक़ खोदने का हुक्म दिया, और वहां अपना लश्कर क़ाइम किया, कुफ़्फ़ार आए और ख़ूब तीर अंदाज़ी करते रहे, मुसलमानों की तरफ़ से भी इसका जवाब दिया जाता रहा, हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने काफ़िरों में तफ़रक़ा डलवाने की तजवीज़ की, और अल्लाह पाक ने इसमें कामियाबी अता फ़रमाई, काफ़िरों के अंदर आपस में तफ़रक़ा पैदा हो गया और आपस में अच्छा ख़ासा बिगाड़ पैदा हो गया, इसी दौरान अल्लाह तआला ने मुसलमानों की मदद इस तरह की कि एक ज़ोरदार हवा भेजी जिससे काफ़िरों के ख़ेमे उखड़ गए, और घोड़े भागने लगे, चूनांचे इसी रात को काफ़िरों का लश्कर वापस चला गया, अब इस जंग के मुतअल्लिक़ क़ुरआन पाक की चंद आयतें सुन लो।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ إِذْ جَاءَتْكُمْ جُنُودٌ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا وَجُنُودًا لَمْ تَرَوْهَا وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا. إِذْ جَاءُوكُمْ مِنْ فَوْقِكُمْ وَمِنْ أَسْفَلَ مِنْكُمْ وَإِذْ زَاغَتِ الْأَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوبُ الْحَنَاجِرَ وَتَظُنُّونَ بِاللّٰهِ الظُّنُونَا. هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُونَ وَزُلْزِلُوا زِلْزَالًا شَدِيدًا

(سورۃ الاحزاب پ ۲۱ آیت ۹)

ऐ ईमान वालो! अल्लाह का इंआम अपने ऊपर याद करो, जब तुम पर बहुत से लश्कर चढ़ आए, फिर हमने

उन पर एक आंधी भेजी और ऐसी फ़ौज भेजी जो तुम को दिखाई न देती थी और अल्लाह तआला तुम्हारे अअ़माल को देखते थे, जब वह लोग तुम पर आ चढ़े थे ऊपर की तरफ़ से और नीचे की तरफ़ से भी और जब कि आंखें खुली की खुली रह गई थीं और कलेजे मुंह को आने लगते थे और तुम लोग अल्लाह के साथ तरह-तरह के गुमान कर रहे थे, इस मौक़ा पर मुसलमानों का इम्तिहान लिया गया और सख़्त ज़लज़ले डाले गए।
(सूरतुल अहज़ाब, पं. 21 आयत 9)

बच्चो! उसके आगे फिर उसी जंग में जो हालात पैदा हो गए थे अल्लाह तआ़ला ने उसको बयान फ़रमाया है और इसका नक़्श खींचा है मुनाफ़िक़ जिनके दिलों में इस्लाम पक्का नहीं हुआ था कहने लगे।

وَإِذْ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ
مَا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُولُهُ إِلَّا غُرُورًا
(سورۃ الاحزاب پ ۲۱ آیت ۱۲)

और जब मुनाफ़िक़ और वह लोग जिनके दिलों में मरज़ है यूं कह रहे थे कि हम से तो अल्लाह ने और उसके रसूल ने महज़ धोखा ही का वादा कर रखा है।
(सूरतुल अहज़ाब प. 21 आयत 12)

और बहुत से लोग अपने घर जाने की इजाज़त मांगने लगे कि हमारे घर ग़ैर महफ़ूज़ हैं, आगे चल कर अल्लाह तआ़ला ख़बरदार करते हैं:-

قُلْ لَنْ يَنْفَعَكُمُ الْفِرَارُ اِنْ فَرَرْتُمْ مِّنَ الْمَوْتِ اَوِ الْقَتْلِ وَاِذًا لَّا تُمَتَّعُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا

(سوره الاحزاب، پ ۱۱ آیت ۱۶)

आप फ़रमा दीजिए कि तुम को भागना कुछ नफ़ा नहीं दे सकता अगर तुम मौत से या क़त्ल से भागते हो और इस हालत में बजुज़ थोड़े दिनों के ज़ियादा फ़ाइदा नहीं उठा सकते।

(सूरतुल अहज़ाब, प. 11, आयत 16)

फिर आगे फ़रमाते हैं और बच्चों तुम भी इसको अच्छी तरह अपने दिल में जगह दे लो, यह बड़े काम की बात है।

قُلْ مَنْ ذَا الَّذِىْ يَعْصِمُكُمْ مِّنَ اللّٰهِ اِنْ اَرَادَ بِكُمْ سُوْٓءًا اَوْ اَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً وَلَا يَجِدُوْنَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا (سوره احزاب، پ ۲۱، آیت ۱۷)

ये भी फ़रमा दीजिए कि वह कौन है जो तुमको ख़ुदा से बचा सके अगर वह तुम्हारे साथ बुराई करना चाहे या वह कौन है जो ख़ुदा के फ़ज़्ल से तुम को रोक सके अगर वह तुम पर फ़ज़्ल करना चाहे और ख़ुदा के सिवा न कोई अपना हिमायती पाएंगे न मददगार।

(सूर-ए-अहज़ाब, प. 21 आयत 17)

फिर और आगे चलकर अल्लाह तआला फ़रमाते हैं:-

وَرَدَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَنَالُوْا خَيْرًا وَكَفَى اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ الْقِتَالَ وَكَانَ اللّٰهُ قَوِيًّا عَزِيْزًا

(سوره احزاب، پ ۲۱، آیت ۲۵)

और अल्लाह तआला ने काफ़िरों को लौटा दिया गुस्सा में भरा हुआ कि उनकी कुछ भी मुराद पूरी न हुई और जंग में अल्लाह तआला मुसलमानों के लिए आप ही काफ़ी हो गया और अल्लाह तआला बड़ी कुव्वत वाला बड़ा ज़बरदस्त है।

(सूर-ए-अहज़ाब, प. 21, आयत 25)

बच्चो! मुसलमान अल्लाह पर भरोसा रखें और साबित क़दम रहें तो अल्लाह तआला ज़रूर मुसलमानों को कामियाब करता है, जिस तरह उसने जंगे अहज़ाब में क्या ख़्वाह काफ़िरों की तादाद कितनी ही जियादा क्यों न हो।

इसी साल बच्चों काफ़िरों से और कई छोटी-छोटी जंगें हुई, एक जंग में मुसलमानों ने दरख़्तों के पत्ते झाड़-झाड़ कर खाए एक जंग में जो समुंद्र के किनारे पर हो रही थी और मुसलमानों के पास खाने के लिए कुछ न बचा था, अल्लाह तआला ने एक बहुत बड़ी मछली समुंद्र से बाहर निकाल दी जिसको मुसलमानों ने कई रोज़ तक खाया।

क़िस्स-ए-हुदेबीया सन् 6 हि0

हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मदीना मुनव्वरा में रहते हुए छः साल हुए थे कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़्वाब में देखा कि आप मक्का तशरीफ़ ले गए और आपने उमरा अदा किया, चूनांचे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ मक्का मुअज़्ज़मा जाकर उमरा करने की तैयारी शुरू कर दीं, मक्का के काफ़िरों ने कहा कि हम मक्का में आपको हरगिज़ न आने देंगे, ग़रज़ काफ़िरों से गुफ़्तगू के

बाद चंद बातों पर सुलह हुई, इनमें यह बात भी थी कि आप आईंदा साल आकर उमरा करें, और दस बरस तक हमारे और आपके दरमियान कोई लड़ाई न हो और काफ़िरों को दोस्त क़बीलों से मुसलमान न लड़ें और मुसलमान के दोस्त क़बीलों से काफ़िर न लड़ें, वहां दो क़बीले थे, एक क़बीला काफ़िरों का साथी था और दूसरा क़बीला मुसलमानों का साथी था, इसको सुलह हुदैबीया कहते हैं, हुदैबीया एक कुवें का नाम है, जिस मक़ाम पर यह सुलह हुई थी, आप इस सुलह के बाद मदीना तैय्यिबा तशरीफ़ ला रहे थे कि रास्ते में अल्लाह ने सूरह फ़त्ह नाज़िल की जिसमें इस सुलह को फ़त्ह क़रार दिया, चूंकि यह सुलह आईंदा फ़त्हे मक्का का सबब बनी, अल्लाह तआला फ़रमाते हैं:-

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ اِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِيْنًا (سورة الفتح پ ٢٦)

बेशक हम ने आपको एक खुल्लम खुल्ला फ़त्ह दी।

(सूरतुल फ़त्ह प. 26)

इसी साल बच्चों! और कई जंगें छोटी-छोटी काफ़िरों और यहूदियों से हुई जिनमें से जंगे ख़ैबर मशहूर है, इस जगह सात क़िले थे यहूदियों ने सबके दरवाज़े बन्द कर दिए कि इसमें घुस कर बैठ गए और अंदर से तीर अंदाज़ी करते रहे, आख़िर एक-एक करके सब क़िले फ़त्ह हो गए।

इस साल ख़ैबर में एक यहूदी औरत ने गोश्त में ज़हर मिला कर आपको दिया, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक लुक़्मा मुंह में डाला और फ़रमाया कि इस गोश्त ने मुझ से कह दिया कि

मुझमें ज़हर मिला है।

उमरतुल क़ज़ा सन् 7 हि0

बच्चो! सन् 6 हि0 में जैसा कि सुलह हुदैबीया के ज़रीए शर्त ठहरी थी, हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सन् 7 हि0 में उमरा के लिए मक्का मुअज़्ज़मा तशरीफ़ ले गए और अपने साथ उन सहाबा को भी लिया जो इस सुलह के वक़्त मौजूद थे, इस साल चंद छोटी-छोटी लड़ाईयां हुईं।

जंगे हुनैन

क़िस्सा फ़त्हे मक्का सन 8 हि0

बच्चो! सुलह हुदैबीया में तुम को सुनाया जा चुका हे कि इसमें एक शर्त यह भी थी कि मुसलमानों के दोस्त क़बीलों से काफ़िर न लड़ें, और काफ़िरों के दोस्त क़बीलों से मुसलमान दस साल तक न लड़ें।

बच्चो, इन दोनों क़बीलों में जंग हो गई और मक्का के क़ुरैश काफ़िरों ने सुलह के ख़िलाफ़ अपने दोस्त क़बीले की ख़ुफ़ीया मदद की।

हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने काफ़िरों की इस वादा ख़िलाफ़ी पर और अहद को तोड़ने पर बारह हज़ार मुसलमानों का लश्कर ले कर मक्का पर लश्कर कशी की, काफ़िरों ने मुक़ाबला किया, बहुत कुफ़्फ़ार मारे गए और बड़े-बड़े सरदार शहर छोड़ कर भाग गए, और जो हाज़िर हुए आपने उनकी जां बख़्शी फ़रमाई, ख़ाना काबा के बुतों को आपने ख़ुद तोड़ा, क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला ने इसको सूर-ए-बनी इस्राईल में इस तरह

बयान फ़रमाया है।

وَقُلْ رَّبِّ اَدْخِلْنِیْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّاَخْرِجْنِیْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّاجْعَلْ لِّیْ مِنْ لَّدُنْکَ سُلْطَانًا نَّصِیْرًا۔ وَقُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ اِنَّ الْبَاطِلَ کَانَ زَهُوْقًا۔

(سورہ بنی اسرائیل پ ۱۵، آیت ۸۰)

और आप यूं दुआ कीजिए कि ऐ रब मुझको ख़ूबी के साथ पहुंचाईयो और मुझे ख़ूबी के साथ लीजियो और मुझको अपने पास से ऐसा ग़लबा दीजियो जिसके साथ नुसरत हो और कह दीजिए कि हक़ आया और बातिल गया गुज़रा हुआ (और) वाक़ेई बातिल चीज़ तो (यूं ही) आती जाती रहती है।

(सूर-ए-बनी इस्राईल प. 15, आयत 80)

मक्का मुअज़्ज़मा के बाहर कुछ बड़े-बड़े बुत थे उनको भी तोड़ने के लिए सहाबा को भेजा गया।

बच्चो! फ़त्हे मक्का के बाद दूसरी छोटी-छोटी जंगें हुईं, फिर एक बड़ी जंग हुनैन के नाम से हुई। हुनैन एक मक़ाम है मक्का और ताइफ़ के दरमियान, यहां काफ़िरों के कुछ क़बीलों से फ़त्हे मक्का के दो हफ़्ता बाद लड़ाई हुई, मुसलमान बारह हज़ार थे और मुश्रिकीन चार हज़ार, बाज़ मुसलमान अपना मजमअ़ देखकर इस तरह कहने लगे कि इससे शेख़ी सी मालूम होती थी कि हम आज किसी तरह नहीं हार सकते, लड़ाई शुरू हुई और पहले मुसलमानों को फ़त्ह हुई, बाज़ मुसलमान माले ग़नीमत को जमा करने लगे उस वक़्त काफ़िर टूट पड़े वह बड़े तीर अंदाज़ थे, मुसलमानों पर तीर

बरसाने शुरू कर दिए, इस घबराहट में मुसलानों के पांव उखड़ गए, सिर्फ़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मअ़ चंद सहाबा के मैदान में रह गए, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से मुसलमानों को आवाज़ दिलवाई, फिर सब लौट कर दोबारह जमा हुए और काफ़िरों से मुक़ाबला किया, आसमानों से फ़रिश्तों की मदद आई, काफ़िर भागे और बहुत से क़त्ल हुए, फिर इनमें से बहुत से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आकर मुसलमान हुए, सूर-ए-तौबा में अल्लाह तआ़ला ने इसको इस तरह बयान किया है, और मुसलमानों को नसीहत की है।

لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ فِيْ مَوَاطِنَ كَثِيْرَةٍ وَيَوْمَ حُنَيْنٍ اِذْ اَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْئًا وَضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ وَلَّيْتُمْ مُدْبِرِيْنَ
(سورة التوبه پ ١٠ آيت ٢٥)

ख़ुदा तआ़ला ने तुम को बहुत मौक़ों पर ग़लबा दिया जब तुमको अपने मजमअ़ की कसरत से ग़र्रा हो गया था, और हुनैन के दिन भी फिर वह कसरत तुम्हारे लिए भी कार आमद न हुई और तुम पर ज़मीन बावुजूद व अपनी फ़राख़ी के तंगी करने लगी,

(सूरतुत्तौबा प. 10, आयत 25)

ثُمَّ اَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَنْزَلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَذٰلِكَ جَزَآءُ الْكٰفِرِيْنَ (سورة التوبه پ ١٠، آيت ٢٦)

फिर तुम पीठ फेर कर भाग खड़े हुए फिर अल्लाह तआला ने अपने रसूल पर और दूसरे मुसलमानों पर तसल्ली नाज़िल फ़रमाई और ऐसे लश्कर नाज़िल फ़रमाए जिन को तुम ने नहीं देखा और काफ़िरों को सज़ा दी, और यह काफ़िरों की सज़ा है।

(सूरतुत्तौबा प. 10, आयत 26)

बच्चो! आपने देखा कि अल्लाह तआला ने मुसलमानों को किस तरह सबक़ दिया कि अपनी ज़ियादती पर फ़ख़ न करना चाहिए, और हमेशा सोचना चाहिए कि फ़त्ह सिर्फ़ अल्लाह की मदद से होगी, कम हों तब भी और ज़ियादा हों जब भी सिर्फ़ अल्लाह पर भरोसा रखना चाहिए, यह सबक़ इसलिए भी दिया होगा कि आइंदा भी मुसलमान इस बात को याद रखें।

अल्लाह पाक हम सबको अपने ऊपर भरोसा रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए आमीन।

ग़ज़्व-ए-हुनैन के बाद कुछ और छोटी-छोटी लड़ाईयां हुईं, और यह साल ख़त्म हो गया।

जंगे तबूक सन् 9 हि0

बच्चो! तबूक एक मक़ाम है मुल्के शाम में, हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब फ़त्हे मक्का और ग़ज़्व-ए-हुनैन से फ़ारिग़ हुए तो आपको ख़बर हुई कि रुम का बादशाह हेरक़ल मदीना मुनव्वरा प़र फ़ौज भेजना चाहता है और वह फ़ौज तबूक के मक़ाम पर जमा की जाएगी, क़ब्ल इसके कि वह हमला करे आपने खुद ही मुक़ाबला के लिए सफ़र का इरादा किया और मुसलमानों में इसका एलान कर दिया, चूंकि यह ज़माना बहुत गर्मी का था और

मुसलमानों के पास सामान बहुत कम था सफ़र दूर दराज़ का था इसलिए इस ग़ज़वा में जाना बड़ी हिम्मत का काम था, अल्लाह तआला ने इस जिहाद में शिरकत के लिए मुसलमानों को सूर-ए-तौबा में इस तरह तरग़ीब दिलाई, फ़रमाया:-

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَالَكُمْ اِذَاقِيْلَ لَكُمُ انْفِرُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اثَّاقَلْتُمْ اِلَى الْاَرْضِ اَرَضِيْتُمْ بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا مِنَ الْاٰخِرَةِ فَمَا مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا فِى الْاٰخِرَةِ اِلَّا قَلِيْلٌ۔ (سورة التوبه پ ۱۱، آيت ۳۸)

ऐ ईमान वालो! तुम लोगों को क्या हुआ? जब तुम से कहा जाता है कि अल्लाह की राह में जिहाद के लिए निकलो तो ज़मीन को लगे जाते हो क्या तुमने आख़िरत के एवज़ दुनियावी ज़िन्दगी पर क़नाअत कर ली, सो दुनिया की ज़िन्दगी का सामान आख़िरत के मुक़ाबला में बहुत थोड़ा है।

(सूरतुत्तौबा प. 11, आयत 38)

बच्चो! तरग़ीब दिलाने के लिए अल्लाह तआला ने और भी कई आयात इस के आगे बयान फ़रमाई हैं, हमने यहां सिर्फ़ एक आयत लिखी है जब तुम क़लाम मजीद ख़ुद पढ़ोगे तो इंशा अल्लाह सब ख़ुद पढ़ोगे।

इसी जिहाद में शिरकत के लिए मुसलमानों को जोश दिलाते हुए अल्लाह तआला फ़रमाते हैं।

اِنْفِرُوْا خِفَافًا وَّثِقَالًا وَّ جَاهِدُوْا بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ۔
(سورة التوبه پ ١٠ آيت ٤١)

निकल पड़ो (ख़्वाह) थोड़े सामान से (ख़्वाह) ज़ियादा सामान से और अल्लाह की राह में अपने माल और जान से जिहाद करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम यक़ीन रखते हो तो देर मत करो।

(सूरतुत्तौबा प. 10, आयत 41)

बच्चो! जो मुनाफ़िक़ थे और सच्चे मुसलमान न हुए थे वह इतनी दूर जिहाद में जाने से बहाने करने लगे और रुख़्सत मागने लगे तो अल्लाह तआ़ला ने इनकी पोल खोल दी और इसी सूरत में इस तरह फ़रमाया:-

لَوْكَانَ عَرَضًا قَرِيبًا وَسَفَرًا قَاصِدًا الَّاتَّبَعُوْكَ
وَلٰكِنْ بَعُدَتْ عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ وَسَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَوِا
سْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ يُهْلِكُوْنَ اَنْفُسَهُمْ وَاللّٰهُ
يَعْلَمُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ (سورة التوبه پ ۱۰ آیت ۴۲)

अगर कुछ लगते हाथ माल मिलने वाला होता और सफ़र भी मामूली होता तो यह मुनाफ़िक़ ज़रूर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ हो लेते लेकिन इनको तो मुसाफ़त ही दूर दराज़ मालूम होने लगी और अभी ख़ुदा की क़स्में खा जाएंगे, अगर हमारे बस की बात होती तो तुम्हारे साथ चलते, यह लोग झूठ बोल कर अपने आप को तबाह कर रहे हैं और अल्लाह जानता है कि यह लोग यक़ीनन झूठे हैं।

(सूरतुत्तौबा प. 10 आयत 42)

बच्चो! मुसलमानों का तीस हज़ार लश्कर इस सख़्त गर्मी और

कम सामानी के बाइस भी जिहाद पर दूर दराज़ रवाना हो गया, क्योंकि इनके प्यारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हुक्म था लेकिन बाज़ मुनाफ़िक़ लोग न गए और बहाने बना कर रह गए अल्लाह तआला ने इस सूर-ए-तौबा में इनकी सख़्त मुज़म्मत की है, इनमें से सिर्फ़ एक दो आयत नक़्ल की जाती है। फ़रमाते हैं:-

فَرِحَ الْمُخَلَّفُوْنَ بِمَقْعَدِهِمْ خِلٰفَ رَسُوْلِ اللّٰهِ وَكَرِهُوْٓا اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَقَالُوْا لَا تَنْفِرُوْا فِى الْحَرِّ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ اَشَدُّ حَرًّا، لَوْ كَانُوْا يَفْقَهُوْنَ (سورة التوبه پ ١٠ آيت ٨١)

यह पीछे रह जाने वाले ख़ुश हो गए रसूलुल्लाह के जाने के बाद अपने बैठे रहने पर और नागवार हुआ जिहाद करना अल्लाह की राह में अपने मालों और जानों के साथ और (दूसरों को) कहने लगे कि तुम लोग गर्मी में मत निकलो आप कह दीजिए कि जहन्नम की आग इससे भी ज़ियादा गर्म है क्या ख़ूब होता अगर वह समझते

(सूरतुत्तौबा प. 10 आयत 81)

فَلْيَضْحَكُوْا قَلِيْلًا وَّلْيَبْكُوْا كَثِيْرًا جَزَآءً بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ (سورة التوبه پ ١٠ آيت ٨٢)

तो थोड़े दिन हंस लें और बहुत दिनों (आख़िरत में) रोते रहें, इन कामों के बदले में जो कुछ किया करते थे।

(सूरतुत्तौबा प. 10 आयत 82)

यह लश्कर तबूक में ठहरा और शाहे रुम के लश्कर का इंतिज़ार करते रहे लेकिन हेरक़ल शाहे रुम ने डर की वजह से अपना लश्कर न भेजा और दो माह के क़ियाम के बाद आप मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ ले आए।

बच्चो! जंगे तबूक का क़िस्सा हमें सिखाता है कि जब काफ़िरों के मुक़ाबला में मुसलमानों को जिहाद के लिए बुलाया जाए तो हम सबको बिला ख़ौफ़ व ख़तर इसमें शामिल हो जाना चाहिए, ख़्वाह जिहाद के लिए दूर जाना, मौसम कितना ही गर्म हो या सर्द, माल हो या न हो, हम सच्चे मुसलमान तब ही बन सकते हैं अल्लाह हम सबको ऐसा ही मुसलमान बनाए आमीन।

हुज्जतुल विदाअ़ सन् 10 हि0

बच्चो! इस साल हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज को तशरीफ़ ले गए, आपके हज की ख़बर सुनकर मुसलमान जमा होने शुरू हो गए और एक लाख से ज़्यादा आदमी जमा हो गए, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ुत्बा में ऐसी बातें फ़रमाईं जैसे कोई विदाअ़ कहता है इसी वास्ते इस हज को हुज्जतुल विदाअ़ कहते हैं, इस हज में अरफ़ा के दिन सूर-ए-माइदा की यह आयत नाज़िल हुई।

اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِىْ
وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا۔ (سورہ مائدہ: ۱۰ آیت ۳)

आज के दिन तुम्हारे लिए तुम्हारे दीन को मैंने कामिल कर दिया और मैंने तुम पर अपना इंआम तमाम कर दिया और मैंने इस्लाम को तुम्हारा दीन बनने के लिए

पसंद कर लिया। (सूरए माइदा प. 6 आयत 3)

इस आयत के नाज़िल होने के बाद क़रीब तीन माह हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ज़िन्दा रहे, आपने इस हुज्जतुल विदाअ़ में ख़ुत्बा इरशाद फ़रमाया जिनमें से चंद बातें यह हैं।

अल्लाह के साथ किसी को शरीक न करो

बच्चो! जब हम कलेमा पढ़ते हैं **लाइला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह** तो हम अल्लाह तआ़ला से इक़रार करते हैं वह इक़रार जो सबसे पहले अल्लाह तआ़ला की तारीफ़ में इस किताब क़ुरआन पाक में से नक़्ल किए गए हैं, यानी ये कि अल्लाह एक है उसके सिवा कोई इबादत के क़ाबिल नहीं, हम जो कुछ मांगें सिर्फ़ उससे, किसी दूसरे से मांगना या मदद तलब करना, या किसी के नाम की नज़्र व नियाज़ करना यह सब शिर्क हैं, अल्लाह पाक ने क़ुरआन मजीद में शिर्क को ज़ुल्म लिखा है और फ़रमाया है कि मैं सब कुछ मुआ़फ़ कर सकता हूं सिवाए शिर्क के।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدِ افْتَرٰى اِثْمًا عَظِيْمًا (سورة النسآء پ ۵ آيت ۴۸)

तहक़ीक़ अल्लाह नहीं बख़्शता है यह कि उसके साथ किसी को शरीक ठहराए और बख़्शता है उसके एलावा जिसको चाहे और जिसने शरीक ठहराया अल्लाह का उसने बड़ा तूफ़ान बांधा।

(सूरतुन निसाअ प. 5 आयत, 48)

बच्चो! मां-बाप का कहना मानना और उनकी फ़रमांबरदारी

करना हर अच्छे बच्चे के लिए ज़रूरी है और सब अच्छे बच्चे ऐसा करते हैं, अल्लाह तआ़ला भी बार-बार ताकीद करते हैं कि मां-बाप का कहना मानो, लेकिन जब वह शिर्क करने को कहें तो फिर मां-बाप का कहना भी न मानना चाहिए

وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا وَاِنْ جَاهَدَاكَ لِتُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا
(سورة العنكبوت، پ ۲۰ آیت ۸)

और हमने इंसान को अपने मां-बाप के साथ अच्छी तरह रहने की वसीयत की है और अगर वह तुझ से रवा करें कि तू शिर्क पकड़ मेरा तो इनका कहना न मान।

(सूरतुल अंकबूत प. 20 आयत, 8)

बच्चो! दुनिया में अल्लाह के नेक बन्दे गुज़रे हैं वह अपनी औलाद सबको पहले यही तालीम देते थे कि बेटे तुम अल्लाह के साथ किसी को शरीक न करना, हज़रत लुक़्मान अलैहिस्सलाम का क़िस्सा आप पहले सुन चुके हैं उन्होंने अपने बच्चे से कहा।

وَاِذْ قَالَ لُقْمٰنُ لِابْنِهٖ وَهُوَ يَعِظُهٗ يٰبُنَيَّ لَا تُشْرِكْ بِاللّٰهِ اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ (سورۃ لقمان پ ۲۱ آیت ۱۳)

और जब कहा लुक़्मान ने अपने बेटे को जब इसको समझाने लगा ऐ बेटे शरीक न ठहराईयो अल्लाह का बेशक शरीक बनाना बड़ी बे-इंसाफी है।

(सूरतुल लुक़्मान प. 21 आयत 13)

बच्चो! शिर्क करने वाले के और दूसरे नेक अअ़्माल भी ख़त्म

हो जाते हैं अल्लाह तआला फ़रमाते हैं

لَئِنْ اَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ (سورة الزمر پ ۲۴، آیت ۶۵)

अगर तुमने शरीक माना इकारत जाएंगे तेरे अमल और तू हो जाएगा ख़सारा वालों में से।

(सूरतुल ज़ुमर प. 24, आयत 65)

नमाज़

बच्चो! नमाज़ हमारे दीन का सुतून है जिस तरह सुतून के बग़ैर कोई इमारत बाक़ी नहीं रहती, उसी तरह नमाज़ के बग़ैर दीन क़ाइम नहीं रहता, क़ुरआन पाक में नमाज़ के मुतअ़ल्लिक़ जो आयतें आई हैं उनमें से चंद नक़्ल करते हैं, बाक़ी आप ख़ुद पढ़ेगा।

اَلَّذِيْنَ اِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِى الْاَرْضِ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ وَاَمَرُوْا بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ وَلِلّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ (سورة الحج پ ۱۷، آیت ۴۱)

वह लोग कि अगर हम उनको मुल्क में हुकूमत दें खड़ी करें नमाज़ और दें ज़कात और हुक्म करें भले काम का और मना करें बुरे कामों से और अल्लाह के अख़्तियार में है आख़िर हर काम।

(सूरतुल हज प. 17, आयत 41)

दूसरी जगह फ़रमाया:

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ هُمْ فِىْ صَلٰوتِهِمْ خٰشِعُوْنَ (سورة المؤمنون پ ۱۸ آیت ۱

अलबत्ता मुमिनों ने कामियाबी हासिल कर ली जो अपनी नमाज़ों में आजिज़ी करने वाले हैं।

(सूरतुल मुमिनून प. 18 आयत 1)

और बच्चो नमाज़ न पढ़ने वालों के लिए केसी सख़्त वईद है।

وَاَقِيْمُو الصَّلٰوةَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ

(سورہ روم پ ۲۱ آیت ۳۱)

और नमाज़ को क़ाइम करो और मुश्रिकों में से न हो जाओ। *(सूरतुर रुम प. 21 आयत 31)*

और नमाज़ की तारीफ़ करते हुए अल्लाह तआला फ़रमाते हैं:-

اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ

(سورہ العنکبوت پ ۲۱ آیت ۴۵)

तहक़ीक़ नमाज़ बुराईयों से रोकने वाली है।

(सूरतुल अंकबूत प. 21 आयत 45)

रोज़ा

बच्चो! तौहीद और नमाज़ के बाद इस्लाम का रुक्न रोज़ा है जो रमज़ानुल मुबारक में एक माह रखे जाते हैं, यह हम सब पर फ़र्ज़ हैं और हर मुसलमान के लिए ज़रूरी है कि रमज़ानुल मुबारक में रोज़े रखे।

क़ुरआन पाक में से हम रोज़े के मुतअल्लिक़ चंद आयतें नक़्ल करते हैं

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ

(سورہ البقرہ پ ۲ آیت ۱۸۲)

ऐ ईमान वालो तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किए गए जैसे तुम से पहले लोगों पर फ़र्ज़ किए गए ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ। (सूरतुल बक़रा प. 2 आयत 182)

फिर फ़रमायाः-

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِى اُنْزِلَ فِيْهِ الْقُرْآنُ هُدىً لِّلنَّاسِ وَبَيِّنَاتٍ مِّنَ الْهُدٰى وَالْفُرْقَانَ فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ (سورة البقرة پ ۲، آیت ۱۸۵)

रमज़ान का महीना वह है जिसमें क़ुरआन नाज़िल किया गया जिसमें लोगों के लिए हिदायत और निशानियां हैं ऐसी हिदायत की बातें जो सहीह और ग़लत में फ़ैसला करने वाली हैं तो जो इस महीने को पाए रोज़े रखे। (सूरतुल बक़रा प. 2 आयत 185)

ज़कात

बच्चो! इस्लाम का चौथा फ़रीज़ा ज़कात है, क़ुरआन पाक में बहुत जगह नमाज़ के साथ ज़कात देने की ताकीद आई है हमको इससे ग़ाफ़िल नहीं होना चाहिए जिसके पास एक सौ रुपये हों उसको ढ़ाई रुपये ज़कात ग़रीबों को देनी चाहिए, अगर सब लोग अपनी ज़कात देते रहें तो मुसलमानों में कोई ग़रीब न रहे, हमने अपने उसूलों को छोड़ दिया और हम दूसरों की तरफ़ देखते हैं हालांकि यह सब तरीक़े अल्लाह से दूर ले जाने वाले हैं, हम सिर्फ़ चंद आयतें क़ुरआन मजीद से नक़्ल करते हैं, मुसलमानों को अल्लाह तआला हुक्म देते हैं।

وَاَقِیْمُوا الصَّلٰوۃَ وَاٰتُوا الزَّکٰوۃَ (سورہ بقرہ پ ۱ آیت ۴۳)

नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात देते रहो।

(सूरतुल बक़रा प. 1 आयत 43)

बच्चो! ज़कात हमारे यहां नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पहले दूसरी उम्मतों पर भी फ़र्ज़ थी, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का क़ौल सूरह मरयम में क़ुरआन मजीद में बयान फ़रमाया है

وَاَوْصَانِیْ بِالصَّلٰوۃِ وَالزَّکٰوۃِ مَا دُمْتُ حَیًّا

(سورہ مریم پ ۱۶ آیت ۳۱)

मुझे हुक्म दिया गया है नमाज़ का और ज़कात का जब तक मैं ज़िन्दा रहूं,

(सूरतुल मरयम प. 16 आयत 31)

बच्चो! लोग यह समझ कर ज़कात नहीं देते कि पैसे ख़र्च हो जाएंगे हालांकि अल्लाह तआला इसको बढ़ाते हैं, यह अल्लाह का वादा है क़ुरआन मजीद में, और बच्चो, अल्लाह तआला का वादा ग़लत नहीं हो सकता, अल्लाह पाक ख़ुद इसकी मिसाल देते हैं, लो सुनो:-

مَثَلُ الَّذِیْنَ یُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِیْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ وَاللّٰهُ یُضٰعِفُ لِمَنْ یَّشَآءُ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِیْمٌ

(سورۃ البقرہ پ ۳ آیت ۲۶۱)

जो लोग अपने माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं उनकी मिसाल ऐसी है जैसे एक दाना की हालत जिसमें सात बालें उगाई हों और हर बाल में सौ दाने हों और

अल्लाह यह ज़ियादती जिसको चाहे देता है और अल्लाह तआला बड़ी वुसअ़त वाले बड़े इल्म वाले हैं।

(सूरतुल बक़रा प. 3 आयत 261)

बच्चो! अल्लाह तआ़ला ने इस मिसाल में हम को बताया है कि जिस तरह एक अनाज का दाना ज़मीन में बोया जाता है और बज़ाहिर यह मालूम होता है कि वह दाना ज़मीन में दफ़न हो गया, लेकिन अल्लाह तआ़ला इस अनाज के दाना में से एक पौधा पैदा करते हैं जिसमे सात बालें होती हैं और हर बाल में तक़रीबन सौ दाने होते हैं, इसी तरह जो लोग ज़कात देते हैं या ख़ैरात देते हैं तो बज़ाहिर यह मालूम होता है कि वह पैसा जाता रहा, वह पैसा जाता नहीं अल्लाह तआ़ला इस पैसे को कई गुना करके उस आदमी को वापस करते हैं।

बच्चो! तुम ने देखा कि मालदार होने का यह कैसा अच्छा तरीक़ा है, और साथ के साथ अल्लाह तआ़ला की रज़ा भी गोया आम के आम और गुठलियों के दाम।

हज

बच्चो! इस्लाम का पांचवां रुक्न हज है और जिसके पास इतने पैसे हों कि हज कर सके उस पर हज करना फ़र्ज़ है, मक्का मुअज़्ज़मा जाकर अरफ़ात में जमा होना और इसके सब अरकान अदा करने को हज कहते हैं, यह हज जैसा कि तुम्हें मालूम है बक़रईद के अरफ़ा वाले दिन होता है, इस रोज़ तमाम दुनिया से मुसलमान जूक़ दर जूक़ हवाई जहाज़ों में, पानी के जहाज़ों में मोटरों और बसों में, मुख़्तलिफ़ सवारियों में और पैदल लाखों की तादाद में अरफ़ात के मैदान में जमा होकर अल्लाह तआ़ला से दुआ मांगते

हैं, और अल्लाह तआला भी कहते हैं कि जिसने हज कर लिया मैं उसके तमाम उम्र के गुनाह मुआफ़ कर देता हूं, बच्चो तुम्हें मालूम है कि मक्का मुअज़्ज़मा में ख़ाना काबा है जिस तरफ़ हम मुंह करके नमाज़ पढ़ते हैं इसको बैतुल्लाह यानी अल्लाह का घर कहते हैं, अल्लाह तआला के हुक्म से यह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने बनाया था, हाजी और दीगर मुसलमान रात दिन इसका तवाफ़ करते रहते हैं यानी इसके गिर्द चक्कर लगाते हुए अल्लाह तआला की तारीफ़ करते रहते हैं और दुआएं मांगते रहते हैं, इस तरह जिस तरह एक परवाना रौशनी के गिर्द घूमता रहता है, इस तरह अल्लाह तआला के आशिक़ इस घर के गिर्द घूमते हुए उसकी तारीफ़ बयान करते रहते हैं।

बच्चो! जब तुम बड़े हो जाओ और बालिग़ हो जाओ तो इस फ़र्ज़ को ज़रूर अदा करना, हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जिसका मतलब यह है कि जिस पर हज फ़र्ज़ हुआ और उसने न किया तो वह यहूदी होकर मरे या नसरानी होकर। तौबा, तौबा।

अल्लाह तआला हम सबको मुसलमान रह कर मौत दे, आमीन।

अब चंद आयतें हज के मुतअल्लिक़ हम क़ुरआन मजीद में से नक़्ल करते हैं।

وَاِذْ بَوَّانَا لِاِبْرَاهِيْمَ مَكَانَ الْبَيْتِ اَنْ لَّاتُشْرِكْ بِىْ
شَيْئًا وَطَهِّرْ بَيْتِىَ لِلطَّائِفِيْنَ وَالْقَائِمِيْنَ وَالرُّكَّعِ
السُّجُوْدِه وَاَذِّنْ فِى النَّاسِ بِالْحَجِّ يَاْتُوْكَ رِجَالًا
وَّعَلٰى كُلِّ ضَامِرٍ يَّاْتِيْنَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ
(سورة الحج پ ۱۷ آیت ۲۶)

और जबकि हमने इब्राहीम को ख़ाना काबा की जगह बतला दी और हुक्म दिया कि मेरे साथ किसी चीज़ को शरीक मत करना और मेरे इस घर को तवाफ़ करने वालों के और नमाज़ में क़ियाम व रुकूअ़ व सज्दा करने वालों के वास्ते पाक रखना और इब्राहीम से यह भी कहा गया कि लोगों में हज फ़र्ज़ होने का एलान कर दो लोग तुम्हारे पास हज को चले आवेंगे प्यादा भी और दुबली ऊंटनियों पर भी जो कि दूर दराज़ रास्तों से पहुंची होंगी। (सूरतुल हज प. 17 आयत 26)

मां-बाप की इताअत

बच्चो! अल्लाह तआ़ला ने अपनी और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इताअत के बाद हम पर मां-बाप की इताअत बहुत ज़रूरी रखी है और क़ुरआन मजीद में बार-बार मां-बाप की इताअत और फ़रमांबरदारी की ताकीद की है।

बच्चो! हम कुछ भी न थे, अल्लाह तआ़ला ने हमको मां-बाप की शफ़क़त के ज़रीए से इतना बड़ा किया, हम जितनी भी उनकी ख़िदमत करें उनके एहसान नहीं उतार सकते क़ुरआन मजीद में हम चंद जगह से मां-बाप की इताअत की मुतअ़ल्लिक़ नक़्ल करते हैं।

وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْا اِلَّا اِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ
اِحْسَانًا۔ اِمَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَا اَوْ كِلَا
هُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَا اُفٍّ وَّلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَّهُمَا قَوْلًا
كَرِيْمًا وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ
رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيَانِيْ صَغِيْرًا۔
(سورہ بنی اسرائیل پ ۱۵، آیت ۲۳)

और तेरे रब ने हुक्म दिया कि सिवाए उसके किसी की इबादत न करो और मां-बाप के साथ अच्छा सुलूक किया करो, अगर तेरे पास उनमें से एक या दोनों बुढ़ापे को पहुंच जाएं तो उनको कभी हूं भी न कहना न उनको झिड़कना बल्कि ख़ूब अदब से बात करना और उनके सामने शफ़क़त से और आजिज़ी से झुके रहना और यूं दुआ करते रहना कि ऐ मेरे परवरदिगार इन दोनों पर रहमत फ़रमाइए जैसा कि उन्होंने बचपन में मुझको पाला और परवरिश किया।

(सूरह बनी इस्राईल प. 15 आयत 23)

जिहाद

बच्चो! जिहाद के मुतअल्लिक़ क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआ़ला ने बहुत से अहकामात दिए हैं और नसीहतें की हैं, जिहाद का मक़सद यह है कि अल्लाह तआ़ला के दीन को दुनिया में ग़ालिब करने के लिए मुसलमानों को उन क़ौमों से लड़ना चाहिए जो अल्लाह और उसके रसूल की इताअ़त नहीं करते बल्कि शैतान के साथी हैं, और दुनिया में ऐसे कामों को रिवाज देते हैं जिनसे वह ख़ुश हो, इस मक़सद को हासिल करने के लिए अपनी जान भी अल्लाह के रास्ते में क़ुर्बानी करनी पड़े तो ख़ुशी-ख़ुशी क़ुर्बान कर दे।

बच्चो! जिहाद के लिए ज़रूरी है कि मुसलमान अपने सरदार की इताअ़त करें, जब तक वह अल्लाह और उसके रसूल के हुक्म के ख़िलाफ़ कोई हुक्म न दे चूनांचे अल्लाह तआ़ला क़ुरआन मजीद में फ़रमाते हैं:-

يَـاَيُّهَـا الَّـذِيْـنَ اٰمَـنُـوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَ اَطِيْعُو الرَّسُوْلَ وَاُولِـى الْاَمْـرِ مِـنْـكُمْ فَاِنْ تَنَازَعْتُمْ فِیْ شَیْءٍ فَرُدُّوْهُ اِلَـى اللّٰهِ وَالـرَّسُـوْلِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِـنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّاَحْسَنُ تَاْوِيْلًا

(سورۃ النسآء پ ۵ آیت ۵۹)

ऐ मुमिनो! अल्लाह की इताअत करो और रसूल की और अपने सरदारों की पस अगर तुम बाहम झगड़ो किसी मुआमला में तो अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ रुजूअ करो अगर तुम अल्लाह और रोज़े आख़िरत पर ईमान रखते हो बेहतर तरीक़ा है और उसका अंजाम बेहतर है *(सूरतुन निसा प. 5 आयत 59)*

बच्चो जिहाद के लिए सामान की भी बहुत ज़रूरत है, और मुसलमानों को लड़ाई के सामान से ग़ाफ़िल नहीं होना चाहिए। यह अल्लाह का हुक्म है, फ़रमाते हैं:-

يَـاَيُّهَـا الَّـذِيْـنَ اٰمَـنُـوْا خُذُوْا حِـذْرَكُمْ فَانْفِرُوْا ثُبَاتٍ اَوِ انْفِرُوْا جَمِيْعًا (سورہ النساء پ ۵، آیت ۷۱)

ऐ ईमान वालो! तुम अपनी हिफ़ाज़त का सामन करो ख़्वाह तुम तन्हा चलो या जमाअत के साथ

(सूरतुन निसा प. 5, आयत 71)

और फिर ज़ियादा ताकीद करते हुए दूसरी जगह फ़रमाते हैं

وَاَعِدُّوْا لَهُمْ مَّا اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ قُوَّةٍ وَّمِنْ رِّبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُوْنَ بِهٖ عَدُوَّ اللّٰهِ وَعَدُوَّكُمْ وَاٰخَرِيْنَ مِنْ دُوْنِهِمْ لَا تَعْلَمُوْنَهُمْ اَللّٰهُ يَعْلَمُهُمْ (سورۃ الانفال پ ۱۰ آیت ۶۰)

और उनके मुक़ाबला के लिए जिस क़द्र क़ुव्वत तुम से बन पड़े और जिस क़द्र घोड़े बांध सको मुहय्या करते रहो ताकि इसके ज़रीए से उनके दिलों में जो अल्लाह के दुश्मन और तुम्हारे दुश्मन है। धाक बिठाए रखे और उनके एलावा दूसरों के दिलो में भी, जिनसे तुम वाक़िफ़ नहीं उनको अल्लाह ही जानता है।

(सूरतुल अंफ़ाल प. 10, आयत 60)

अल्लाह तआला ने हथियार रखने का सबब भी ख़ुद ही बता दिया, पहले ज़माना में घोड़ों से क़ुव्वत होती थी आज इसकी जगह फ़ौज की क़ुव्वत के लिए जो दूसरे सामान हैं उनसे ज़ियादा से ज़ियादा तैयार रहना चाहिए।

बच्चो! जिहाद के लिए ज़रूरी है कि बहादुरी से लड़ा जाए और लड़ाई के मैदान से भागा न जाए, चुनांचे इसके लिए अल्लाह तआला का इरशाद है।

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا زَحْفًا فَلَا تُوَلُّوْهُمُ الْاَدْبَارَ وَمَنْ يُّوَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ دُبُرَهٗ اِلَّا مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ اَوْ مُتَحَيِّزًا اِلٰى فِئَةٍ فَقَدْ بَاءَ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَاْوٰهُ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ

(سورة الانفال پ ١٠، آيت ١٥)

ऐ ईमान वालो! जब तुम काफ़िरों से जिहाद में दू बदू मुक़ाबिल आ जाओ तो उनसे पुश्त मत फेरना और जो शख़्स इस मौक़ा पर मुक़ाबला के वक़्त पुश्त फेरेगा मगर हां जो लड़ाई के लिए पैंतरे बदला हो या अपनी

जमाअ़त की तरफ़ पनाह लेने आता हो वह मुस्तसना है बाक़ी और जो ऐसा करेगा वह अल्लाह के ग़ज़ब में आ जाएगा और उसका ठिकाना दोज़ख़ होगा और वह बहुत ही बुरी जगह है।

(सूरतुल अंफ़ाल प. 10, आयत 15)

यानी अपनी फ़ौज से मिलने के लिए पीठ फेरी जा सकती है या लड़ाई का पेंतरा या कोई चाल चलने के लिए पीठ फेरी जा सकती है, भागने के लिए अगर कोई पीठ फेरेगा तो उस पर अल्लाह का ग़ज़ब होगा उसका ठिकाना दोज़ख होगा।

बच्चो! अल्लाह तआ़ला किसी पर ज़ुल्म करना नहीं चाहता, काफ़िर अगर लड़ाई बंद करने के लिए सुलह करना चाहें तो अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं:-

وَاِنْ جَنَحُوْا لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ اِنَّهٗ هُوَالسَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ (سورۃ الانفال پ ١٠ آیت ٦١)

अगर वह सुलह के लिए झुकें तो आप भी उन्हें अपना लीजिए और अल्लाह पर भरोसा रखिए बेशक वह सुनने वाला और इल्म रखने वाला है।

(सूरतुल अंफ़ाल प. 10, आयत 61)

और अगर काफ़िर लड़ते रहें तो मुसलमानों को हुक्म है:-

وَقَاتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَاتَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ كُلُّهٗ لِلّٰهِ فَاِنِ انْتَهَوْا وَاِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ۔

(سورۃ الانفال پ ١٠ آیت ٣٩)

मुसलमानो! तुम इनसे लड़ते रहो ताआंकि फ़ित्ने का नाम व निशान बाक़ी न रहे और दीन तमामतर अल्लाह का हो जाएगा अगर वह लोग बाज़ आ गए तो अल्लाह उनके अअ़माल को देख रहा है।

(सूरतुल अंफ़ाल प. 10 आयत 39)

बच्चो! जिस वक़्त कुफ़्फ़ार से मुक़ाबला हो तो अल्लाह को बहुत याद करना चाहिए, क्योंकि कामियाबी सिर्फ़ अल्लाह ही से मिलती है, न हथियारों से मिलती है न फ़ौज की कसरत से मिलती है जैसा तुम को जंगे हुनैन में बताया जा चुका है, अल्लाह तआ़ला ख़ुद इसके लिए हुक्म देते हुए फ़रमाते हैं:-

يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا لَقِيتُمْ فِئَةً فَاثْبُتُوا وَاذْكُرُوا اللَّهَ
كَثِيرًا لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ (سورة الانفال پ ١٠ آيت ٤٥)

ऐ ईमान वालो! जब तुम किसी गिरोह के मुक़ाबला पर आओ तो साबित क़दम रहो और अल्लाह को बहुत याद करो ताकि तुम्हें कामियाबी हासिल हो।

(सूरतुल अंफ़ाल प. 10 आयत 74)

बच्चो! जिहाद करने पर अल्लाह तआ़ला जन्नत का वादा फ़रमाते हैं:-

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ
وَالَّذِينَ آوَوْا وَنَصَرُوا أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا لَهُمْ
مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ (سورة الانفال پ ١٠ آيت ٧٤)

और जो लोग मुसलमान हुए और उन्होंने हिजरत की

और अल्लाह की राह में जिहाद करते रहे और जिन लोगों ने उनकी मदद की यह लोग ईमान का पूरा हक़ अदा करने वाले हैं, उनके लिए (आख़िरत में) बड़ी मग़फ़िरत (और जन्नत में) बड़ी रोज़ी है।

(सूरतुल अंफ़ाल प. 10 आयत 74)

बच्चो! जो लोग जिहाद से ज़ी चुराते हैं उनसे अल्लाह पाक नाराज़ होकर फ़रमाते हैं:-

قُلْ اِنْ كَانَ اٰبَاۤؤُكُمْ وَاَبْنَاۤؤُكُمْ وَاِخْوَانُكُمْ وَاَزْوَاجُكُمْ
وَعَشِيْرَتُكُمْ وَاَمْوَالُ نِ اقْتَرَفْتُمُوْهَا وَتِجَارَةٌ
تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسٰكِنُ تَرْضَوْنَهَاۤ اَحَبَّ اِلَيْكُمْ
مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَجِهَادٍ فِىْ سَبِيْلِهٖ فَتَرَبَّصُوْا حَتّٰى
يَاْتِىَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ

(سورة التوبه پ ۱۰ آيت ۲۴)

(ऐ पैग़म्बर) आप कह दीजिए कि अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और बीवियां और तुम्हारे रिश्तेदार और वह माल जो तुमने कमाए हैं वह तिजारत जिसके नुक़सान से तुम डरते हो और वह घर जिनको तुम पसंद करते हो तुम्हें ख़ुदा से ख़ुदा के रसूल और उसकी राह में जिहाद करने से ज़ियादा महबूब हैं तो इंतिज़ार करो कि अल्लाह अपना हुक्म भेज दे अल्लाह नाफ़रमान लोगों को राहे हिदायत नहीं दिखाता।

(सूरतुत तौबा प. 10 आयत 24)

बच्चो! अपने आप को सच्चा मुसलमान बनाओ, तंदुरुस्त रखो, ज़ियादा से ज़ियादा ताक़त हासिल करो और फिर बड़े होकर इन सब चीज़ों को अल्लाह की राह में जिहाद करने पर ख़र्च करो कि यही ज़िन्दगी है

कि दाना ख़ाक में मिल कर गुले गुज़ार होता है

अच्छी-अच्छी बातें

बच्चो! इस्लाम नाम है ज़िन्दगी में हर जगह चलते फिरते, सोते जागते खाते पीते, लेन देन करते हम हर वक़्त ख़्याल रखें कि इसमें अल्लाह तआ़ला का क्या हुक्म है और हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसको किस तरह किया है।

क़ुरआन पाक में इस्लाम के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए अल्लाह तआ़ला ने बहुत से अहकाम दिए हैं, जब तुम ख़ुद क़ुरआन मजीद समझ कर पढ़ोगे तो मालूम हो जाएगा सिर्फ़ चंद अहकाम यहां नक़्ल किए जाते हैं।

وَاَوْفُوْا بِالْعَهْدِ اِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْئُوْلًا

(سورہ بنی اسرائیل پ ۱۵ آیت ۳۴)

और अपना वादा पूरा किया करो, बिला शुब्हा वादा के मुतअ़ल्लिक़ तुम से पूछ होगी।

(सूरतुल बनी इस्राईल प. 15 आयत 34)

बच्चो! हम वादा को कुछ समझते ही नहीं कि यह कोई गुनाह या बुरी बात नहीं, अल्लाह तआ़ला इसके मुतअ़ल्लिक़ कितनी सख़्त ताकीद कर रहे हैं कि वादा पूरा किया करो इसकी पूछ होगी, उम्मीद है कि अब सब बच्चे इसका ख़्याल रखेंगे और आ़ईंदा वादा किसी

से सोच समझ कर करना चाहिए और जब वादा करें तो उसको पूरा करना ज़रूरी है।

बच्चो! नाप तौल पूरी करके देनी चाहिए, कम नाप तौल कर देना बहुत सख़्त गुनाह है, आप हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम के क़िस्से में पढ़ चुके हैं कि उनकी उम्मत इसलिए तबाह कर दी गई कि वह लोग नाप तौल में कमी किया करते थे अल्लाह तआला इसके मुतअल्लिक़ क़ुरआन मजीद में फ़रमाते हैं:-

وَاَوْفُوا الْكَيْلَ اِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ

और जब नाप तौल करो तो पूरा करो और सहीह तराज़ू से तौल कर दिया करो।

और दूसरी जगह कम तौलने वालों के लिए दोज़ख़ की शहादत दी अल्लाह तआला फ़रमाते हैं:-

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِيْنَ الَّذِيْنَ اِذَا اكْتَالُوْا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُوْنَ، وَاِذَا كَالُوْهُمْ اَوْ وَّزَنُوْهُمْ يُخْسِرُوْنَ اَلَا يَظُنُّ اُولٰٓئِكَ اَنَّهُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ لِيَوْمٍ عَظِيْمٍ

(سورة المطففين پ ۳۰ آيت ۱)

ख़राबी है घटाने वालों की वह कि जब नाप लें लोगों से पूरा कर लें और जब नाप दें उनको या तौल दें तो घटा कर दें क्या ख़्याल नहीं रखते वह लोग कि उनको उठना है एक बड़े दिन में।

(सूरतुल मुतफ़्फ़ेफ़ीन प. 30 आयत 1)

बच्चो! दूसरों से हंस कर या मुस्कुरा कर ख़ुश अख़्लाक़ी से

बात करना भी कैसा अच्छा है, सबको अच्छा मालूम होता है ऐसे लोगों की तारीफ़ की जाती है, और अल्लाह तआला उनके सब काम आसानी से बना देते हैं, अल्लाह तआला इसके लिए क़ुरआन मजीद में फ़रमाते हैं:-

وَقُوْلُوْ لِلنَّاسِ حُسْنًا

और हर शख़्स से बात अच्छी तरह किया करो।

बच्चो! जब कोई शरीर शख़्स तुम से ख़्वाह मख़्वाह लड़ने लगे और उलझने लगे तो उससे तुम भी लड़ना शुरु न करो, वर्ना तुम में और उसमें क्या फ़र्क़ रहा, अल्लाह तआला इसके मुतअ़ल्लिक़ क़ुरआन मजीद में फ़रमाते हैं:-

وَاِذَا خَاطَبَهُمُ الْجَاهِلُوْنَ قَالُوا سَلٰمًا

(سورۃ الفرقان پ ۱۹ آیت ۶۳)

और जब तुम से कोई जाहिल अड़ जाए तो उसको सलाम कह कर चले जाओ।

(सूरतुल फ़ुर्क़ान प. 19 आयत 63)

बच्चो! जब तुम से कोई दुश्मनी करे, अदावत करे, तुम्हारे से कोई बुराई करे तो इसका जवाब दुश्मनी और बुराई से मत दो बल्कि उसके साथ सुलूक करो और मुहब्बत करो तो वह तुम्हारा पक्का दोस्त बन जाएगा, अल्लाह तआला इसके मुतअ़ल्लिक़ कलाम मजीद में फ़रमाते हैं:-

اِدْفَعْ بِالَّتِىْ هِىَ اَحْسَنُ فَاِذَا الَّذِىْ بَيْنَكَ وَبَيْنَهٗ عَدَاوَةٌ
كَاَنَّهٗ وَلِىٌّ حَمِيْمٌ (سورہ حٰمٓ سجدہ پ ۲۴ آیت ۳۴)

आप नेक बरताव से बदी को टाल दीजिए फिर यकायक आपमें और जिस शख़्स में अदावत थी ऐसा हो जाएगा जैसे कोई दोस्त होता है।

(सूरह हामीम सज्दा प. 24 आयत 34)

बच्चो! पीठ पीछे किसी की बुराई करना कैसी बुरी बात है इससे बहुत-बहुत ख़राबीयां पैदा होती हैं और दुश्मनी क़ाइम हो जाती है और कोई फ़ाइदा हासिल नहीं होता इसको ग़ीबत कहते हैं, क़ुरआन मजीद में ग़ीबत करने वालों को कहा गया है ऐसा है जैसा अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाया, क्या तुम में से कोई इस बात को पसंद करेगा कि अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाए, सुनो फ़रमायाः-

أَيُحِبُّ أَحَدُكُمْ أَنْ يَأْكُلَ لَحْمَ أَخِيهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوهُ وَاتَّقُوا اللّٰهَ إِنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ رَحِيمٌ (سورة الحجرات پ ٢٦ آيت ١٢)

क्या तुम में से कोई इस बात को पसंद करता है कि अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाए इसको तो तुम नागवार समझते हो अल्लाह से डरते रहो बेशक अल्लाह बड़ा तौबा कबूल करने वाला है।

(सूरतुल हुजरात प. 26 आयत 12)

बच्चो! सलाम करने के मुतअ़ल्लिक़ बड़ी ताकीद आई है, जब हम अपने घरों में जाया करें या किसी से मुलाक़ात किया करें तो अस्सलामु अलैकुम कहना चाहिए, यानी तुम पर अल्लाह की सलामती हो जिस पर अल्लाह की सलामती हो जाए उसको फिर और क्या चाहिए इसके एलावा और किसी तरह सलाम हरगिज़ नहीं करना चाहिए।

अल्लाह तआ़ला क़ुरआन मजीद में फ़रमाते हैं:-

فَإِذَا دَخَلْتُمْ بُيُوتًا فَسَلِّمُوا عَلَىٰ أَنْفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِنْ عِنْدِ اللَّهِ مُبَارَكَةً طَيِّبَةً ۚ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ

(سورة النور پ ١٨ آيت ٦١)

फिर यह भी मालूम कर रखो कि जब तुम अपने घर वालों में जाया करो तो अपने लोगों को सलाम कर लिया करो जो कि दुआ के तौर से ख़ुदा की तरफ़ से मुक़र्रर है बरकत वाली उम्दा चीज़ है। इसी तरह अल्लाह तआ़ला तुमसे अपने अहकाम बयान फ़रमाता है ताकि तुम समझो और अ़मल करो।

(सूरतुन्नूर प. 18 आयत 61)

हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी सलामु अलै-क करने की बहुत ताकीद की है

हराम चीज़ें

बच्चो! अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआन मजीद में उन चीज़ों को हराम क़रार दिया है कभी भूल कर भी हमें न करना चाहिएं, और कोई दूसरा आदमी करता हो तो उसे भी मना करना चाहिए। लो सुनो!

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ وَلَحْمُ الْخِنْزِيرِ وَمَا أُهِلَّ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ وَالْمُنْخَنِقَةُ وَالْمَوْقُوذَةُ وَالْمُتَرَدِّيَةُ وَالنَّطِيحَةُ وَمَا أَكَلَ السَّبُعُ إِلَّا مَا ذَكَّيْتُمْ وَمَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ وَأَنْ تَسْتَقْسِمُوا بِالْأَزْلَامِ ۚ ذَٰلِكُمْ فِسْقٌ (سورة المائده پ ٦ آيت ٣)

तुम पर हराम किए गए हैं मुरदार और ख़ून और सुअर का गोश्त और जो जानवर कि ग़ैरे अल्लाह के लिए नामज़द किया हो और जो दम घुटने से मर जाए और जो किसी ऊंची जगह से गिर कर मर जाए और जो किसी की टक्कर से मर जाए और जिसको कोई दरिंदा खाने लगे लेकिन जिसको ज़िब्ह कर लो और जो जानवर बुतों पर चढ़ाए जाएं और यह कि तक़सीम करो बज़रिए क़ुरआ के तीरों के यह सब गुनाह हैं। (सूरतुल माइदा प. 6 आयत 3)

यानी ये सब चीज़ें जिनका ऊपर ज़िक्र किया है मुसलमानों पर हराम हैं उनके एलावा हराम चीज़ों का बयान हदीस शरीफ़ में भी आया है।

बच्चो! और बातें जो सख़्त गुनाह हैं वह यह हैं:-

وَلَاتَقْتُلُوْا اَوْلَادُكُمْ خَشْيَةَ اِمْلَاقٍ نَحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَ
اِيَاكُمْ اِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ خِطْاءً كَبِيْراً۔ وَلَاتَقْرَبُوا الزِّنَا
اِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةً وَسَاءَ سَبِيْلًا۔ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ
الَّتِیْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ۔ وَمَنْ قُتِلَ مَظْلُوْمًا فَقَدْ
جَعَلْنَا لِوَالِيِّهٖ سُلْطَانًا فَلَايُسْرِفْ فِی الْقَتْلِ اِنَّهٗ
كَانَ مَنْصُوْراً۔ وَلَاتَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْم

(سورہ بنی اسرائیل پ ۱۵، آیت ۳۱)

और अपनी औलाद को नादारी के अंदेशा से क़त्ल मत करो हम उनको भी रिज़्क़ देते हैं और तुमको भी बिला

शुबहा उनका क़त्ल करना बड़ा भारी गुनाह है और ज़िना के पास भी मत फटको बिला शुबहा वह बड़ी बे-हयाई की बात है और बुरा रस्ता है, और जिस शख़्स (के क़त्ल) को अल्लाह तआला ने हराम क़रार दिया है उसको क़त्ल मत करो, अलबत्ता हक़ के साथ और जो शख़्स नाहक़ क़त्ल किया जाए तो हमने उनके वारिस को अख़्तियार कर दिया है तो उसके क़त्ल के बारे में उसे हद से तजावुज़ न करना चाहिए वह शख़्स तरफ़दारी के क़ाबिल है और यतीम के माल के क़रीब मत जाओ।

(सूरह बनी इस्राईल प. 15 आयत 31)

يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْاَنْصَابُ وَالْاَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْا لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ (سورہ مائدہ پ ۷ آیت ۹۰)

ऐ ईमान वालो! यक़ीनन शराब और जुवा, बुत और क़ुरआ के तीर यह सब गंदे और शैतानी काम हैं, तुम उनसे बचते रहो ताकि नजात पाओ।

(सूरह माइदा प. 7 आयत 90)

क़ियामत

बच्चो! क़ियामत उस वक़्त क़ाइम होगी जब दुनिया में कोई अल्लाह-अल्लाह करने वाला न रहेगा, और दुनिया ईमानदारों से ख़ाली हो जाएगी उस वक़्त दुनिया को अल्लाह पाक फ़ना कर देंगे।

सबसे पहले हज़रत इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम सूर फूंकेंगे, जिसकी

आवाज़ आहिस्ता-आहिस्ता इतनी सख़्त और ख़ौफ़नाक हो जाएगी कि कोई जानदार ज़िन्दा न रहेगा, ज़मीन व आसमान टूट जाएंगे, पहाड़ रुई के गालों की तरह उड़ने लगेंगे, सिवाए अल्लाह की ज़ात के सब चीज़ें फ़ना कर दी जाएंगी।

फिर इसके बाद हज़रत इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम दूसरा सूर फूंकेंगे तो मुर्दे ज़िन्दा होकर क़ब्रों से निकल खड़े होंगे और टिड्डियों की तरह परेशान और ग़ोल के ग़ोल महशर के मैदान में जमा होंगे।

وَنُفِخَ فِى الصُّوْرِ فَاِذَا هُمْ مِّنَ الْاَجْدَاثِ اِلٰى رَبِّهِمْ يَنْسِلُوْنَ. قَالُوا يٰوَيْلَنَا مَنْ بَعَثَنَا مِن مَّرْقَدِنَا هٰذَا مَاوَعَدَ الرَّحْمٰنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُوْنَ اِنْ كَانَتْ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَاهُمْ جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ.

(سوره يٰسين پ ۲۳، آيت ۵۱)

और फिर सूर फूंका जाएगा सो वह सब यकायक क़ब्रों से (निकल-निकल कर) अपने रब की तरफ़ जल्दी-जल्दी चलने लगेंगे, कहेंगे कि हाए हमारी कमबख़्ती हमको क़ब्रों से किसने उठा दिया, यह वही (क़ियामत) जिसका हम सबसे रहमान ने वादा किया था और पैग़म्बर सच कहते थे पस वह एक ज़ोर की आवाज़ होगी जिससे यकायक सब जमा होकर हमारे पास हाज़िर कर दिए जाएंगे।

(सूरह यासीन प. 23 आयत 51)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم
إِذَا السَّمَآءُ انْفَطَرَتْ وَإِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ وَإِذَا
الْبِحَارُ فُجِّرَتْ وَإِذَا الْقُبُوْرُ بُعْثِرَتْ عَلِمَتْ نَفْسٌ
مَّاقَدَّمَتْ وَاَخَّرَتْ (سورة الانفطار پ ۳۰ آیت ۱)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

और जब आसमान फट जाएंगे और जब सितारे बिखर जाएंगे और जब समुंद्र चलाए जाएंगे और जब क़ब्र के लोग ज़िन्दा किए जाएंगे हर नफ़्स जान लेगा जो उसने आगे भेजा है और पीछे रखा है।

(सूरह इंफ़ितार प. 30 आयत 1)

दूसरी जगह इरशाद है

يَوْمَ تَكُوْنُ السَّمَآءُ كَالْمُهْلِ وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ
(سورة المعارج پ ۲۹ آیت ۸،۹)

जब आसमान पिघले हुए तांबे की तरह हो जाएगा और जब पहाड़ रुई के गालों की तरह हो जाएंगे।

(सूरतुल मआरिज प. 29 आयत 8, 9)

जहां हर आदमी का हिसाब व किताब होगा, किसी ने ज़र्रा बराबर नेकी की होगी वह उसके सामने आ जाएगी।

فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ
ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ (سورة الزلزال پ ۳۰ آیت ۷،۸)

सो जिसने ज़र्रा भर भलाई की वह देख लेगा, और

जिसने ज़र्रा भर बुराई की वह देख लेगा।

(सूरतुल ज़िलज़िलाल प. 30 आयत 7, 8)

जिस किसी की नेकीयां ज़ियादा होंगी उसका नाम-ए-आमाल दाहिने हाथ में होगा, और जिसकी बुराइंयां ज़ियादा होंगी उसका नामा-ए-आमाल बाएं हाथ में दिया जाएगा।

فَاَمَّا مَنْ اُوْتِیَ کِتَابَهٗ بِیَمِیْنِهٖ فَسَوْفَ یُحَاسَبُ حِسَابًا یَّسِیْرًا وَّیَنْقَلِبُ اِلٰۤی اَهْلِهٖ مَسْرُوْرًا وَ اَمَّا مَنْ اُوْتِیَ کِتَابَهٗ وَرَآءَ ظَهْرِهٖ فَسَوْفَ یَدْعُوْا ثُبُوْرًا وَّیَصْلٰی سَعِیْرًا۔ (سورۃ الانشقاق پ ۳۰ آیت ۷)

जिस शख़्स का नाम-ए-आमाल उसके दाहिने हाथ में मिलेगा सो उससे आसान हिसाब लिया जाएगा और वह अपने मुतअ़ल्लिक़ीन के पास ख़ुश-ख़ुश आएगा, और जिस शख़्स का नाम-ए-अअ़माल उसके बाएं हाथ में उसकी पीठ के पीछे से मिलेगा सो वह मौत को पुकारेगा और जहन्नम में दाख़िल होगा।

(सूरतुल इंशिक़ाक़ प. 30 आयत 7)

जिसका नाम-ए-आमाल दाहिने हाथ में दिया जाएगा वह जन्नत वाला है, और जिसका नाम-ए-आमाल बाएं हाथ में दिया जाएगा वह दोज़ख़ वाला है; और जिसने शिर्क किया होगा उसकी बख़्शिश नहीं होगी वह दोज़ख़ में जाएगा, हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हौज़े कौसर पर अपने नेक उम्मतीयों को उसका पानी पिलाएंगे।

إِنَّا أَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ (سورة الكوثر پ ۳۰ آیت ۱)

हमने तुझ को अता की कौसर

(सूरतुल कौसर प. 30 आयत 1)

हिसाब व किताब जब ख़त्म हो जाएगा तो दोज़ख़ वाले दोज़ख़ में चले जाएंगे जहां वह हमेशा-हमेशा रहेंगे और जन्नत वाले जन्नत में चले जाएंगे जहां वह हमेशा- हमेशा रहेंगे, फिर कभी वहां उन्हें मौत नहीं आएगी।

क़ियामत के मनाज़िर और क़ियामत के हालात के मुतअ़ल्लिक़ क़ुरआने पाक की बहुत आयात हैं-जो तुम खुद समझ कर पढ़ोगे तो मालूम हो जाएगा हमने सिर्फ़ चंद आयतें नक़्ल की हैं।

दोज़ख़

बच्चो! दोज़ख़ का नाम सुनते ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं इसका अज़ाब इतना सख़्त है कि हमारे वहम व ख़्याल में भी नहीं आ सकता, क़ुरआन पाक में बहुत आयात दोज़ख़ के ख़ौफ़नाक अज़ाब को हमें बताती हैं, क्योंकि अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों पर बहुत रहम करने वाला है और नहीं चाहता कि उसके बन्दे इस अज़ाब में पड़े इसलिए क़ुर्आन पाक में दोज़ख़ के अज़ाब को बहुत तफ़सील से बताया है, जब तुम खुद समझ कर पढ़ोगे तो जान लोगे हम सिर्फ़ चंद आयात लिखते हैं जिससे उसके अज़ाब का कुछ मामूली सा अंदाज़ा हो जाएगा वह आग कैसी होगी, अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं:-

يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ وَّنُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرَانِ (سوره رحمٰن پ ۲۷ آیت ۳۵)

तुम दोनों पर (क़ियामत के रोज़) आग का शुअ़ला और धुवां छोड़ा जाएगा फिर तुम इसको हटा न सकोगे।
(सूरह रहमान प. 27 आयत 35)

बच्चो वह आग के शुअ़ले इतने बड़े होंगे जैसे महल या ऊंट।

اِنَّهَا تَرْمِیْ بِشَرَرٍ کَالْقَصْرِ کَاَنَّهٗ جِمٰلَتٌ صُفْرٌ
(سورۃ المرسلٰت پ ۲۸ آیت ۳۲)

वह अंगारे बरसा देगा जैसे बड़े-बड़े महल जैसे काले-काले ऊंट।
(सूरतुल मुरसलात प 28 आयत 32)

बच्चो इस आग में गुनहगार न ज़िन्दा रहेगा न मरेगा बराबर आग में जलता रहेगा, गुनहगार के मुतअल्लिक़ अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं:-

سَاُصْلِیْهِ سَقَرَ ه وَمَا اَدْرٰكَ مَا سَقَرُ ه لَا تُبْقِیْ وَلَا تَذَرُ لَوَّاحَةٌ لِّلْبَشَرِ (سورۃ المدثر پ ۲۹ آیت ۲۶)

अब इसको डालूंगा आग में और तू क्या जाने कैसी है वह आग न बाक़ी रखे और न छोड़।
(सूरतुल मुद्दस्सिर प. 29 आयत 26)

यानी जिस तरह लोहा गर्म होकर सुर्ख़ हो जाता है उसी तरह बदन आग से सुर्ख़ हो जाएगा, अल्लाह बचाए हम सबको। बच्चो! उन लोगों को खाने को क्या मिलेगा वह भी सुन लो!

لَاٰکِلُوْنَ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ زَقُّوْمٍ فَمَالِـُٔوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ فَشٰرِبُوْنَ عَلَیْهِ مِنَ الْحَمِیْمِ فَشٰرِبُوْنَ
(سورۃ الواقعہ پ ۲۷ آیت ۵۲)

दरख़्त ज़क़्क़ूम से खाना होगा, फिर इससे पेट भरना होगा फिर इसको खौलता हुआ पानी पीना होगा। फिर पीना भी प्यासे ऊंटों का सा।

(सूरतुल वाक़िआ प. 27 आयत 52)

बच्चो! दोज़ख़ में पीने के लिए पीप भी मिलेगा।

مِنْ وَّرَآئِهٖ جَهَنَّمُ وَيُسْقٰى مِنْ مَّآءٍ صَدِيْدٍ يَّتَجَرَّعُهٗ وَلَا يَكَادُ يُسِيْغُهٗ وَيَأْتِيْهِ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّمَا هُوَ بِمَيِّتٍ وَمِنْ وَّرَآئِهٖ عَذَابٌ غَلِيْظٌ

(سورة ابراهيم پ ۱۳ آيت ۱۶)

उसके आगे दोज़ख़ है और उसको ऐसा पानी पीने को दिया जाएगा जो कि पीप लहू के मुशाबा होगा जिसको घूंट-घूंट करके पिएगा और गले से आसानी के साथ उतारने की कोई सूरत न होगी और हर तरफ़ से उस पर मौत की आमद होगी और वह किसी तरह मरेगा नहीं और उसको बहुत सख़्त अज़ाब का सामना होगा।

(सूरह इब्राहीम प. 13 आयत 16)

बच्चो! खाने का तुमने सुन लिया, अब पहनने का सुनो कि काफ़िरों को दोज़ख़ में पहनने को क्या मिलेगा, अल्लाह तआला फ़रमाते हैं:-

فَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّنْ نَّارٍ يُّصَبُّ مِنْ فَوْقِ رُءُوْسِهِمُ الْحَمِيْمُ، يُصْهَرُ بِهٖ مَا فِيْ بُطُوْنِهِمْ وَالْجُلُوْدُ وَلَهُمْ مَّقَامِعُ مِنْ حَدِيْدٍ كُلَّمَا اَرَادُوْا اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا مِنْ غَمٍّ اُعِيْدُوْا فِيْهَا وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ (سوره حج پ ۱۷ آيت ۲۲)

सो जो काफ़िर लोग थे उनके पहनने के लिए क़ियामत में आग के कपड़े क़तअ़ किए जाएंगे और उनके सर के ऊपर से तेज़ गर्म पानी छोड़ा जाएगा और उससे उनके पेट की चीज़ें और खालें उनकी सब गल जाएंगी और उनके मारने के लिए लोहे के गुरुज़ होंगे वह लोग जब घुटे-घुटे उससे बाहर निकलना चाहेंगे तो फिर उसमें ढकेल दिए जाएंगे और कहा जाएगा जलने का अज़ाब हमेशा के लिए चखते रहो।

(सूरह हज प. 17 आयत 22)

बच्चो! बहुत से गुनाह ऐसे होंगे जिनके अज़ाब इलाहिदा-इलाहिदा दिए जाएंगे, जो लोग दूसरों के माल नाहक़ खा जाते हैं और जो लोग रुपया और सोना जमा करते जाते हैं और उसकी ज़कात नहीं देते और अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते उनके मुतअ़ल्लिक़ अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं:-

وَالَّذِينَ يَكْنِزُونَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُونَهَا فِيْ سَبِيلِ اللّٰهِ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ. يَوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوبُهُمْ وَظُهُورُهُمْ هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِأَنْفُسِكُمْ فَذُوقُوا مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُونَ. (سورة التوبه پ ١٠ آيت ٣٤)

और जो लोग गाड़ रखते हैं सोना और रुपया और ख़र्च नहीं करते अल्लाह की राह में सो उनको ख़ुशख़बरी सुनाईए दुख वाली मार की, जिस दिन आग दहका देंगे

उस पर दोज़ख़ की फिर दागेंगे उससे उनके माथे और पीठें, यह है जो तुम गाड़ते थे अपने वास्ते अब चखो मज़ा अपने गाड़ने का।

(सूरतुत्तौबा प. 10 आयत 24)

बच्चो! जब जन्नत वाले जन्नत में और दोज़ख़ वाले दोज़ख़ में चले जाएंगे उस वक़्त दोज़ख़ वाले अफ़सोस करेंगे कि हाए हमने दुनिया में अच्छे काम क्यों न किए, अल्लाह तआ़ला पर ईमान क्यों नहीं लाए, लेकिन उस वक़्त अफ़सोस करने से कुछ नहीं होपा, अल्लाह तआ़ला उनके मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाते हैं:-

اِذَا اُلْقُوْا فِيْهَا سَمِعُوْا لَهَا شَهِيْقًا وَّهِيَ تَفُوْرُ تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ الْغَيْظِ كُلَّمَا اُلْقِيَ فِيْهَا فَوْجٌ سَاَلَهُمْ خَزَنَتُهَا اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَذِيْرٌ قَالُوْا بَلٰى قَدْ جَآءَنَا نَذِيْرٌ فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ كَبِيْرٍ وَقَالُوْا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ اَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِيْٓ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ (سورة الملک پ ۲۹ آیت ۷)

जब यह लोग उसमें डाले जाएंगे तो उसकी बड़ी ज़ोर की आवाज़ सुनेंगे औ वह इस तरह जोश मारती होगी जैसे मालूम होता है कि गुस्सा के मारे फट पड़ेगी जब इसमें कोई गिरोह डाला जावेगा तो उसके मुहाफ़िज़ उन लोगों से पूछेंगे कि क्या तुम्हारे पास कोई डराने वाला पैग़म्बर नहीं आया था, वह काफ़िर कहेंगे वाक़ई हमारे पास डराने वाला पैग़म्बर आया था लेकिन हमने उसको

झुठला दिया और कह दिया अल्लाह ने कुछ नाज़िल नहीं किया तुम बड़ी ग़लती में पड़े हो और काफ़िर यह भी कहेंगे कि हम अगर सुनते या समझते तो हम अहले दोज़ख़ में शामिल न होते।

(सूरतुल मुल्क प. 29 आयत 7)

बच्चो! जब काफ़िर पर दोज़ख़ के अज़ाब पड़ेंगे तो चिल्ला उठेंगे।

وَيَقُوْلُ الْكَافِرُ يٰلَيْتَنِىْ كُنْتُ تُرَابًا

(سورہ نبا، پ ۳۰ آیت ۴۰)

और काफ़िर हसरत से कहेगा काश मैं मिट्टी हो जाता।

(सूरह नबा प. 30 आयत 40)

बच्चो! अल्लाह तआ़ला हमें सबको दोज़ख़ के अज़ाब से बचाए, आमीन। वह दिन आने से पहले कि कहीं हम मिट्टी होते, दुनिया में अच्छे-अच्छे काम करें, अल्लाह और उसके रसूल की इताअ़त करें तो इंशा अल्लाह दोज़ख़ के अज़ाब से बच जाएंगे।

जन्नत

बच्चो! कैसा अच्छा और प्यारा नाम है, नाम सुनते ही जी ख़ुश हो जाता है जन्नत में कैसे-कैसे बाग़ और नहरें होंगी, कैसे-कैसे उम्दा महल मोतियों के होंगे कि हम इसका तसव्वुर भी नहीं कर सकते, जन्नत में हमारी हर ख़्वाहिश पूरी की जाएगी, जो हम चाहेंगे फ़ौरन आ मौजूद होगा जो हम चाहेंगे खाएंगे, जहां चाहेंगे जाएंगे अल्लाह तआ़ला जन्नत के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाते हैं:-

جَنّٰتُ عَدْنٍ يَدْخُلُوْنَهَا تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ لَهُمْ فِيْهَا مَايَشَآءُ وْنَ كَذٰلِكَ يَجْزِى اللّٰهُ الْمُتَّقِيْنَ

(سورة النحل پ ۱۴ آیت ۳۱)

वह घर हमेशा रहने के बाग़ हैं, जिनमें यह दाख़िल होंगे इन बाग़ों के नीचे नहरें जारी होंगी जिस चीज़ को उनका जी चाहेंगा वहां उनको मिलगी इस तरह का बदला अल्लाह तआ़ला सब शिर्क से बचने वालों को देगा।

(सूरतुन्नहल प 14 आयत 31)

बच्चो! इस बाग़ों वाली जन्नत में पहनने के लिए कपड़े और लिबास कैसे होंगे वह भी सुनो!

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اِنَّا لَانُضِيْعُ اَجْرَ مَنْ اَحْسَنَ عَمَلًا اُولٰٓئِكَ لَهُمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّيَلْبَسُوْنَ ثِيَابًا خُضْرًا مِّنْ سُنْدُسٍ وَّاِسْتَبْرَقٍ مُّتَّكِئِيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ نِعْمَ الثَّوَابُ وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا

(سورة الكهف پ ۱۵ آیت ۳۰)

बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए तो हम ऐसों का अज्र ज़ाया न करेंगे जो अच्छी तरह काम को करे ऐसे लोगों के लिए हमेशा रहने के लिए बाग़ हैं उनके नीचे नहरें बहती होंगी,. उनको वहां सोने के कंगन पहनाए जाएंगे और सब्ज़ रंग के कपड़े बारीक और दबीज़ रेशम के पहनेंगे और वहां मुसहरियों

पर तकिए लगाए बैठे होंगे, क्या ही अच्छा सिला है और जन्नत क्या ही अच्छी जगह है।

(सूरतुल कहफ़ प. 15 आयत 30)

बच्चो! वहां ख़ादिम कैसे होंगे जन्नत वालों के लिए:-

يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُخَلَّدُوْنَ

(سورہ الواقعہ پ ۲۷ آیت ۱۷)

उनके पास ऐसे लड़के जो हमेशा लड़के ही रहेंगे।

(सूरतुल वाक़िआ प 28 आयत 17)

حُوْرٌ مَقْصُوْرَاتٌ فِى الْخِيَامِ

(سورۃ الرحمٰن پ ۲۷ آیت ۷۲)

हूरें होंगी ख़ेमों में रहने वाली

(सूरतुल रहमान प. 28 आयत 72)

बच्चो! वहां खाने पीने के लिए क्या-क्या मिलेगा।

दुनिया में शराब ऐसी होती है जिसमें नशा होता है, इंसान अपने होश में नहीं रहता, बेहूदा बातें बकने लगता है और उसको अच्छे बुरे की तमीज़ नहीं रहती, जन्नत में अल्लाह तआला ऐसी पाक शराब देंगे जिसमें यह सब बातें नहीं होंगी।

وَكَاْسٍ مِنْ مَّعِيْنٍ لَايُصَدَّعُوْنَ عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُوْنَ

(سورۃ الواقعہ پ ۲۷، آیت ۱۹)

और ऐसा जाम शराब जो बहती हुई शराब से भरा जाएगा न उससे उनको दर्दे सर होगा और न इससे अक़्ल में फ़तूर आएगा।

(सूरतुल वाक़िआ प. 27 आयत 19)

और खाने के लिए:-

وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُوْنَ۔ وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ
(سورۃ الواقعہ پ ۲۷ آیت ۲۰)

और मेवा जोन सा चुन लेवें और गोश्त उड़ते जानवरों का जिस क़िस्म का जी चाहे।

(सूरहतुल वाक़िआ 27, आयत 20)

बच्चो! अच्छा खाने पीने और रहने के साथ हर इंसान की ख़्वाहिश होती है कि उसके मां-बाप, भाई-बहन और रिश्तेदार भी क़रीब हों, जन्नत में अल्लाह तआला उन सबसे जो नेक होंगे मिलवा देगा, अल्लाह तआला फ़रमाते हैं:-

جَنّٰتُ عَدْنٍ يَدْخُلُوْنَهَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ
وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ (سورۃ الرعد پ ۱۳ آیت ۲۳)

बाग़ में रहने के दाख़िल होंगे उनमें और जो नेक हुए उनके बाप दादाओं में और बीवीयों में और औलाद में।

(सूरह रअ़द, प. 13 आयत 23)

बच्चो इसके एलावा उनके पास फ़रिश्ते आकर सलाम किया करेंगे

وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَدْخُلُوْنَ عَلَيْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ سَلٰمٌ
عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ
(سورۃ الرعد پ ۱۳ آیت ۲۳)

और फ़रिश्ते आते हैं उनके पास हर दरवाज़े से कहते

हुए सलामती हो तुम पर बदले इसके कि तुम साबित रहे हो ख़ूब मिला पिछला घर।

(सूरह रअ़द प. 13 आयत 23)

बच्चो! एक जगह रहते-रहते इंसान घबराने लगता है, जन्नत में अल्लाह तआ़ला ऐसी दिलचस्पीयां रखेंगे कि वहां जी नहीं घबराएगा और जगह बदलनी नहीं चाहेगा।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنّٰتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا خٰلِدِيْنَ فِيْهَا لَا يَبْغُوْنَ عَنْهَا حِوَلًا (سورة الكهف، پ ١٦ آيت ١٠٧)

जो लोग ईमान लाए और अ़मल किए भले काम उनको है ठंडी छाओं के बाग़, रहा करें उनमें, न चाहें वहां से जगह बदलनी। (सूरह कहफ़, प. 16, आयत 107)

इंसान यह भी चाहता है कि जहां रहे आपस में मुहब्बत प्यार से रहे किसी से लड़ाई झगड़ा न हो किसी से बुराई-भलाई के क़िस्से न हों और यह भी चाहता है कि जो अच्छी जगह उसको मिल गई है वहां से निकाला न जाऊं।

اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ اُدْخُلُوْهَا بِسَلٰمٍ اٰمِنِيْنَ وَنَزَعْنَا مَا فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ اِخْوَانًا عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ (سورة الحجر پ ١٤ آيت ٤٥)

जो परहेज़गार हैं बाग़ों में हैं और चश्मों में, जाओ इसमें सलामती से ख़ातिर जमा से और निकाल डाली हमने जो उनके दिलों में थी तंगी भाई हो गए तख़्तों पर बैठे आमने-सामने। (सूरतुल हजर प 14 आयत 45)

दुनिया में जो आपस में अगर किसी से लड़ाई हो गई थी तो

जन्नत में अल्लाह तआ़ला उसको भी दूर कर देंगे, और आगे फ़रमाते हैं:-

لَا يَمَسُّهُمْ فِيهَا نَصَبٌ وَّمَا هُمْ مِّنْهَا بِمُخْرَجِيْنَ
(سورۃ الحجر پ ۱۴ آیت ۴۸)

न पहुंचेगी उनको वहां कोई तक्लीफ़ और न उनको वहां से कोई निकालेगा।

(सूरतुल हजर प. 14, आयत 48)

बच्चो! अब तुमने दुनिया पैदा होने से लेकर मौत तक और मौत के बाद आने वाले हालात सब सुन लिए बुरे लोगों की बुरी बातें और उसके बुरे अंजाम, अच्छे लोगों की अच्छी बातें और उसके अच्छे अंजाम, क़ियामत, दोज़ख़ जन्नत हमारे सामने सब आ चुके अब हमें अख़्तियार है कि हम अच्छे काम जो ख़ुदा और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बताए हैं करके जन्नत वाले बन जाएं, या बुरे काम करके और शैतान को ख़ुश करके दोज़ख़ वाले बन जाएं।

दुआ कीजिए कि अल्लाह तआ़ला हम सब को जन्नत वाला बनाए। رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ وَتُبْ عَلَيْنَا إِنَّكَ أَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ

آمین، آمین آمین

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ.